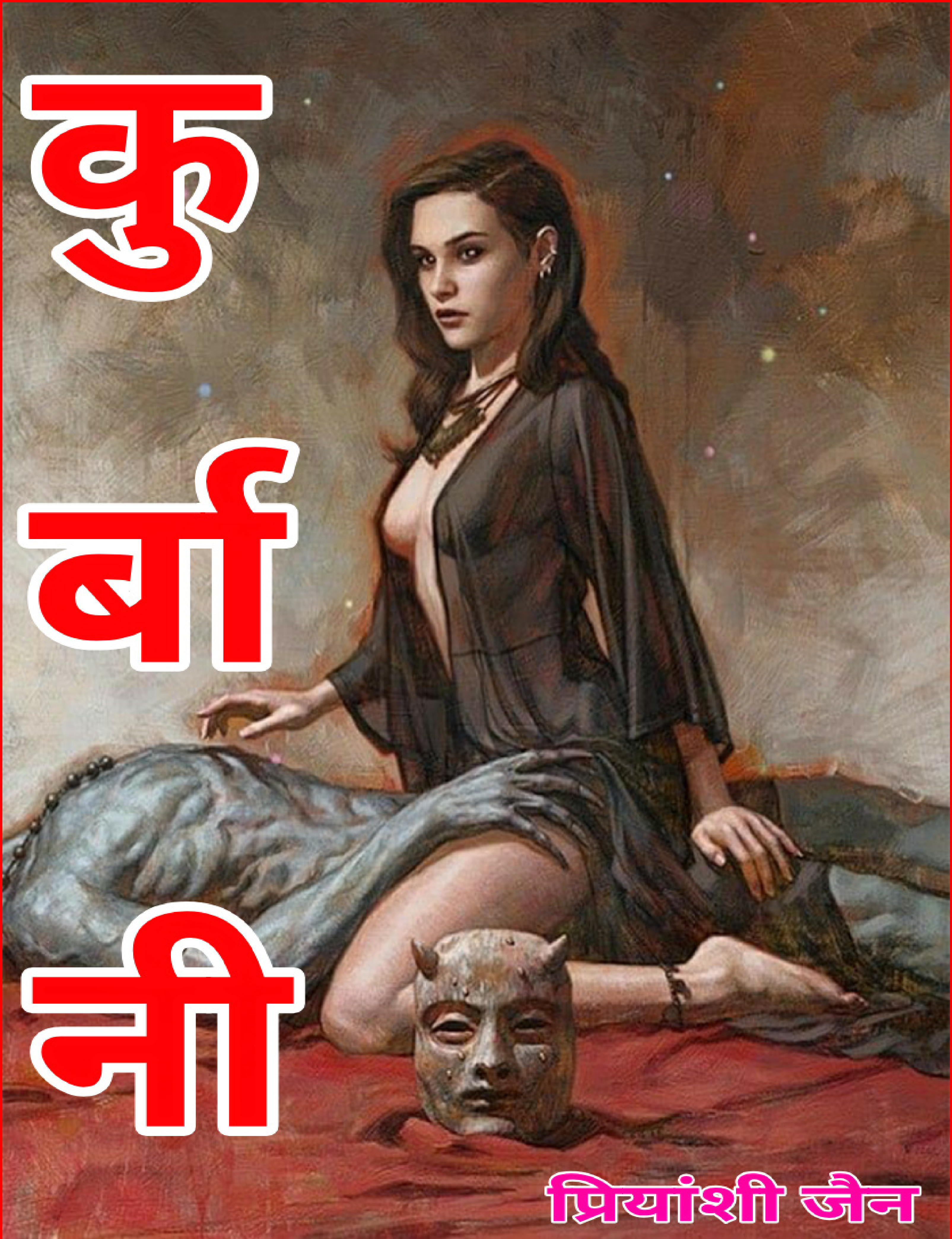
कुर्बानी
प्रियांशी जैन

# १

दूर दूर तक जहाँ तक नज़र जाए, बस रेत ही रेत थी. गर्मी का समय था, और लू के थपेड़े इस रेगिस्तान की रेत को इधर उधर उड़ा रहे थे. इतनी गर्मी में, इस जगह पर रहना मुमकिन नही था. सूरज की किरने किसी को भी दो पल में झुलसा सकती थी. उपर से मूह खोलो तो अंदर सिर्फ़ रेत ही रेत जाएगी. देखा जाए तो ऐसी जगह से किसी का कोई वास्ता नहीं होना चाहिए और ऐसी जगह सिर्फ़ सुनसान ही रहनी चाहिए. लेकिन तभी एक हेलिकॉप्टर वहाँ उतरा. उसमें से साइंटिस्ट चंद्रशेखर निकला जो अपनी सालों की मेहनत से तैयार किए गये एक रिसर्च को आज इंप्लिमेंट करने जा रहा था. क्या यह रिसर्च सक्सेसफुल होगी? यही सोच सोच कर उसकी रातों की नींदे हराम हो रही थी. सर से पावं तक ढका चंद्रशेखर हेलिकॉप्टर के पंखे रुक जाने तक अंदर ही इंतेज़ार करता रहा. जब वापस माहौल लू की आवाज़ों से भर गया तो वो नीचे उतरा और सामने एक टीले के पास गया. पास पहुँचते ही टीले में से एक दरवाज़ा खुला और चंद्रशेखर अंदर चला गया.

अंदर का माहौल बाहर से एकदम उल्टा था. अंडरग्राउंड में एक छोटा सा गांव बसा हुआ था. करीब ५० साइंटिस्ट्स होंगे. कुछ कंप्यूटर पे काम कर रहे थे और कुछ टेंशन में इधर उधर घूम रहे थे. चंद्रशेखर के अंदर घुसते ही माहौल में थोड़ा जोश आ गया. सबकी नज़रें चंद्रशेखर पर गढ़ गयीं और सब खड़े हो गये जैसे मानो हिटलर आया हो.

"एवेरिबडी टू दा कान्फरेन्स रूम." चंद्रशेखर ने चलते चलते बोला तो सब कान्फरेन्स रूम में चले गये. पहले से ही कुछ लोग वहाँ इंतेज़ार कर रहे थे. कुल मिला के ७५ लोग थे. चंद्रशेखर के घुसते ही कान्फरेन्स रूम में सन्नाटा छा गया. सब लोगों ने अपनी अपनी कुर्सियाँ संभाली और चंद्रशेखर चढ़ गया पोडियम पे.

"सब लोग जो यहाँ आज इकट्ठा हुए हैं, मैं उनको तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ. आज का दिन इस देश के लिए ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक इंपॉर्टेंट दिन है. जितने लोग आज यहाँ इकठ्ठा हुए हैं, वो आज हिस्टरी बनते हुए देखेंगे" सारा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा. जब तालियाँ थमी, तो चंद्रशेखर आगे शुरू हुआ,"जैसा कि आप सब जानते हैं, हम लोग कई सालों से दूसरे ग्रहों पे जीवन खोज रहे हैं. ब्रह्मांड इतना बड़ा है कि हमे यकीन है कि ऐसे हज़ारों तारे होंगे जहाँ पे पृथ्वी जैसा वातावरण होगा और जीवन पनप रहा होगा. हम उनसे काँटॅक्ट करने की कब से कोशिश कर रहे थे. हमे पता था कि

कभी ना कभी तो काँटॅक्ट होगा, लेकिन कब होगा, यह किसी को पता नहीं था. ८ साल पहले हमारा काँटॅक्ट हुआ और जो इन्फर्मेशन हमे मिली, वो सच में हिलाने वाली थी"

"हम स्पेस में लाखों सिग्नल्स छोड़ते रहते हैं, इस आस में कि कभी कोई उन सिग्नल्स को रिसीव करेगा. एक दिन हमारे रिसीवर ने भी ऐसा एक सिग्नल पक्कड़ लिया. उस सिग्नल को डिकोड करने में हमे बहुत समय लगा. काफ़ी मेहनत के बाद हम ने जाना कि वो सिग्नल में किसी दुनिया के प्राणियों की डीएनए इन्फर्मेशन है. हम सब बहुत एक्साइट हो गये थे इस बात से. पता नहीं क्यूँ हमने ठाना कि हम धरती पे वैसे जीव बनाने की कोशिश करें ताकि उन लोगों के बारे में और जान सके. हम ने वो डीएनए इन्फर्मेशन को हुमन डीएनए के साथ कंबाइन करने की बहुत कोशिश करी जो कई सालों तक चलती रही लेकिन डीएनए कंबाइन ही नही हो पा रहे थे. जब हमारा सब्र का बाँध टूटने ही वाला था तो हमे कामयाबी हाथ लगी. हमारी साइंटिस्ट टीम ने ४ काँबिनेशन निकाल लिए जिनसे एक हुमन और उस एलीयन डीएनए के काँबिनेशन का जीव पैदा हो सकता है." फिर तालियों की गड़गड़ाहट से सारा हॉल गूँज उठा "क्यूंकी ज़्यादातर डीएनए ह्यूमन्स का है और बहुत थोड़ा सा मॉडिफाइड है, हमे लगता है कि यह जीव देखने में आदमियों जैसे ही होंगे. और इसी लिए आज हम सब यहाँ इकट्ठे हुए हैं. ४ कपल्स ने एक्सपेरिमेंट में हिस्सा लेने के लिए हामी भर दी है. और वो भी आज यहाँ मौजूद हैं"

फिर से तालियों की गड़गड़ाहट के साथ हॉल गूँज उठा और ४ कपल्स खड़े हो गये अपने हिस्से की लाइमलाइट लेने को. "हम इन चारों कपल्स को एक एक टेस्ट ट्यूब बेबी देने जा रहे हैं. यह चारों कपल्स दुनिया के ४ अलग अलग कोनो में अपने बच्चों को पालेंगे. प्लान सिंपल है - हमे देखना है कि क्या हम एक इंप्रूव्ड स्पेसिएस को बना सकते हैं. अगर हां, तो क्या वो इंप्रूव्ड स्पीशीस हमारे बीच रह सकते हैं. अगर यह एक्सपेरिमेंट सफल हो गया, तो यह धरती रहने के लिए और भी अच्छी बन जाएगी, और इसके वासी और भी समझदार और कारगर बन जाएँगे" इस बार जो अपलॉज़ मिला वो तो छत उखाड़ देने वाला था. सब लोग अपनी जगह से खड़े हो कर बस तालियाँ पीट रहे थे. उनके शांत होने के बाद चंद्रशेखर फिर से बोला "जैसा कि आप समझ सकते हैं, यह एक्सपेरिमेंट बहुत ख़तरनाक है और इसमें कुछ भी हो सकता है. उपर से अभी जनता इस के लिए तैयार नही है. इसलिए हम ने यह डिसाइड किया है कि यह बात सिर्फ़ हम लोगों में ही रहेगी. हम इन बच्चों को मॉनिटर करते रहेंगे और जैसे ही हमे लगेगा कि वक़्त ठीक है और एक्सपेरिमेंट सफल हुआ है, हम इस बात का खुलासा दुनिया के सामने करेंगे. तब तक यह बात हमारे बीच ही रहेगी. मैं आशा करता हूँ कि आप इस बात की कद्र करेंगे. दुनिया के सबसे इंपॉर्टेंट इवेंट का पार्ट होने के लिए फिर से आपका शुक्रिया. अब मैं निकलता हूँ." कहते हुए

चंद्रशेखर पोडियम से उतरा और तालियों की गड़गड़ाहट के बीच सीधा अपने हेलिकॉप्टर की ओर चल दिया.

वापस जाते हुए उसको अपने और अपनी टीम पर बहुत ही गर्व हो रहा था. सब ने मिल कर साइन्स को नयी दिशा दी है और एक नयी हद बनाई है. अब बस उनका एक्सपेरिमेंट सफल हो जाए, इतनी ही उसकी दुआ थी. रह रह के उसके मन में यह ख़याल आता था कि क्या वो भगवान बनने की कोशिश कर रहा है जो एवोल्यूशन के अगेन्स्ट जा रहा है, पर वो अपने मन को यह कह के संभाल लेता कि अगर यह एक्सपेरिमेंट सक्सेसफुल हो गया, तो दुनिया ही अच्छी होगी, उसका अपना तो कोई मतलब छुपा नहीं है इसमें. हां, वो इससे मिलने वाली शोहरत का भूखा ज़रूर था, पर भगवान कहलाना उसे बिल्कुल मंज़ूर ना था.

इस कहानी को समजने के लिए कहानी के पात्र समझना जरूरी है ! कहानी के पात्र कुछ इस प्रकार है

***चंद्रशेखर*** - एक साइंटिस्ट. बहुत ही आंबिशियस. अपनी जॉब के चक्कर में अभी तक शादी नही की. इसका मान-ना है कि दुनिया में आए हो तो कुछ ऐसा काम करो कि मरने के बाद भी लोग तुम्हें याद रखें. कहाँ तक जा सकता है वो अपनी सालों की मेहनत पे पानी फिरता देख?? क्या वो अपनी सालों की मेहनत सॅक्रिफाइस कर देगा किसी बड़ी डिस्कवरी के लिए या धीरे धीरे उसके दिल में जगह बना चुकी अरुणा उसको एक काम करती हुई मशीन से इंसान बनाने में सफल हो पाएगी ????

***विवेक*** - चंद्रशेखर द्वारा बनाया गया पहला अजूबा. दोस्तों पे जान छिड़कने वाला और दिल फेंक. ज़िंदगी में कुछ बड़ा किया नही है और ना ही करने की उम्मीद करता है. उसको पता है कि उसको अपना जीवन अपने पापा का बिजनेस एक्सपँड करने में ही लगाना है. इस काम को शुरू करने में जितनी देर हो सके, वो करना चाहता है, जिसके लिए वो पढ़ाई करने का सहारा ले रहा है. पढ़ाई के लिए टोरोंटो जाने के बाद उसकी ज़िंदगी एकदम बदल गयी. क्या वो अपने दोस्तों और चाहने वालों को बचाने के लिए रेस्पॉन्सिबिलिटीस ले पाएगा? किस हद तक जा सकता है वो दिया के लिए, जिससे वो मन ही मन प्यार करने लगा है??

***दिया*** - चंद्रशेखर द्वारा बनाई गयी अजूबा नंबर २. सिन्सियर और लफडों से दूर रहने वाली. उसका मान-ना है कि एक दिन उसके सपनों का राजकुमार आएगा जो उसको बहुत प्यार करेगा. प्यार में धोखा खाने और एक हादसे के बाद वो वापस अपने देश चली गयी. उसकी मुलाक़ात विवेक से हुई जो उसको अच्छा लगने लगा. क्या वो अपने पिछले सारे बुरे सपने भुला पाएगी?? क्या होगा उसका जब उसको पता चलेगा कि वो एक एक्सपेरिमेंट है??

***पूजा*** - सहवासी, कॉन्फिडेंट, सेल्फिश. बचपन में ही माँ-बाप का साया छिन जाने के बाद, चंद्रशेखर द्वारा बनाए इस तीसरे अजूबे ने, अपनी ज़िंदगी आगे बढ़ाने के लिए क्राइम का सहारा लिया. उससे पता है कि वो बहुत पॉवरफुल है और मर्दों को अपनी उंगलियों पे नचा सकती है. शायद इस धरती पे बसने वाली वो सबसे ताक़तवर लड़की है. क्या वो समय आने पर और लोगों के साथ ग्रूप बना के लड़ पाएगी?? क्या वो यह क्राइम का रास्ता छोड़ पाएगी??

***प्रतिक*** - चंद्रशेखर द्वारा बनाया गया अजूबा नंबर ४. हर माँ बाप को लगता है कि उनका बेटा प्रतिक जैसा ही होना चाहिए - कभी कोई उल्टा काम ना करने वाला और हर चीज़ उनके ढंग से करने वाला. वो कभी किसी को उल्टा नहीं बोलता और थोड़ा रिज़र्व्ड है. उसका एकलौता शौक है उसका सहवास अडिक्ट होना. लड़कियाँ कपड़े की तरह बदलता है और घरवालों से दूर इसकी अलग ही ज़िंदगी होती है. क्या प्रतिक कभी प्यार का महत्व समझ पाएगा?? क्या होगा जब उसको अपने बारे में ना सोच कर बाकी लोगों की ज़िंदगी बचाने का मौका मिलेगा?

***अरुणा*** - चंद्रशेखर की कोलीग. वो उससे इतना प्यार क्यूँ करती है, शायद इसको भी नही पता. इसे उम्मीद है कि हर वक़्त चंद्रशेखर के आस पास रहने से, वो उसके अंदर परिवर्तन ला सकेगी और उसको यकीन दिला सकेगी कि काम ही सब कुछ नही है और अपनी ज़िंदगी जीने के लिए वो अभी भी लेट नही हुआ है. क्या यह संभव हो पाएगा??

# २

***बिस* साल बाद *:***

## ●● विवेक ●●

"वाह यार मज़ा आ गया. क्या बटर चिकन बनाया है छोटू ने. पेट ठूंस गया पर नीयत नही भरी. ओये छोटू !!बिल ले आ रे." एक लंबी सी डकार मारने के बाद विवेक ने कहा. "अफ़ीम मिलाते हो क्या बटर चिकेन में यार, रुकने का दिल ही नही करता. बस खाए जाओ" इस बार अपने पिछवाड़े से डकार मारते हुए विवेक बोला. छोटू बिल ले कर आ गया था "ले यह १० रुपये की टिप. ऐश करना. मेरी तरफ से" कहकर वो उठा और सिगरेट पीने को चल दिया.

"यार विवेक एक सिगरेट दे यार" दिलजीत विवेक से बोला

"ले साले. मर जा फूँक फूँक के. कभी अपने पैसे की भी खरीद लिया कर. तुझे देखना लंग कॅन्सर होगा". दिलजीत विवेक का सबसे पुराना दोस्त था. स्कूल से लेकर कॉलेज तक दोनो साथ रहे और बहुत ही गहरी दोस्ती हो गयी दोनो में. दोनो का एक दूसरे के घर आना जाना लगा रहता. दोनो के फादर्स भी साथ ही काम करते थे और मदर्स साथ में गॉसिप. दोनो की पसंद एक जैसी थी - सेम सुट्टा, सेम दारू, सेम कपड़े, यहाँ तक दोनो ने कई बार सेम लड़की भी बजाई थी.

"अब सिगरेट दे रहा है या लानत. नही पीनी मुझे. रख अपने पास. आज मेरी तरफ से एक घुसेड लियो अपने पीछे" दिलजीत भी बोला और दोनो पागलों की तरह हँसने लग गये."कॉलेज जाना है क्या?"

"अबे पढ़ लिख के किस का भला हुआ है? साला निकलवा लेंगे एग्ज़ॅम से पहले पेपर, ले आएँगे अच्छे मार्क्स."

"अबे मल्होत्रा का पीरियड स्टार्ट होने वाला है १५ मिनिट में. एक पीरियड को तो चल ही लेते हैं"

"हां मल्होत्रा का पीरियड है तो चलना पड़ेगा ही. दिन भर उससे देखते नहीं तो यार अजीब सा लगता है". दोनो अपनी-अपनी बुलेट पे सवार हुए और चल दिए कॉलेज की तरफ.

मल्होत्रा जिसके बारे में यह ऐसे बात कर रहे थे इनकी अकाउंट्स टीचर थी. उमर ३८ की थी, लेकिन कहीं से भी २५ से एक साल उपर की नही लगती थी. काले घने बाल जो उसने स्टाइल में कटवा रखे थे उसके कंधों तक आते थे. जब चलती थी तो हर कोई सास रोक कर बस उसे ही देखता रहता. रह रह के उसके बालों की एक लट उसके चेहरे पर आती तो ऐसा लगता मानो बदल से चाँद रूपी चेहरा ढँक रहा हो. जिस किसी की तरफ वो अपनी आँखें दौड़ाती, वो वहीं घायल हो जाता. उसकी हरी हरी बिल्ली जैसी आँखें उसकी खूबसूरती और बढ़ाती. वो खूबसूरत थी और इस बात को जानती थी. इसलिए हमेशा लो कट स्लीवलेस ब्लाउज  ही पहनती साड़ी के साथ कॉलेज के लिए. स्टूडेंट्स क्या, टीचर्स भी पूरा वक़्त उसपे लाइन मारते थे. लेकिन वो किसी के हाथ ना आने वाली थी. उसको सबको तडपा के ही मज़ा आता था. विवेक और दिलजीत भी उसके दीवानों की लाइन में थे. यह एकलौती क्लास थी जिसमें वो आगे बैठ ते थे.

"यह पीछे कौन सोया हुआ है" मल्होत्रा ने आते ही पूछा

"मेडम बलबीर है" किसी ने बोला

"उठाओ उसे. सोना है तो बाहर जा के सोए. क्लास में कोई सोने आता है भला"

"मेडम दफ़ा करो ना, सोने दो बेचारे को"

"शट अप आंड डू ऐज आइ आम सेयिंग. जस्ट वेक हिम अप"

"अर्रे मेडम थोड़ा हिन्दी में बोल दो. आइ अंडरस्टँड इंग्लीश लँग्वेज नोट"

"उठाओ उसको तुम"

"अर्रे मेडम मैं कह रहा हूँ ना सोने दो बेचारे को. कल रात उसके बाप ने दारू पी के खूब बवाल मचाया है घर में, यहाँ नही सोएगा तो और कहाँ सोएगा? कितनी निर्दयी हो आप" जब यह आखरी शब्द ख़तम हुए तो सारी क्लास "ऊऊऊऊ" करने लग गयी ज़ोर ज़ोर से

"चुप रहो सब. मैं कहती हूँ चुप रहो. बड़ी मस्ती सूझ रही है. चलो आज में टेस्ट लेती हूँ सबका"

"यह सही है. साला दारू बलबीर का बाप पी के आए और सज़ा हमें मिले. हम नही देते कोई टेस्ट वेस्ट" दिलजीत भी पूरा मज़ाक के मूड में आ गया था

"मेडम क्यूँ खून गरम करती हो. सोने दो ना बेचारे को. क्यूँ हमारी लगा रही हो. अच्छा लगेगा जब हम सब टेस्ट में अंडा लाएँगे और फिर प्रिंसी से कंप्लेन करेंगे कि तुम्हें पढ़ाना नही आता. हमें तो दूसरी टीचर मिल जाएगी. आप इस भरी जवानी में कहा जाओगी" विवेक बोला तो फिर से क्लास किल्कारियाँ मार के हँसने लगी.

"शट अप एवेरिबडी. जस्ट शट अप"

"ओये शोर मत मचाओ रे. साला घर पे बाप नही सोने देता. यहाँ तुमने दिमाग़ खराब कर रखा है. साला आदमी को कहीं तो चैन से रहने दो" बलबीर ने भी नींद की हालत में बोला.

"लगता है तुम्हारा आज पढ़ने का मूड नही है. ऐसे ही मेरा दिमाग़ खराब कर रहे हो"

"मेडम दिमाग़ खराब ना करो. आओ कँटीन में चल कर एक मस्त चाय पीते हैं." विवेक ने मौके पे चौका मारने की कोशिश करी

"शट अप. आज की क्लास डिस्मिस्ड. मुझे पढ़ाने का कोई शौक नहीं है अगर तुम लोगों को पढ़ना ही नही है तो" कहते हुए मल्होत्रा बाहर चली गयी

"लो कर्लो बात. साला हम बियर छोड़ कर यहाँ मल्होत्रा-दर्शन को आए और क्लास ही नही हुई. चल ओये विवेक, चलते हैं"

"अब रुक यार. अब आ ही गये हैं तो थोड़ी सी पतंग उड़ा ही लेते हैं. हो सकता है किसी और के साथ पेच लग जायें" विवेक बोला और खड़ा हो गया, "अर्रे माला.. आज कहाँ बिजली गिराने का इरादा है.. क्या कयामत लग रही हो... अर्रे पपोज़ा, तेरे जैसा नही दूजा, मैं तेरा चक्कु, तू मेरी खरबूजा" वो हर एक लड़की पे कॉमेंट मारने लगा

"साले तू तो पिटेगा, मुझे भी पिटवाएगा. अपनी नही तो कम से कम मेरी इज़्ज़त का तो ख़याल रख यहाँ"

"तेरी बड़ी इज़्ज़त आ गयी साले. तूने तो अपनी इज़्ज़त उसी दिन खो दी थी जब दारू पी के गधे पे बैठ के कॉलेज आया था"

"यार याद ना दिला तू वो दिन. चल आजा.. आज बियर का प्रोग्राम रखते हैं. चलते हैं अब. बहुत हो गयी तेरी पतंगबाज़ी"

अब दोनो वापस अपनी अपनी बुलेट पे सवार हुए और चल दिए ठेके की तरफ.

"ओये पप्पी. ४ बोटले किंगफिशर और एक तंदूरी मुर्गा ले कर आइयो. और बीमार मुर्गा मत लाना.. थोड़ा हेल्ती वाला लईयो" पहुँच कर विवेक ने ऑर्डर दिया

"यार विवेक, तूने कभी सोचा है कि हम अपनी ज़िंदगी के साथ क्या करेंगे? कभी कभी तो डर लगता है यार"

"साले दारू से पहले दिमाग़ की माँ बहेन मत कर. इतना बड़ा बिजनेस कौन संभालेगा? हमारे लिए ही तो है"

"यार वो तो ठीक है, लेकिन हमें कुछ अपना भी करना चाहिए ना"

"करेंगे यार. एक दारू की दुकान खोलेंगे. दुनिया भर की दारू रखेंगे. किसी और को एंट्री नही देंगे. मस्त दिन में दारू पीएँगे, रात रंगीली करेंगे"

"बात तो तू भी सही कह रहा है... चल आजा, आज इसी बात पे पीते हैं"

अच्छी तरह से खा पी के, अब दोनो के घर जाने का टाइम हुआ.

"साला आज फिर घर में कोहराम मच जाएगा कि पी के आयें है" दिलजीत बोला

"अबे सीधा जा के सो जाना. मैं तो कह देता हूँ कि पढ़ने जा रहा हूँ और रूम में जा के सो जाता हूँ"

"यार दिमाग़ बहुत घूम रहा है, लगता नही है कि गाड़ी चलाई जाएगी आज"

"अबे कुछ नही होगा. चल मेरे साथ. मैं हूँ ना. धीरे धीरे चलाना"

लेकिन ऐसा कभी हुआ है? दारू पी के तो उस्तादों का खून और गरम होता है, धीरे धीरे चलाने की बजाए गाड़ी १०० की स्पीड पे भागने लगी. हल्की हल्की बारिश भी शुरू हो गयी थी जिससे उनको और भी मज़ा आ रहा था.

तभी दिलजीत की गाड़ी स्लिप हो गयी. तेज़ होने के कारण गाड़ी थोड़ी दूर तक स्लिप करी.

"दिलजीत!!!" विवेक ज़ोर से चिल्लाया जैसे ही उसने देखा कि दिलजीत के ठीक सामने से एक ट्रक आ रहा है. उसने अपनी गाड़ी साइड में फेंकी और दिलजीत की तरफ भागने लगा उसको खीचने के लिए. वो जैसे जैसे दिलजीत के पास जा रहा आता, उसको यकीन हो रहा था कि ट्रक उससे पहले पहुँच जाएगा. दिल उसका भागते भागते इतनी ज़ोर से धड़क रहा था मानो अभी छाती फाड़ के बाहर ही आ जाएगा. दिलजीत निढाल पड़ा था और विवेक उसके पास पहुँचा ही था कि ट्रक ने आ कर ज़ोर से टक्कर मार दी.

अब विवेक दिलजीत के आगे खड़ा था इसलिए दिलजीत को तो कुछ हुआ नही, २ पल के बाद विवेक को समझ में आया कि हुआ तो उसे भी कुछ नहीं. पीछे मूड के देखा तो उससे टकराने के बाद ट्रक की हालत ऐसी हो गयी थी जैसे वो किसी मज़बूत बिल्डिंग से टकरा गया हो. आगे का हिस्सा पूरा चिपक गया था और आगे का काँच भी टूट गया था. अंदर के दोनो ड्राइवर झटके के कारण बेहोश हो चुके थे और उनके माथे से खून बह रहा था. विवेक को कुछ समझ नही आया. उसने दिलजीत को उठाया और उसको रोड के साइड पे रखा. सड़क बिल्कुल सुनसान थी. उसने दिलजीत की बुलेट भी साइड में पार्क करी, फोन कर के अपने दोस्त सुखविंदर को बोला कि आ के बुलेट उठा ले और दिलजीत को अपने पीछे बिठा के अपने घर ले गया

# ३

## •• दिया ••

"दिया एक पेग तो पी ले. इतना डरती क्यूँ है"

"बात डरने की नही है. मुझे नही पीनी, तो मैं नही पिऊंगी. तुको पीना है तो पीयो, मैने मना किया है क्या"

"हां हां मेडम.. आप क्यूँ पीने लगी.. आपकी तो शान के खिलाफ है ना पीना. इतने अमीर बाप की बेटी, नॉर्मल लोगों के साथ पीते देखी जाएगी तो शान घट जाएगी ना"

"शट अप रश्मि. तुम जानती हो ऐसा कुछ नही है. तुम्हें पीना है तो पीयो, नहीं तो चलते हैं यहाँ से. मुझे यह जगह अच्छी नही लग रही"

"अच्छी नही लग रही !!! मेडम यह शहेर का बेस्ट डिस्को है. यह जगह अच्छी नही लग रही तो कौन सी जगह अच्छी लगेगी? लड़के देखो कितने क्यूट क्यूट घूम रहे हैं आस पास." रश्मि ने अपनी ड्रिंक से एक घूट लेते हुए बोला

"लड़के लड़के लड़के.. तुझे और कुछ सूझता भी है इन चीज़ों के अलावा? कितने लड़के फसाएगी? २ बॉय फ्रेंड्स तो तेरे पहले से ही हैं"

"अर्रे मुझे कौन सा सब से शादी करनी है. लड़के पैसों की तरह होते हैं मेडम. जितने ज़्यादा होते हैं, उतनी ही ऐश होती है"

"चल अब फिलॉसोफी झाड़नी बंद कर और जल्दी से ड्रिंक पी. मुझे लेट हो रहा है"

"लेट हो रहा है? हॉस्टिल जा के करना क्या है? सोना है क्या इतनी जल्दी? कितनी बोरिंग है तू. रुक जा थोड़ी और देर. कल वैसे भी छुट्टी है. एंजाय कर ना यार."

दिया और रश्मि की दोस्ती को एक साल हो गया था. दोनो का रूम हॉस्टिल में एक ही था. जब वो पहली बार मिले थे तो दिया को लगा था कि उनकी दोस्ती कभी नही हो सकती. रश्मि एकदम नकचाढ़ि, हाज़िर जवाब और बिंदास लड़की थी. वो अपना सारा समान यहाँ

वहाँ फेंक के रखती थी. एक तरह से देखा जाए तो वो दिया के बिल्कुल उलट थी. दिया की आदत थी कि सबसे तहज़ीब से बात करती और अपनी सारी चीज़ें संभाल के रखती. रश्मि इस बात से उसकी बहुत खिल्ली उड़ाती और हर समय उसको बिंदास रहने की सलाह देती. दोनो की दोस्ती हुई थी जब दिया को बुखार चढ़ गया था और रश्मि ने उसकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल करी थी. उस दिन के बाद से दोनो दो जिस्म और एक जान बन गये. हर जगह साथ आते-जाते. देखने मैं भी दोनो बहुत सुंदर थी. एक तरफ जहाँ रश्मि हर किसी से फ्लर्ट करती और हर १०-१५ दिन में बॉय फ्रेंड बदल देती, वहीं दिया अभी तक 'मिस्टर. राइट' को ढूँढ रही थी. पिछले महीने उसे लगा था कि उसको उसका राजकुमार मिल गया है और वो राज के साथ बहुत घुल मिल गयी थी. लेकिन लड़कों की फ़ितरत से अंजान, वो जान भी ना पाई कि राज उससे सिर्फ़ सहवास चाहता था. एक बार वो उससे मिल गया, तो वो गधे के सर पे सींग की तरह गायब हो गया. उस हादसे के बाद, यह पहली बार था जब दिया बाहर आई थी.

"क्या सोचने लग गयी दिया?"

"कुछ नहीं यार"

"देख वो सामने से कितने हँडसम लड़के आ रहे हैं, चल उनके साथ फ्लर्ट करते हैं. मज़ा आएगा"

"तू कर. मुझे नहीं करना"

"कैसी है यार तू. चल आजा डॅन्स करते हैं थोड़ा. अब यह मत कहना कि तुझे नहीं करना वरना यह ड्रिंक का ग्लास उठा के तेरे सर पे मारूँगी. अक्कल भी ठिकाने आ जाएगी और दारू भी चख लेगी" रश्मि के बोलने के तरीके से सॉफ लग रहा था कि दारू उसपे असर दिखाना शुरू कर दी है. लेकिन दिया जानती थी कि वो अपने आप को संभाल सकती है क्यूंकी यह उसके लिए नयी बात नही हैं.

"चल चलते हैं" दिया ने रश्मि का हाथ पकड़ा और डॅन्स फ्लोर पर चल दी

डॅन्स फ्लोर एकदम खचाखच भरा था. इंसानो में एक अजीब से बात होती है के जो भीड़ लोकल बस/ट्रेन में उन्हे अजीब सी लगती है, उसी भीड़ में डॅन्सेफ्लॉर पे उन्हे इंटिमेसी

लगती है. दोनो बहुत एक्ससाइटेड हो कर फ्लोर पे पहुँचे और नाचने लगे. दो खूबसूरत लड़कियों को अकेला नाचते देख, काफ़ी लड़के जल्द ही आस-पास इकट्ठे हो गये और उनके साथ डॅन्स करने लग गये. रश्मि बहुत एक्ससाइटेड हो रही थी और रह रह कर किसी किसी से चिपक के डॅन्स कर रही थी. थोड़ी देर बाद दिया थोड़ा थक गयी और जा के बैठ गयी और डॅन्सेफ्लॉर की तरफ देखने लग गयी. रश्मि का जलवा अब ज़ोरों पर था. वो अपनी छाती और नितंब हिला हिला के डॅन्स कर रही थी. कभी किसी से चिपकती तो कभी किसी से. तभी उसने देखा कि रश्मि के आगे और पीछे एक एक लड़का खड़ा हो गया है. आगे वाला लड़का उसे किस करने लगा और पीछे वाला उसके नितंबों पे हाथ फेरने लगा. रश्मि भी बड़े जोश के साथ आगे वाले को किस करने लगी और अपने कूल्हे हिला हिला कर पीछे वाले पे रगड़ने लगी. उसकी उत्तेजना छप्पर फाड़ रही थी.

धीरे धीरे आगे वाले लड़के ने उसका पैर उठाया और उसकी जांघों पे हाथ फेरने लगा. थोड़ी देर ऐसा चलता रहा और फिर पीछे वाले ने उसके कान में कुछ बुद्बुदाया और तीनो एक कोने में बने कमरे में चले गये. दिया को डर लगने लगा कि कुछ अनर्थ ना हो जाए और वो उनके पीछे पीछे हो ली. जब वो वहाँ पहुँची तो अंदर का नज़ारा देख के हैरान रह गयी. दरवाज़ा खुला हुआ था और अंदर काफ़ी लोग संभोग कर रहे थे. रश्मि सोफे पे बैठी हुई थी एक लड़के के साथ. लड़के का हाथ उसकी मिनी स्कर्ट के अंदर था और वो बेतहाशा उसके होठों को चूम रहा था. रश्मि भी आहें भर रही थी. तभी लड़के ने अपना हाथ उसके स्कर्ट में से निकाला. उसकी उंगलियाँ बिल्कुल गीली थी. वो उंगलियाँ उसने रश्मि के होठों पे रख दी और रश्मि उनको चाटने लगी. धीरे धीरे उससने रश्मि का टॉप उतार दिया. रश्मि के स्तनाग्र एकदम टाइट खड़े थे. थोड़ी देर उन्हें निहार के, उस लड़के ने उन्हें चूसना चालू कर दिया. रश्मि के मूह से आहों के सिवा कुछ नहीं निकल रहा था. थोड़ी देर में रश्मि का स्कर्ट भी उतार दिया. अब रश्मि सोफे पे सिर्फ़ अपनी चड्डी में बैठी थी जो कुछ ही पलों में उतर गयी. रश्मि की योनि एकदम गीली थी और उसकी हरकतों से सॉफ लग रहा था के वो उत्तेजना के सातवे आसमान पर है. दिया को पता था कि एक अच्छा दोस्त होने के कारण उसको यह सब रोकना चाहिए, पर वो जानती थी कि रश्मि के लिए यह सब नॉर्मल है और वो उसी पे भड़केगी. इसलिए वो चुप चाप बाहर खड़ी नज़ारा देखती रही.

अब वो लड़का धीरे धीरे रश्मि के टाँगों के बीच घुस गया और उसको चाटने लगा. कभी हॉरिज़ॉँटेली तो कभी वर्टिकली वो अपनी जीभ टेक्सी सी घुमा रहा था और रश्मि के शरीर में अजीब हरकतें हो रही थी. धीरे धीरे उस लड़के ने अपना लिंग बाहर निकाला और रश्मि को पूरी तरह से सोफे पे लिटा दिया. फिर उसने अपना लिंग उसके होठों के पास रखा और रश्मि ने झट से उसका सुपाडा मूह में ले लिया. धीरे धीरे रश्मि ने उसका पूरा लिंग अपने मूह

में ले लिया और और वो उसको अंदर बाहर करने लगा. रश्मि एक हाथ से उसके लिंग को पकड़े हुए थी और दूसरे से अपनी योनि से खेल रही थी. तभी अंदर बना एक और दरवाज़ा खुला और उसमें से एक लड़का लड़की बाहर निकले. रश्मि को पकड़ के उस लड़के ने झट से उस कमरे में एंट्री ले ली. तब दिया ने देखा कि जो दूसरा लड़का उनके साथ आया था, वो भी पीछे पीछे चल रहा था अपने मोबाइल के साथ. दिया समझ गयी कि वो वीडियो शूटिंग कर रहा है और यह समझते ही उसकी सिट्टी पीटी गुम हो गयी.

वो फटाफट से अंदर घुसी और उस कमरे में दाखिल हुई. रश्मि किसी वेश्या की तरह उस लड़के का लिंग चूस रही थी और दूसरा लड़का साइड में खड़ा वीडियो निकाल रहा था.

"क्या कर रहे हो तुम. बंद करो यह सब" दिया उस आदमी की तरफ बढ़ी और फोन झपटने की कोशिश करी. पर वो ज़्यादा फुर्तीला निकला और अपना हाथ पीछे कर लिया. दिया अपना बॅलेन्स नही रख पाई और फिसल के उसकी बाहों में चली गयी

"अर्रे वाह. आज तो एक टिकेट पे दो-दो मूवी बनेंगी. आ जा मेरी बुलबुल" कहते हुए उस लड़के ने उसको एक चुम्मि दे दी

"डोर हटो मेरे से. छोड़ो मुझे" दिया ने उसकी ग्रिप से निकलने की कोशिश करी पर निकल ना पाई. उसको एहसास हुआ जैसे उसकी बाह में एक निडिल घुस रही है पर वो उस आदमी की पक्कड़ में इतनी बुरी तरह उलझी हुई थी कि अपना सिर भी नही हिला पा रही थी. . धीरे धीरे उसको अपने अंदर कुछ इंजेक्ट होता महसूस हुआ और वो बेहोश हो गयी.

जब उसे होश आया तो उसने पाया कि वो अपनी कार के पीछे वाली सीट पर लेटी हुई है. उसके कपड़े नदारद थे. और टाँगों के बीच में बहुत दर्द हो रहा था. तभी उसे रश्मि के चीखने की आवाज़ सुनाई दी. वो किसी तरह से कार से बाहर निकली तो उसने देखा कि वोही दोनो लड़के एक साथ मिल के रश्मि को ठोक रहे हैं. एक लड़का नीचे लेटा हुआ था और रश्मि उसके उपर थी. दूसरे ने रश्मि को झुका दिया था और उसकी नितंब मार रहा था. दिया का माथा बहुत घूम रहा था और उसे कुछ ज़्यादा समझ में नही आ रहा था. वोही हाल शायद रश्मि का भी था. तभी एक लड़के की नज़र दिया पर पड़ी और वो रश्मि की नितंब छोड़ कर दिया की तरफ बढ़ने लगा. वो उसके पास आया और अपने होठों से उसके होठों को दबा दिया. डर के मारे दिया काँपने लग गयी थी. उसको पता चल गया था कि उसका रेप हुआ है और अभी शायद और होगा. तभी उस लड़के ने दिया की एक टाँग उठानी चाही.

"छोड़ दो मुझे प्लीज़" कहते हुए दिया उसके सामने गिडगिडाने लगी

"अभी नही मेरी जान. थोड़ी देर और बस. फिर तुम्हें छोड़ देंगे" कहते हुए उस आदमी ने अपना लिंग एक झटके के साथ दिया की योनि के अंदर घुसा दिया.

"अयाया" करके दिया ज़ोर से चिल्लाई और अपने दोनो हाथ उस आदमी की छाती पे मारे. जैसे ही दिया के हाथों ने उस आदमी से कॉंटॅक्ट किया, चिर्र्र् की आवाज़ के साथ एक झटका लगा दोनो को और वो आदमी दूर जा गिरा. दिया का दिमाग़ एकदम क्लियर हो गया. उसको ऐसा लगा जैसे किसी ने उसको बिजली का झटका दे दिया हो. अपने साथी की हालत देख दूसरे आदमी ने रश्मि को अपने उपर से उतार फेका और दिया की तरफ बढ़ा

"क्या किया रे तूने उसके साथ?"

"देखो मेरे पास मत आना"

"बहुत दम है तेरे में? मैं भी तो देखूं ज़रा" कहते हुए उस आदमी ने दिया पे झपट्टा मारा. जैसे ही उस ने दिया को छुआ, उसको भी ज़ोर से एक बिजली का झटका लगा और वो भी दूर जा गिरा.

दिया की समझ में कुछ नही आ रहा था. उसने फटाफट कार में से अपने और रश्मि के कपड़े निकाले, खुद पहने और उसको पहनाए और कार लेकर वहाँ से चंपत हो गयी

# ४

## ●● प्रतिक ●●

प्रतिक ने रिचा को अपनी छाती से लगा लिया. रिचा थोड़ा गुस्से में थी इसलिए थोड़ा रेज़िस्ट किया, पर प्रतिक ने धीरे से उसके कानो में बोला "टेंशन मत लो जान, सिर्फ़ पढ़ाई के लिए जा रहा हूँ, हमेशा के लिए थोड़े ना" और वो जैसे उसकी बाहों में पिघल गयी. फिर उसने उसकी आँखो में झाँका और उसके होठों को अपने होठों से दबा दिया. उसकी जीभ रिचा के मूह में घूमने लगी और हाथ धीरे धीरे उसके उरोज़ सहलाने लगे. रिचा के मूह से एक आह निकली और वो भी प्रतिक की जीभ को चूसने लगी. जब प्रतिक के ठंडे हाथ उसकी पीठ पर पड़े, तब उसको रीयलाइज़ हुआ कि उसकी टी-शर्ट उपर उठ चुकी है और उसके उरोज़ पूरे बाहर हैं. प्रतिक धीरे धीरे उन्हे चूस रहा था और अपना हाथ रिचा की पीठ पर फेर रहा था. धीरे धीरे प्रतिक ने उसकी टी-शर्ट उतारी. वो इतना गरम हो चुकी थी कि उसने खुद ही अपने हाथ उपर उठा दिए ताकि कोई मुश्किल ना हो.

रिचा ने प्रतिक को धक्का दे कर सोफे पे बैठा दिया और उसकी जीन्स और अंडरवेर उतार दी. फिर वो उसके लिंग को सहलाने लगी और धीरे धीरे उससे अपने मूह में लेने लगी. प्रतिक धीरे धीरे रिदम बनाता गया और झटके दे कर अपना लिंग उसके मूह के अंदर बाहर करने लगा. लिंग को चूस्ते हुए रिचा की बड़ी बड़ी काली आँखें प्रतिक को ही देख रही थी. उनमें एक अजीब सी शैतानी थी जैसे उसको चॅलेंज कर रही हो कि आज जो कुछ भी कर सकता है कर दे. उसने अपनी जीब से प्रतिक का पूरा लिंग गीला कर दिया था और उसकी गोटियों को सहला रही थी. अब प्रतिक से रहा नही जा रहा था. वो खड़ा हुआ और उसने अपनी पोज़िशन बदल ली. अब रिचा सोफे पे थी और प्रतिक खड़ा था. प्रतिक का लिंग, एकदम गीला होकर सलामी दे रहा था. प्रतिक ने रिचा की जीन्स और अंडरवेर उतारी और अपना मूह उसकी योनि के पास रख दिया. वो धीरे धीरे गरम साँसें फेंकने लगा उसकी योनि की फांको पे. उससे पता था कि इससे वो और ज़्यादा उत्तेजित होती है. फिर वो अपनी जीभ उसकी फांको के बाहरी हिस्से पे फिराने लगा. रिचा की दोनो टांगे प्रतिक के कंधे पर थी और वो अपने हाथों से अपनी स्तन मसलने लगी. उसके स्तनाग्र पत्थर की तरह हार्ड हो चुके थे. धीरे धीरे प्रतिक अपनी जीभ उसके योनि पे फेरने लगा जिससे रिचा के जिस्म में मानो करेंट की एक ल़हेर दौड़ गयी. वो समझ गयी कि प्रतिक की कलाकारी के आगे उसको झड़ने में ज़्यादा टाइम नही लगेगा.

प्रतिक अपनी ज़बान उसके योनि पर फेरते हुए, अपनी  उंगलियाँ उसकी योनि से अंदर बाहर कर रहा था. "ओह... प्रतिक..... आआआः" कहते हुए रिचा ने अपना पानी छोड़ दिया जिससे प्रतिक ने अपनी जीभ भिगो दी. फिर उसने अपना मूह उसकी टाँगों के बीच से निकाला और उसको फ्रेंच किस करने लगा. अपने रस का स्वाद चख कर रिचा और भी गरम हो गयी.

"प्रतिक प्लीज फक मी."

"ज़रूर रिचा. चलो पलट जाओ" कहते हुए उसने रिचा को पलटना में मदद करी. अब रिचा टाँगें नीचे कर की ऑर अपने कूल्हे उठा कर, प्रतिक के लिंग को अंदर लेने के लिए तैयार हो गयी. प्रतिक ने अपने लिंग को फिर थोड़ा थूक से भिगोया और उसकी योनि के द्वार पर रख दिया. उसने अपने दोनो हाथ उसकी नितंब पर रख दिए और एक झटके के साथ अपना लिंग उसकी योनि में घुसा दिया.

"अयाया.. आराम से.. रूओह्ह्हीईत"

"आज आराम नही है रिचा. पता नही आज के बाद कब मिलेंगे" कहते हुए प्रतिक ने उससे डॉगी स्टाइल में ठोकना शुरू कर दिया. पूरा माहौल रिचा की आहो और उनके जिस्म के टकराने की आवाज़ से भर गया. झटकों से रिचा के उरोज़ उपर नीचे हो रहे थे. प्रतिक ने थोड़ा आगे झुक कर उन्हे पकड़ लिया और ठोकते हुए ही उनके साथ खेलने लग गया. अब रिचा से और नही रहा गया और फिर एक लंबी चीख के साथ उसने अपना पानी छोड़ दिया. उसकी योनि की दीवारों ने प्रतिक के लिंग को जक्कड़ लिया और प्रतिक को पता चल गया कि वो भी अब ज़्यादा देर टिकने नही वाला. उसने अपना लिंग बाहर निकाला और रिचा को घुमा कर अपना लिंग उसके मूह में डाल दिया. रिचा ने अपनी जीभ उसपर फेरनी शुरू ही करी थी कि प्रतिक ने उसके बाल पक्कड़ कर उसका मूह थोड़ा उपर किया और दूसरे हाथ से लिंग की हिलाते हुए अपना वीर्य उसके मूह पर झटकने लगा.

प्रतिक का वीर्य रिचा के मूह और बालों पर गिर गया. प्रतिक जानता था कि इस बात से रिचा बहुत चिड़ती है लेकिन उसको यह करने में बहुत मज़ा आता था. जब उसका पूरा रस निकल गया तो वो निढाल हो कर नीचे बैठ गया और रिचा से चिपट गया. दोनो एक दूसरे को किस कर रहे थे कि तभी प्रतिक का फोन बज पड़ा.

"बेटा कहाँ हो? हम एयरपोर्ट के लिए निकल रहे हैं.."

"पा आप निकलो, मैं सीधा वहीं पहुँचता हूँ. फ्रिड्ज के उपर मेरा पासपोर्ट और टिकेट्स पड़े हैं. उनको लेना मत भूलना"

"हां बेटा मैने वो ले लिए हैं. जल्दी आ जाना. ज़्यादा टाइम नही बचा है फ्लाइट में"

"बस अभी पहुँचता हूँ पा" कहते हुए प्रतिक ने फोन काटा और जल्दी से उठ के अपने कपड़े पहनने लगा. रिचा मायूस हो कर बस उससे देखे जा रही थी. उनके ६ महीने का प्यार आज इस मोड़ पर आ कर शायद ख़तम होने वाला था. "बहुत लेट हो गया मैं रिचा"

"मैं तो चाहती हूँ कि तुम्हारी फ्लाइट ही मिस हो जाए"

"ऐसा मत बोलो.. बहुत उम्मीदें हैं मुझसे घर वालों को"

"तुम मेरे टच में रहोगे ना प्रतिक."

"बिल्कुल रिचा. बिल्कुल टच में रहूँगा. कैसी बात करती हो तुम भी"

"वहाँ जा कर किसी और से दिल ना लगा बैठना"

"शट अप रिचा. चलो अब गले मिलो और एक गुड बाइ किस दो. जल्द ही दोबारा मुलाक़ात होगी. और प्लीज़ आँसू बहाना बंद करो. मुझे बिल्कुल अच्छा नही लगता जब कोई रोता है तो" कहते हुए उसने रिचा के आँसू पोछे, उसे किस करी और भारी मन से निकल गया एयरपोर्ट को.

"कितनी देर लगा दी बेटा पहुँचने में. फ्लाइट के चेक्किन का अनाउन्स्मेंट हो चुका है" एयरपोर्ट पहुँचते ही उसकी माँ ने उसको फटकार लगाई

"माँ थोड़ा दोस्तों से मिल रहा था. देरी हो गयी. कोई टेंशन नही है"

"बेटा तू बड़ा हो गया है अब, ज़िम्मेदारी लेनी सीख.."

"माँ प्लीज यह लेक्चरबाजी नही यहाँ. मूड मत खराब करो"

"हां हां.. कुछ भी अच्छी बात बताओ तो साहबज़ादे का मूड खराब हो जाता है. वहाँ अच्छी तरह से रहना बेटा और रोज़ फोन करना"

"हां माँ रोज़ फोन करूँगा. और प्लीज़ आप आँसू बहा के टिपिकल मदर इंडिया मत बनो. देखो कितने लोग सी ऑफ करने आए हैं, कोई आपकी तरह सेनटी है क्या"

"अर्रे इन गोरों को तो अपने बच्चों से लगाव ही नही होता. यह तो बस उनसे जान छुड़ाना चाहते हैं. पर बेटा वहाँ बुरी संगत में ना पड़ना"

"पा कुछ समझाओ ना माँ को. क्या एक ही रेकॉर्ड बजाए जा रही हैं"

"बेटा हम तुम्हारे पेरेंट्स हैं. हम तुम्हें नही बताएँगे तो और कौन बाएगा"उसके पापा बोले

"अच्छा तो आप दोनो की मिली भगत है यह. कुछ नही होता. सुना लो जितना सुनाना है. अब तो थोड़े दिन बाद ही मुलाक़ात होगी"

तभी सेक्यूरिटी चेक इन की फाइनल अनाउन्स्मेंट हो गयी.

"अच्छा माँ... पा... मैं चलता हूँ. आप दोनो अपना ख़याल रखना और ज़्यादा टेंशन मत लेना. मैं बिल्कुल ठीक रहूँगा वहाँ पे" कहते हुए उसने अपने माँ और पापा के पैर छुए और समान ले कर चल दिया चेक-इन के लिए.

"ओह्ह नो.. प्लीज .. नोट द इमरजेंसी सीट. डोंट यू हॅव एनी अदर सीट अवेलबल ?"

"आइ आम सॉरी सर, बट दा एंटाइयर क्रॅफ्ट इस कंप्लीट्ली बुक्ड. दट ईज़ दा ओन्ली सीट विच वी कॅन अलॉट. इफ़ यू वान्ट यू कॅन एक्सचेंज दा सीट इनसाइड दा क्रॅफ्ट वित एनी पॅसेंजर"

"वो तो मैं कर ही लूँगा गोरी, तुझे बताने की ज़रूरत नही है. ओके देन, आइ गेस आइ डोंट हॅव आ चाय्स" कहते हुए उसने बोरडिंग पास लिया और चल पड़ा प्लेन की तरफ. बचपन

से ही उसे प्लेन्स से बहुत डर लगता था. वो बिल्कुल नही जानता था कि ऐसा क्यूँ है, पर जब भी वो प्लेन में बैठता, डर के मारे उसका बुरा हाल होता. आज भी कुछ अलग नही था. उपर से यह एमर्जेन्सी सीट. उसने सोचा २ घंटे का ही तो सफ़र है, किसी तरह से निकाल लेंगे, किसी का एहसान क्या लेना, इसी लिए उसने सीट भी एक्सचेंज नही करी.

अभी फ्लाइट टेक ऑफ भी नही हुई थी कि उसका पूरा चेहरा पसीने से भर चुका था.

"आर यू ओके सर? डू यू नीड एनी असिस्टेन्स?" एर होस्टेस्स ने उसकी हालत देख कर उससे पूछा

"नो आइ आम फाइन. जस्ट सम बटरफ्लाइस इन दा स्टमक. आइ एम श्योर एवरीथिंग विल बी ऑलराइट आंड वी विल लँड सेफ्ली"

"श्योर सर. इफ़ यू नीड एनीथिंग, जस्ट प्रेस दिस बटन" कह कर एर होस्टेस्स चली गयी

"पहली बार प्लेन से सफ़र कर रहे हो क्या आप?" उसके साथ वाले आदमी ने उससे पूछा. शकल से वो इंडियन लगता था और पान चबा रहा था जिससे शक की कोई गुंजाइश नही रही

"जी नहीं"

"ह्म्म शकल से भी नही लगते. हमारा तो प्लेन में बहुत आना जाना लगा रहता रहता है. कभी न्यू यॉर्क, कभी यहाँ कभी वहाँ. क्या करें कुछ काम ही ऐसा है. आप भी टोरोंटो जा रहे हैं?"

"जी जब यह प्लेन टोरोंटो जा रहा है तो ज़ाहिर सी बात है के मैं भी वहीं जा रहा होऊँगा"

"वैसे बात तो सही है. मेरा तो कारोबार हैं वहाँ पे. अपनी कॅब एजेन्सी है. काफ़ी मुनाफ़ा होता है"

"आप कौन है और यह सब मुझे क्यूँ बता रहे हैं? शादी का रिश्ता पक्का करना है क्या?" उसने थोड़ा खीजते हुए बोला

"अर्रे मैं तो बस ऐसे ही बात कर रहा था. गुस्सा क्यूँ होते हो. अब नहीं करूँगा" कहते हुए उसने उधर की तरफ मूह कर लिया. प्रतिक ने अभी चैन की सास ली ही थी कि वो आदमी फिर से बोल पड़ा "देखिए अगर मैं आपकी मॅगज़ीन ले जाउ तो आपको कोई ऐतराज़ तो नही होगा ना?"

"मेरी मॅगज़ीन क्यूँ ले जाएँगे आप? आपके पास भी तो है.."

"अर्रे दो ले जाऊंगा घर पे तो ठीक रहेगा ना.. मेरी २ बेटियाँ है. दोनो एक एक ले लेंगी. नहीं तो लड़ाई हो जाएगी"

"यह लीजिए. रख लो. और मुझे बख्स दो"

"अर्रे देखो प्लेन चल पड़ा. अभी यह उड़ेगा. लेकिन यह क्या सीट मिल गयी है.. विंग के सिवा कुछ दिखता ही नही है"

"क्या देखना है बाहर? किसी को हाथ हिला कर बाइ करना है क्या? यार भगवान के लिए मुझे बख्स दो"

"अर्रे भगवान को बीच में क्यूँ ला रहे हैं.. वैसे भी उनके बहुत करीब से उड़ रहे हैं, ऐसा ना हो कि उनको आप पसंद आ जाओ" कहता हुआ वो खिलखिला कर हँसने लगा.

प्रतिक को बहुत गुस्सा आ रहा था, लेकिन उसने किसी तरह से अपने उपर काबू किया और दूसरी तरफ मूह फेर के सोने की कोशिश करने लगा. कब उसकी आँख लग गयी, उसको पता भी नही चला. थोड़ी देर में एक झटके के साथ उसकी आँख खुली. उसने देखा कि प्लेन को काफ़ी झटके लग रहे हैं. तभी अनाउन्स्मेंट हुई कि बाहर बहुत टर्ब्युलेन्स है. ऑक्सिजन मास्क्स भी नीचे लटक गये. बाहर बारिश बहुत तेज़ हो रही थी और बिजली कड़कती दिखाई दे रही थी. तब एक झटके के साथ प्लेन लड़खड़ाने लगा. प्रतिक ने देखा के प्लेन के विंग में आग लग गयी है और उसकी हालत बहुत खराब हो गयी. एक बिजली कबोल्ट प्लेन पे गिरा और इससे पहले प्रतिक कुछ समझ पाता, अंदर आग ही आग हो गयी. लोग चीखने चिल्लाने लगे और प्लेन का एक हिस्सा जलने लग गया. बाहर और अंदर के प्रेशर के डिफरेन्स के कारण, प्लेन का पीछे का हिस्सा टूट गया और प्रतिक और कई लोगों समेत, प्लेन से अलग हो गया और नीचे गिरने लग गया. नीचे गिरते वक़्त उसे एक

ज़ोर के धमाके की आवाज़ आई और वो समझ गया कि आधा प्लेन ब्लास्ट हो चुका है. बचे हुए लोग, तेज़ी से ज़मीन की तरफ गिर रहे थे और उनका बचना भी नामुमकिन था.

प्रतिक ने अपनी आँखें बंद कर ली और उसकी पूरी ज़िंदगी की तस्वीरें उसके आगे घूमने लगी. उसके माँ बाप, उसके दोस्त, उसके सभी चाहने वाले एक एक करके उससे याद आने लगे. ज़िंदगी के आखरी चन्द लम्हों में वो अपनी सारी खुशियाँ याद करने लगा और उसकी आँखों से आसू बहने लगे. तभी अचानक उसकी छाती पर हवा का ज़ोरदार वार हुआ और उसे ऐसा लगा मानो वो उपर की ओर खिच रहा है. उसने अपनी आँखें खोली तो सामने का मंज़र देख कर उसे यकीन नही हुआ. जहाँ सब कुछ नीचे गिरता जा रहा था, वहीं किसी कारण से प्रतिक उपर उठ रहा था. उसने अपने आप को थोड़ा संभाला और एक तरफ झुक गया. अब तो जो हो रहा था उसपे यकीन करना एकदम असंभव था. वो हवा में ग्लाइड कर रहा था. बिल्कुल एक पक्षी की तरह. दायें, बायें, उपर, नीचे - जिस दिशा में वो जाना चाहता था, वो जा पा रहा था. वो सच मूच उड़ रहा था

# ५

## •• पूजा ••

"१ मिलियन यूएसडी ?? यू मस्ट बी जोकिंग. १० मिलियन से कम में मैं काम नही करूँगी" पूजा गुस्से में बोली

"१० मिलियन बहुत ज़्यादा है" आदमी बोला

"तो फिर ढूँढ लो किसी को जो तुम्हारा काम १ मिलियन में करे. मैने पहले ही बोला था, काम तुम्हारा, दाम मेरा. इतना बड़ा काम है, आइ विल नोट काँप्रमाइज़ ऑन मनी"

"मुझे सोचना पड़ेगा"

"तो सोच लो. पूरे ५ मिनिट हैं तुम्हारे पास. फिर कभी मुलाक़ात नही होगी" कहते हुए पूजा उठी और बाल्कनी में जा कर सिगरेट पीने लगी.

आदमी को सोचने की कोई ज़रूरत नही थी. उसको पता था कि पूजा से अच्छी लड़की नही मिलेगी उसको यह चोरी करने के लिए. ऐसी चोरियाँ करने में वो माहिर थी और जिस चीज़ की चोरी कर रही थी, उसका दाम तो वैसे भी बिलियन्स में था. रह रह के आदमी एक ही बात सोच रहा था कि एक ऐसी लड़की कैसे चोरियों में पड़ गयी. उसको देख कर कोई नही कह सकता था कि वो एक चोर है. देखने में वो किसी मॉडेल से कम नही लगती थी. पतली, लंबी, बड़ी बड़ी आँखें, लंबे काले बाल और चाल तो ऐसी के चौराहे पर पूरा ट्रॅफिक रुकवा दे. शायद इस दुनिया की लड़कियों को कोई नही समझ सकता था. जो लड़की आराम से मॉडेलिंग कर के या किसी अमीर आदमी की ट्रोफी वाइफ बन के अपनी सारी उमर गुज़ार सकती थी, वो चोरियाँ कर रही है. लेकिन आदमी को अपने काम से मतलब था, लड़की की हिस्टरी-जियोग्राफी से नही. जब पूजा वापस आई तो उसने झट से बोल दिया "ठीक है पूजा. १० मिलियन इट ईज़. १ मिलियन अभी और बाकी ९ मिलियन काम होने के बाद"

"मंज़ूर है. कोई धोखाधड़ी करने की कोशिश करी तो याद रखना, पाताल से ढूँढ लाऊंगी और ऐसी हालत करूँगी कि तुम रोज़ दुआ करोगे कि मौत आ जाए, लेकिन मौत भी नखरे

दिखाएगी और आएगी नही"

"मेरी ज़बान है पूजा. तुम मेरा काम करो और मैं तुम्हें पैसे दूँगा. चोरों की ईमानदारी पे कभी शक नही करना चाहिए"

"हां हां. फिल्मी बातें बंद करो और बँक का ब्लू प्रिंट निकालो. कोई प्लान बनाना पड़ेगा अगर तुम्हारे पास पहले से प्लान नही है तो."

"मेरे पास कोई प्लान नही है. यह रहे ब्लूप्रिंट. अच्छी तरह से देख लो और जैसा तुम्हें ठीक लगे वैसा प्लान बनाओ" कहते हुए आदमी ने ब्लू प्रिंट निकाल के टेबल पर रख दिए.

पूजा काफ़ी देर तक उन ब्लूप्रिंट्स को स्टडी करती रही और कुछ सोचती रही. प्लान तो उसने २ मिनिट में ही बना लिया था, पर जब पार्टी १० मिलियन दे रही है तो उसको लगना भी चाहिए कि मेहनत बहुत हो रही है. आख़िर पूजा की इमेज का सवाल था.

"आदमी हम कल ही चोरी करेंगे" थोड़ी देर में वो बोली.

"कल? पर कल सॅटर्डे है. बहुत भीड़ रहेगी बँक में"

"इसी लिए तो कह रही हूँ. अब प्लान सुन और जैसा मैं कहती हूँ वैसे ही करना. नहीं तो हम दोनो की जान ज़ोख़िम में पड़ जाएगी. मैं तो किसी तरह निकल लूँगी. तुम्हारा नहीं कह सकती" और पूजा अपना सारा प्लान उसे बताने लगी.

अगले दिन सुबह पूजा आदमी को बँक के बाहर मिली. उसने बुरखा पहन के अपने आप को कवर किया हुआ था.

"आओ, अंदर चलते हैं. भूले तो नहीं ना प्लान? लॉकर नंबर याद है?"

"बिल्कुल याद है. ४ से शुरू होने वाला लॉकर चाहिए"

"गुड. चलो अब अंदर." दोनो हाथ में हाथ डालकर बँक में दाखिल हो गये. एंट्रेन्स पे सेक्यूरिटी चेक हुआ, लेकिन उनके पास ऐसा कुछ भी नही था जो पकड़ा जाता. आदमी

अभी भी सोच रहा था कि पता नही कैसे पूजा वो पेपर्स अंदर से निकलेगी

"आइ वान्ट आ सेफ्टी डेपॉज़िट लॉकर" आदमी ने काउंटर पे जा के कहा.

"सर वी डू नोट गिव लॉकर्स टू पीपल हू डू नोट हॅव आन अकाउंट वित अस"

" मेरा अकाउंट हैं यहाँ पर. आइ एम अन ओल्ड कस्टमर"

"ओह्ह सॉरी सर. फिर आप यह फॉर्म भर दीजिए आंड वी विल डू दा नीडफुल" उसने एक फॉर्म आदमी के आगे कर दिया. कोने में जा कर आदमी वो फॉर्म भरने लग गया. उसने वो सारी जाली डीटेल्स उस में डाल दी जो उसने यहाँ अकाउंट खोलते वक़्त दी थी.

"हियर यू गो मेडम."

"थँक यू सर. मैं ज़रा वेरिफाइ कर लूँ, फिर आपको लॉकर दिखा देंगे"

"मेडम एक रिक्वेस्ट है. लॉकर नंबर ४ से शुरू होना चाहिए. दट ईज़ माइ लकी नंबर"

"मैं देखती हूँ कि क्या कर सकती हूँ सर" कहते हुए वो वेरिफिकेशन करने लग गयी आंड २ मिनिट बाद बोली, "सर हो गया. आपका लॉकर नंबर ४०३५ है. यह रही चाबी. दिस सेक्यूरिटी पर्सन विल गाइड यू देयर."

"मॅम आपके पास ४ से शुरू होने वाला कोई ३ डिजिट्स का लॉकर नही है? आइ आम वेरी सूपरस्टिशस. प्लीज़ हेल्प मी."

"ह्म... ओके .. फिर आपको ४५४ दे देती हूँ. विल दयाट बी ऑलराइट?"

"पर्फेक्ट है मेडम. थँक्स. प्लीज़ मुझे लॉकर दिखा दीजिए. आओ बेगम. समान रख दो उसमें" कहते हुए उसने फिर से पूजा का हाथ पकड़ा और उसे ले कर लॉकर्स की तरफ चल पड़ा. उसके दिल की धड़कनें बहुत तेज़ हो रही थी. बस यहीं तक का प्लान उसको पता था. उसका काम भी यहीं ख़तम हो रहा था. आगे जो भी करना है, पूजा को ही करना था.

"आइए मॅम, इस तरफ है" सेक्यूरिटी वाला उनके आगे आगे चलने लगा. उसने अंदर जा कर उनको लॉकर दिखाया.

"डार्लिंग,यू वेट आउटसाइड. मैं आती हूँ सब रख कर" पूजा बोली

"ओके. श्योर" आदमी अचरज में पड़ गया. कैसे करेगी वो अब और कहीं उसको धोखा तो नहीं देगी?

"और आप भी यहा खड़े घूरते ही रहेंगे या बाहर जा कर वेट करेंगे?" उसने सेक्यूरिटी गार्ड से पूछा.

"जी मेडम. मैं बाहर वेट करता हूँ." सकपका कर सेक्यूरिटी वाला बोला

अब रूम में पूजा अकेली थी. जो लॉकर से उसको डॉक्युमेंट्स चुराने थे, वो साथ वाले कमरे में था. उस कमरे का दरवाज़ा लोहे के गेट से बंद था जिसपे सेन्सर लगे हुए थे. अगर उसको खोलने की कोशिश करी जाती तो अलार्म बज उठता. चारों ओर कैमरे लगे हुए थे जो हर एक चलकदमी को रेकॉर्ड कर रहे थे. सबसे अच्छी बात यही थी कि एक बार में बस एक ही पर्सन अलोड था लॉकर्स में, तो और कोई नही था आस पास. पूजा ने अपना आल्लोटेड लॉकर खोला और अपने साथ लाया बॅग उसमें रख दिया. अब बारी थी कॅमरा की. नॉर्मल किसी के लिए कॅमरास को काबू करना मुश्किल होता, लेकिन पूजा के लिए नहीं.

उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया और अपनी आखें गढ़ा दी कॅमरा पे. कॅमरा खुद ब खुद डिसकनेक्ट हो गया. फिर पूजा दो कदम पीछे हुई और अपने दिमाग़ में साथ वाले रूम को देखने लगी. उसके और रूम के बीच में सिर्फ़ एक दीवार थी इस साइड पर जो दोनो तरफ से लॉकर्स से घिरी हुई थी. आँखें बंद करके पूजा धीरे धीरे चलना शुरू हुई और धीरे धीरे पहले लॉकर, फिर दीवार और फिर दूसरी तरफ के लॉकर्स के थ्रू हो गयी. उसने काफ़ी पहले अपनी एबिलिटीस को पहचान लिया था और उनको कंट्रोल करना सीख लिया था. अब वो 'उस' लॉकर के पास पहुँची पहले उसने अपने दिमाग़ की शक्ति से उसको खोलने की कोशिश करी पर ताला तोड़ना कॉंप्लिकेटेड था. तो उसने स्टील के थ्रू हाथ डाल के अंदर का काग़ज़ पक्कड़ लिया. अब वो धीरे धीरे अपना हाथ वापस खीचने लगी. हाथ तो वापस आ रहा था पर पेपर लोहे के थ्रू नही हो पा रहा था. पूजा ने ओर ज़ोर से कॉन्सेंट्रेट

किया और उस सेफ्टी बॉक्स में बड़ा सा छेद कर दिया. उसने वो पेपर उस में से निकाला और वापस उस होल को सील कर दिया. इतना करने से वो बहुत थक चुकी थी. उसको पूरा यकीन नही था कि वो वापस दीवार के थ्रू जंप मार पाएगी या नहीं, लेकिन उसको वो तो करना ही था. उसने फिर २ कदम पीछे लिए और और इस बार जल्दी से जंप मार के पार हो गयी. इतने एक्शेरशन से उसकी हालत खराब हो गयी थी और वो निढाल हो कर ज़मीन पर गिर गयी.

"उठो पूजा, उठो"

उसको होश आया तो देखा कि आदमी और सेक्यूरिटी वाला उसको घूर रहे हैं और वो ज़मीन पर पड़ी हुई है

"क्या हुआ मेडम... आप ठीक तो हैं"

"मुझे चक्कर आ गया था, चलो जल्दी से यहाँ से चलते हैं. मेरी तबीयत ठीक नही है. लॉकर का काम भी हो गया है" उसने किसी तरह से उठते हुए आदमी को बोला. आदमी उसको सहारा दे कर कार की तरफ ले आया

"काम हो गया"

"हां हो गया. मेरी तबीयत सच में खराब है . तुम पैसे लाए हो?"

"हां कार में पड़े हैं"

"गुड. कॅन यू ड्रॉप मी टू एयरपोर्ट?"

"यॅ श्योर"

दोनो जा कर कार में बैठ गये. पूजा पीछे लेट गयी और पैसों से भरे बॅग को अपने पास रख लिया. अभी वो थोड़ी ही दूर गये थे के आदमी ने कार रोक दी. तभी २ काली गाड़ियाँ भी आ के आदमी की कार के ऑपोसिट रुक गयी जिनमे से ६ लोग गन्स ले कर निकले. "गेट आउट पूजा"

पूजा उठी और उसके समझ में कुछ नही आया. उसकी एनर्जी अभी तक वापस नही आई थी. उसने बॅग पकड़ा और बाहर निकल गयी

"पेपर्स दो पूजा"

"कौन है यह लोग उसने अपने साथी से पूछा?"

"मेरे साथी हैं. पेपर्स दो, यह ९ मिलियन भी दो और चलती बनो अब, नहीं तो तुम्हें यहीं मार के गाढ देंगे हम. तुम क्या सोचती हो कि मेरे से बारगेन कर लोगि? कभी नहीं. मैने एक मिलियन बोला तो बस एक मिलियन ही, ना कम ना ज़्यादा"

"तुम मुझे डबल क्रॉस कर रहे हो ?" हँसते हुए पूजा ने बोला

"हसो मत और पेपर्स और पैसे इधर दो" कहते हुए आदमी ने हाथ आगे बढ़ाया. लेकिन वो जानता नहीं था कि पंगा किस से ले रहा है. पूजा इतनी आराम से हारने वालों में से नही थी.

पूजा ने अपने हाथ का एक इशारा किया और आदमी के कंधे में ज़ोर से दर्द होना शुरू हो गया."मैने बोला था ना , ऐसी हालत करूँगी, के मौत भी नही मिलेगी तुम्हें"

"शूट हर .. शूट हर.. खड़े हुए क्या देख रहे हो" आदमी के ऐसा कहते ही ६ आदमियों ने अपनी बंदूक तान कर पूजा पर गोलियाँ चलाना शुरू कर दिया.

पूजा ने अपनी आँखें बंद कर दी और दोनो हाथ अपनी छाती से सटा लिए. धड़ल्ले से उसपर चलती गोलियाँ, जैसे किसी अदृश्य दीवार से टकराकर रुक रही थी. फिर उसने अपनी आखें खोली जिनमें गुस्सा सॉफ झलक रहा था

"अब जब तुमने इतना देख लिया है तो मैं तुम्हें ज़िंदा नही छोड़ सकती. आइ आम सॉरी" कह कर पूजा ने अपने हाथ धीरे धीरे उपर करने लगी. उसके हाथ उपर करने के साथ ही वो सातों आदमी धीरे धीरे हवा में उठने लगे. फिर हाथ के एक इशारे से उसने उन सातों को खीच के कारो पे मार दिया. वो सभी निढाल हो कर वहीं पस्त हो गये. फिर पूजा धीरे धीरे मेन रोड की तरफ चलती गयी. अभी वो ५ मिनिट दूर ही गयी थी कि उसको एक टॅक्सी मिल गयी. वो उसमें बैठी और एयरपोर्ट के लिए रवाना हो गयी. टॅक्सी में बैठ कर जब वो

थोड़ा दूर पहुँचे, तब उसने अपनी दिमागी शक्ति से उन तीनो गाड़ियों में आग लगा दी. वो आज तक इसी लिए बची हुई थी क्यूंकी उसको कोई अच्छी तरह से नही जानता था. एयरपोर्ट तक जाते हुए वो सोचने लगी कि अपने १० मिलियन कैसे खर्च करेगी और जो डॉक्युमेंट्स उसने चुराए हैं, वो किसको बेचेगी

# ६

"बेटा क्या हुआ" विवेक को दिलजीत को ले कर आते देख उसके बाप ने पूछा

"दिलजीत थोड़ा बाइक से फिसल गया था, कुछ नही हुआ. सब ठीक है" उसने अपने पापा को बोला. "उसके घर पे फोन कर के कह दो प्लीज़ कि आज रात वो हमारे यहाँ रुक रहा है. और बताना मत कि बाइक से फिसला है, नहीं तो हमेशा की तरह उसके पापा मेरी संगत को ही दोष देंगे"

"हां मैं बोल देता हूँ बेटा. वैसे तुम पी के चला रहे थे क्या?"

"हां थोड़ी सी पी थी, पर रोड गीली थी ना इसलिए फिसल गया"

"बहाने मत बनाओ. कितनी बार तुम्हें कहा है कि पी के गाड़ी नही चलानी. सुनता क्यूँ नही है बात को?"

"अर्रे मैं ठीक हूँ, दिलजीत को चोट लगी है. उसके बाप को कहो कि इसको बोले पी के ना चलाने को. मेरे उपर क्यूँ चढ़ते हो"

"चुप कर बेशरम. ऐसे बात करते हैं अपने बाप से?" तभी उसकी माँ बीच में आ गयी. "और यह क्या तमाशा लगाया हुआ है.. हर दूसरे दिन पी के घर आ जाता है... पागल है क्या?"

"अच्छा.. पागल ही पीते हैं क्या?? पापा रोज़ पीते हैं तो क्या वो भी पागल हो गये? सारी दुनिया जो पीती है वो भी पागल है? थोड़ा पी लिया तो क्या गुनाह हो गया... आप ऐसे बोल रही हो जैसे पता नही किसी कि बकरी चुरा के आ गया हूँ मैं... कुछ ज़्यादा नहीं हुआ है."

"तेरे से तो मैं कल निपट ता हूँ विवेक. अभी तू ले जा दिलजीत को. कल देखते हैं" उसका बाप गुस्से से आग बाबूला हो गया.

विवेक दिलजीत को रूम में ले आया. दिलजीत की साँस बिल्कुल ठीक चल रही थी और कहीं से खून भी नहीं बह रहा था. पैर पर थोड़ी बहुत खरोन्चे थी बस. उसको यकीन था कि दिलजीत को तो ज़्यादा कुछ नही हुआ है. पर उसके साथ जो हुआ था, वो यकीन करना

थोड़ा मुश्किल था. इतनी बड़ी गाड़ी, इतनी स्पीड से आती हुई अगर किसी को टकराती तो उसका मारना तो पक्का था. पर ऐसा कैसे हो गया कि विवेक से टकराने के बाद गाड़ी टूट गयी, लेकिन उसको खरॉच तक नही आई. वो लेता हुए यही सोच रहा था, कब उसको नींद आ गयी उसको पता ही नही चला.

सुबह उसकी नींद दिलजीत ने खोली.

"यार पावं बड़ा दर्द कर रहा है. हिलाया भी नहीं जा रहा. लगता है टूट गया है"

"सत्यानाश हो तेरा मनहूस. सुबह सुबह उठा के यह बोल रहा है. कीड़े पड़ेंगे तेरेको बड़े बड़े"

"अबे तू लानत देनी बंद कर. मुझे हॉस्पिटल ले कर जा. मैं बची हुई उमर लन्गडे बापू के नाम से नही पहचाना जाना चाहता"

"अबे पड़ा रह १० मिनिट. टॉयलेट तो हो लूँ. फिर लेकर चलता हूँ. नहीं तो वहाँ तुझे संभालना तो दूर, खुद की नही संभाल पाऊंगा" कहते हुए वो उठा और टॉयलेट चला गया.

जब वो दिलजीत को प्लास्टर लगवा कर, उसको घर छोड़ कर अपने घर पे आया, तो एक और 'एक्सीडेंट' उसका इंतजार कर रहा था.

"विवेक. इधर आ. कहाँ से आ रहा है सुबह सुबह" उसके पापा ने उसको देखते ही पुकारा

"हॉस्पिटल गया था दिलजीत को ले कर. हड्डी टूट गयी है उसकी. फिर घर छोड़ के आया हूँ उसको. आपको क्या हो गया ? सुबह सुबह बवाल क्यूँ कर रहे हो"

"मैने तो कल रात ही बात करनी थी, पर तू हालत मैं नही था. टोरोंटो की यूनिवर्सिटी से चिट्ठी आई है. तेरा वैटलिस्ट कॉनवर्ट हो गया है. ५ दिन में क्लासस स्टार्ट हैं"

"५ दिन में? फिर तो सवाल ही नही उठता पहुँचने का. ५ दिन में फीस का पैसा कैसे जुटाएँगे"

"कल तक मुझे भी ऐसा ही लग रहा था, लेकिन तेरी आय्याशी को देखते हुए मैने डिसाइड कर लिया है कि तू वहाँ जाएगा"

"पर पापा यह नही हो सकता. पैसे कहाँ से आएँगे?"

"पैसे की चिंता तू मत कर. उसका इंतज़ाम हो गया है. पहले तुझे इंग्लेंड जा कर अपने चाचा से मिलना है. वो तुझे सब समझा देंगे. फिर वहाँ से टोरोंटो जाना है"

"पर पापा...."

"पर वर कुछ नहीं. बहुत हो गयी तेरी आय्याशी और मनमानी. जो मैं कहता हूँ चुप चाप कर"

उसने बहुत ना-नुकार करी लेकिन उसकी एक ना चली. घर में फ्लाइट के टिकेट आ गये और आख़िर में विवेक ने भी मन बना लिया जाने का. सब कुछ प्लान के हिसाब से चला. २ दिन में वो इंग्लेंड जा कर अपने चाचा से मिला, उन्होने समझा दिया कि पैसा कॉलेज के अकाउंट में ट्रांसफर हो चुका है. वहाँ से उसने टोरोंटो की फ्लाइट पकड़ी, और निकल लिया अपने डेस्टिनेशन की ओर

# ७

बंधुओ आइए यहाँ दिया के यहाँ क्या हो रहा है ये भी जान लेते हैं

"माँ मुझे यहाँ नही रहना. मैं वापस आ रही हूँ" दिया ने फोन पे कहा

"क्यूँ बेटा? क्या हुआ?" उसकी माँ ने शैतानी में पूछा

"बस मुझे यहाँ नही रहना. मैं वापस घर पे आ रही हूँ"

"अर्रे बेटा क्या हुआ.. कुछ बता तो"

"कुछ बताने को नही है मम्मी"

"आगे की पढ़ाई का क्या करेगी?"

"पापा से बोलो. वो कह रहे थे कि टोरोंटो की एक यूनिवर्सिटी में उनकी जान पहचान है. मैं वहाँ पर पढ़ लूँगी. बस यहाँ से मुझे बाहर निकालो. बहुत गंदी जगह है यह"

"ठीक है बेटा. मैं बात करती हूँ. फिर तुझे वापस कॉल करूँगी"

कल रात का हादसा रह रह के दिया के ज़हेन में कोंध रहा था. वो चाहते हुए भी वो तस्वीरें अपने दिमाग़ से बाहर नही निकाल पा रही थी. रश्मि का उन दोनो लड़कों से सहवास करना, दिया का रेप होना, फिर उसका वहाँ से भागना - यह सारे सीन्स उसके दिमाग़ में मूवी की तरह चल रहे थे. वो अभी तक हैरान थी कि उन २ लड़कों को इतनी ज़ोर का झटका क्यूँ लगा उसको टच करते हुए. उसके मन में सिर्फ़ सवाल ही थे लेकिन जवाब कोई नही था. तभी रश्मि भी उठ गयी.

"अर्रे दिया.. आज तुम इतनी जल्दी कैसे उठ गयी? कल बड़ा मज़ा आया ना. मैं तो चाहती हूँ कि ऐसी पार्टीस बार बार करें हम. अंजान लोगों से सहवास करने का अपना ही अलग मज़ा है"

"खाक मज़ा आया, तुझे पता भी है तू वहाँ क्या कर रही थी? वो लड़के तेरी वीडियो भी उतार रहे थे... और तो और.. उन्होने मेरे साथ...." कहते हुए दिया फिर रोने लगी

"क्या तेरे साथ??"

"रेप किया उन्होने मेरा. और सब तेरे कारण हुआ"

"अर्रे तू तो ऐसे कह रही है जैसे मैने कुछ किया हो तेरे साथ... तुझे कहा किसने था बीच में आने को...."

"मुझसे तेरी हालत नही देखी जा रही थी रश्मि. मैं तुझे बचाने के लिए बीच में आई थी.." सुबक्ते हुए दिया बोली

"रहने दे तू... मुझे पता है कि तेरा भी मूड कर रहा था. और सहवास ही तो किया है उन्होने तेरे साथ.. गोली ले लेना.. इतना बड़ा हव्वा क्यूँ बना रही है?"

"चुप कर रश्मि. ऐसी बात तू सोच भी कैसे सकती है... तेरी वजह से मेरा यह हाल हुआ और तुझे तो कोई फरक ही नही पड़ता.."

"क्या फरक पड़ेगा दिया.. तू ऐसे बोल रही है जैसे तू अभी तक कुँवारी थी.. तूने भी तो अपने बॉयफ्रेंड के साथ खूब ठुकाई मचाई थी.. तब मैं बीच में आई थी क्या... तुझे भी बीच में आने की कोई ज़रूरत नही थी.. ना तू बीच में आती और ना ही तेरा रेप होता... लेकिन तुझे तो हमेशा से ही मेरे कामों में टाँग अडाने की आदत है ना..."

"कितनी बेशरम है तू रश्मि... तू सारा ब्लेम मुझ पर ही डाल रही है..."

"मैं कोई ब्लेम किसी पे नही डाल रही. बस यह कह रही हूँ कि कल रात को भूल जा. और अपनी बाकी की ज़िंदगी आराम से जी."

"ऐसे कैसे भूल जाउ रश्मि... बिल्कुल नही भूल सकती मैं.. मैं वापस इंग्लेंड जा रही हूँ"

"दिया आर यू मॅड? ऐसे कैसे जा सकती हो तुम?? इतनी छोटी सी बात का बतंगड़ मत बनाओ.. हम ने बस सहवास ही किया है, कोई गुनाह नही किया"

"तेरे लिए छोटी सी बात होगी रश्मि, मुझे अपने रोम रोम से घिंन आ रही है... मुझे नही लगता कि मैं वापस वैसी दिया बन पाउंगी... आइ म स्केअर्ड फॉर लाइफ"

"जो तेरे मन में आए, तू कर... मैं कुछ नही बोलूँगी आगे... " कहते हुए रश्मि उठी और बाथरूम में घुस गयी

तभी दिया का फोन वापस बजा, "हां मम्मी"

"बेटा मैने पापा से बात कर ली है. वो करवा देंगे तुम्हारा अड्मिशन. ५ दिन में कॉलेज स्टार्ट है. तुम वहाँ से सीधे टोरोंटो ही चली जाओ"

"नहीं माँ. मैं कुछ दिन के लिए घर आ रही हूँ. आज रात की फ्लाइट की टिकेट मैने बुक कर ली है. वहाँ से ही टोरोंटो चली जाऊंगी"

"ठीक है बेटा, जैसा तू ठीक समझे. पर तू ठीक तो है ना?"

"हाँ माँ. मैं बिल्कुल ठीक हूँ"

दिया ने फोन रखा और जल्दी जल्दी अपनी सारी पॅकिंग करने लगी. वो इस देश में एक पल भी और नही बिताना चाहती थी. यहाँ की हर एक चीज़, बल्कि रश्मि भी, उसको उस हादसे की याद दिला रही थी. यहाँ से दूर रहेगी तो अपने आप सब ज़ख़्म भर जाएँगे. उसने अपनी पॅकिंग करी, कॉलेज के डीन को एक ई-मैल भेजा जिसमें उसने लिखा कि वो किन्ही पर्सनल कारणों से घर जा रही है और शायद वापस कॉलेज ना जॉइन करे और रात होते ही, सबको बाइ कह कर निकल ली इंग्लेंड के लिए. घर पहुँच कर वो बिल्कुल नॉर्मल तरीके से सब से मिली. वो नही चाहती थी कि किसी को भी शक हो कि उसके साथ कुछ बुरा हुआ है. उसने बस अपने घर वालों को यह बोल दिया कि बॉय फ्रेंड का चक्कर है और उसको वो कॉलेज भी पसंद नही है. घर वालों से मिल कर, वो भी टोरोंटो की 'उस' फ्लाइट में सवार हो गयी और निकल पड़ी अपने नये गन्तव्य की ओर - अपनी सारी अच्छी और बुरी यादों को पीछे छोड़.

# ८

पूजा चोर भले ही हो, पर वो पूरी ज़िंदगी चोर रहना नही चाहती थी. उसका हर एक मूव, बहुत कॅल्क्युलेटेड होता था. यहाँ आने से पहले ही उसने टोरोंटो की एक यूनिवर्सिटी में दाखिला ले लिया था अपनी हायर स्टडीस के लिए. यहाँ वो बस इसलिए आई थी ताकि कुछ पैसा इकठ्ठा कर पाए. बाकी लोगों की तरह, उसके सर पर माँ बाप का हाथ ना होने से, उसके पास कोई फाइनांशियल सोर्स नही था. उसके माँ बाप की मौत एक एक्सीडेंट में २ साल पहले हुई थी. पूजा भी कार में ही थी जब कार एक पेट्रोल के टँकर से टकरा गयी. कार ब्लास्ट हो गयी, लेकिन उसका बाल भी बांका नही हुआ था. वो तभी समझ गयी थी कि वो कोई ऑर्डिनरी लड़की नही है.

पिछले २ साल में उसने अपने आप को बहुत अच्छी तरह से जान लिया था. उसके पास इतनी सारी पॉवर कैसे हैं, वो नही जानती थी. उसके लिए बस यही इंपॉर्टेंट था कि उसके पास पॉवर हैं. अपनी हर एक पॉवर को पहचान-ने और उसको पर्फेक्ट करने में उसकी बहुत मेहनत लगती थी. दुनिया के लिए भले ही वो उस एक्सीडेंट में मर गयी हो, पर अंडरवर्ल्ड में उसका नाम बहुत हो गया था. उसने छोटी छोटी चोरियों से शुरू किया अपना खेल और आज १० मिलियन की बाज़ी मार ली थी. उसने आज तक किसी पे अपनी पॉवर ज़ाहिर नही होने दी थी पर आज डबल क्रॉसिंग से सारा खेल बिगड़ गया. उसको उन आदमियों को मार के बिल्कुल अच्छा नही लग रहा था लेकिन उसके पास कोई और चारा भी नही था. अब पैसों से लबालब भरा बॅग उसकी गोद में था और टिकेट उसकी जेब में.

एयरपोर्ट पहुँच कर उसने डिसाइड किया कि वो यह बॅग अपने पास कॅबिन लगेज में ही रखेगी. चेक इन के टाइम उससे बहुत प्राब्लम हुई क्यूंकी इस साइज़ का बॅग कॅबिन में अलोड नही था. बक को लगेज में ना रखने के लिए, उसने एक एक्सट्रा सीट का टिकेट ले लिया. ताकि आराम से रहे. अभी वो अपनी जगह पर बैठी ही थी कि एक लड़का उसके पास आ गया

"मेडम जी यह बॅग आपका है?"

"हां मेरा है"

"इसको कहीं और रखिए ना, सीट बैठने के लिए होती हैं. यह ट्रेन का कॉमपार्टमेंट नही है के सीट पर ही बॅग लाद दिया"

"यह बैग यहीं रहेगा. और तुम थोड़ा तमीज़ से बोलो"

"अर्रे ऐसे कैसे यहाँ रहेगा. यहाँ वाली सीट से मुझे खिड़की नही दिख रही. मैने बाहर देखना है. तुम इस बैग को कहीं और रखो. मैं वहाँ बैठूँगा. या तुम मुझे विंडो सीट दे दो"

"यह बॅग कहीं नही जाएगा. मैने २ सीट के पैसे दिए हैं. मैं भी यहीं रहूंगी और विंडो सीट से नहीं हिलूंगी"

"कमाल है.. २ सीट के पैसे... इतना कितना प्रेम है इस बैग से... चलो विंडो में बारी बारी बैठ जाते हैं"

"अजीब जाहिल किस्म के इंसान है आप. एक बार बोल दिया नही देनी सीट तो क्यूँ पीछे पड़ रहे हो"

"देखिए विवेक नाम है मेरा. प्लेन में दूसरी बार बैठ रहा हूँ. अब थोड़ा आनंद लेना है तो विंडो सीट पे बैठने का मन कर रहा है. तुम क्यूँ इतना अकड़ रही हो... इतनी ज़्यादा ही तमीज़ वाली हो तो वो सीट मुझे दे दो.."

"जस्ट शट अप... डोंट टॉक टू मी"

"रूको मैं ज़रा टीटी को बुलाता हूँ... ही विल डिसाइड. मंज़ूर है"

"अर्रे तुम्हारी अकल में बात क्यूँ नही घुसती... मैं यहाँ से नही हिल रही... और यह टीटी क्या है?? यह ट्रेन नही है"

विवेक ने भी सोचा कि क्यूँ इस पागल लड़की से मथापच्ची करी जाए, भाड़ में जाए यह और इसकी विंडो सीट. तभी फ्लाइट टेक ऑफ कर गयी और विवेक इन-फ्लाइट मूवी में मस्त हो गया. पूजा भी अब थोड़ा रिलॅक्स हो गयी और सोने लग गयी.

# ९

दिया की हालत भी कुछ ज़्यादा अच्छी नही थी. एक तो उसको एमर्जेन्सी रो मिली थी. सोने पे सुहागा तब हुआ जब उसके साथ बैठा बंदा बड बड बोलता जा रहा था.

"जी मुझे आपकी कंपनी, या आपने फ्लाइट में कितनी बार सफ़र किया है उसमें कोई इंटेरेस्ट नही है. आप प्लीज़ मेरे से बात मत करें.नहीं तो मैं कंप्लेन कर दूँगी." जब ५ मिनिट तक वो बंदा नोन स्टॉप बोला तो दिया ने यह कह कर उसे धमकाया. तभी एक हँडसम सा दिखने वाला बंदा आया और विंडो सीट पर बैठ गया. अब वो बला उसके सर पड़ गयी थी और उसके साथ नोन स्टॉप बात कर रही थी. दिया ने अपने आईपेड़ के इयरफोन्स अपनी कान में डाले और शांति से आँखें मूंद के लेट गयी.

पूजा को वहाँ बैठे बड़ा अजीब सा लग रहा था. ऐसी फीलिंग उसको आज तक नही आई थी. एक अजीब सी बेचैनी उसको घेरे हुए थी, ऐसा लग रहा था जैसे आस पास बहुत भीड़ है और वो किसी को पहचान ने की कोशिश कर रही है पर पहचान नही पा रही. उसको लगा कि शायद आज ज़्यादा थकान हो गया है, इसलिए इतनी बेचैनी हो रही है. सारे ख़याल अपने दिमाग़ से निकाल कर, वो भी सोने लगी.

विवेक मज़े से मूवी देख रहा था. देखे भी क्यूँ ना, फ्लाइट के पैसों में इंक्लूडेड जो था. वो इंतजार कर रहा था कि कब कुछ खाने को मिलेगा.. उसको भूख बड़ी लग रही थी. पहले तो उसने सोचा कि अपने समान में पड़े आलू के पराठे निकाल ले, फिर कहा जाने दो, अगर आलू के पराठे देख कर उसको खाना सर्व नही हुआ तो नुकसान हो जाएगा. उसका मस्त टाइम पास हो रहा था कि तभी प्लेन को झटके लगने लगे.

दिया आराम से सो रही थी. तभी उसको वोही ख़याल आने लगे. उसको लगा जैसे उसका रेप हो रहा है. वो हड़बड़ा कर उठी और अपने हाथ सीट पे बने आर्म रेस्ट पर रख दिए. अंजाने में ही उसके हाथों से फिर करेंट निकला और प्लेन ज़ोर ज़ोर से हिलने लगा. वो बहुत डर गयी. तभी अनाउन्स्मेंट हुआ कि टर्ब्युलेन्स बढ़ जाने के कारण ऐसा हुआ है. उसकी जान में जान आई, लेकिन तभी उसने देखा कि प्लेन में धुआ भर रहा है. डर के मारे उसने पीछे देखा तो वहाँ आग लग रही थी. थोड़ी ही देर में एक लाइटनिंग बोल्ट प्लेन से टकराया और प्लेन के २ टुकड़े हो गये.

उड़ते उड़ते अचानक से ही प्रतिक के सामने से एक लड़की चीखती हुई नीचे गिरी. प्रतिक को पता नही क्या सूझी, उसने भी डाइव मार दी. उसकी स्विम्मिंग की ट्रैनिंग थोड़ी बहुत काम आ रही थी. थोड़ी ही देर में उसने उस लड़की को पक्कड़ लिया. वो लड़की बहुत डरी हुई थी और थोड़ी ही देर में बेहोश हो गयी. प्रतिक को लगा कि उसको ज़्यादा देर संभालना थोड़ा मुश्किल होगा और वो किसी तरह से हाथ पैर मारता हुआ नीचे आने की कोशिश करने लगा.

उधर प्लेन में विवेक की भी हालत खराब हो रही थी. इतना धुआँ हो गया था अंदर के उसको आगे का द्वार, मध्य द्वार वगेरह कुछ याद नही आ रहा था कि कहाँ है. रह रह के हरिद्वार दिमाग़ में आता था... उसको यकीन था कि उसने अपने पाप धो लिए हैं और आज नही मरेगा. तभी एक ज़ोर से धमाका हुआ और विवेक मियाँ भी प्लेन के बाहर हो गये. अब उसको अपनी मौत बहुत करीब से दिख रही थी और दुख हो रहा था कि उसने वो आलू के पराठे नही खाए मरने से पहले. अब बस उसने आँखें बंद कर ली और अपने भगवान को याद करने लगा.

पूजा को भी समझ नही आ रहा था कि क्या करे.. उसे डर था कि उसका पैसों से भरा बॅग ना गिर जाए या खुल जाए, उसको यकीन नही था कि वो बच जाएगी, लेकिन अगर बचती है तो उसको अपने साथ वो बॅग ज़रूरी चाहिए था. इतना पैसा वो ऐसे नही छोड़ सकती थी. नीचे गिरते हुए उसने देखा कि उसके साथ बैठा इरिटेटिंग लड़का भी कलाबाज़ियाँ खाते हुए नीचे गिर रहा है. नीचे थोड़ी सी दूर एक नदी बह रही थी. पूजा ने सोच लिया कि यह बैग उस लड़के को पकड़ा के, वो अपनी सारी पॉवर से उस नदी की तरफ होने की कोशिश करेगी. उसने अपनी दिमागी शक्ति से विवेक को अपने पास खीचा और उस से चिपट गयी.

"भगवान तुमने मेरी सुन ली. बचा लिया मुझे" विवेक ने आँखें बंद में ही मन ही मन बोला

"अबे सुन. कोई भगवान नही है यह. यह बॅग पक्कड़. और चुप चाप मुझ से लिपटा रह"

"अर्रे खिड़की वाली मेडम आप... आप मेरे मन की आवाज़ कैसे सुन रही है.. कहीं आप ही भगवान तो नहीं"

'शट अप और जैसा मैं कहती हूँ वैसा ही कर" कहकर उसने वो बॅग उसके हाथों में थमा दिया. विवेक बॅग पकड़ के पूरी तरह से उस लड़की से चिपट गया. पता नहीं क्यूँ, इस हालत में भी उसका एरेक्षन हो गया. ज़िंदगी तो पता नही अब मिलेगी या नहीं, जो पल हैं, उसी में खुश रहो सोच के वो उस लड़की की मदहोश ज़ुल्फो में खो गया.

पूजा कितनी भी कोशिश कर ले, अपनी डायरेक्शन चेंज नही कर पा रही थी. उपर से विवेक की गरम साँसें उसका कॉन्सेंट्रेशन और बिगाड़ रही तही. तभी उसकी कॉन्सेंट्रेशन बिगड़ी और विवेक का भी हाथ फिसल गया. विवेक नीचे खिचने लगा तो उसने बॅग को और ज़ोर से पक्कड़ लिया. जब पूजा ने देखा कि विवेक गिर रहा है तो उसने भी एक तरफ से बॅग को पकड़ लिया. अब विवेक और पूजा सिर्फ़ उस बॅग के ज़रिए ही आपस में उलझे हुए थे.

"बॅग छोड़ दे. तू गिर रहा है"

"अर्रे गिरना तो है ही अगर बॅग छोड़ू या पकड़ू, तो फिर बॅग पक्कड़ के ही रखता हूँ, साथ में मरेंगे तो अगले जनम में भी हमारा बंधन बना रहेगा" वो तपाक से बोला

अब पूजा के पास कोई चारा नही था, उसको ना सिर्फ़ खुद को बचना था, पर अपने बॅग की भी ठीक तरह से रखवाली करनी थी. उपर से ज़मीन उसकी तरफ तेज़ी से आ रही थी. गिरने वाली जगह को उसने ध्यान से देखा तो पाया कि वहाँ पे बहुत मोटे मोटे पेड़ हैं. अगर पूजा अपनी पॉवर का इस्तेमाल करके एक पेड़ से चिपक जाती है, तो लड़का तो नीचे गिरके मरेगा, लेकिन वो अपना बॅग छोड़ सकती है. जब उसकी स्पीड ब्रेक हो जाए, तो वो अपना बॅग नीचे से उठा सकती है. उसको यह प्लान बहुत अच्छा लगा और वो अपनी सारी कॉन्सेंट्रेशन एक पेड़ पे लगाने लगी. चन्द ही पलों में पेड़ बहुत करीब आ गये थे. लेकिन इससे पहले कि पूजा बॅग को छोड़ती, विवेक ने बॅग छोड़ दिया और वो धम्म से पेड़ की शाखाओ में उलझ गया और टकराते हुए नीचे गिरा और थोड़ा सा ज़मीन में धँस गया. वहीं पूजा पेड़ से छिपकली की तरह चिपक गयी लेकिन ज़्यादा देर तक नही चिपकी रह सकी. वो बहुत वीक हो गयी थी और धम्म से नीचे गिरी. लेकिन तब तक उसकी सारी वेलोसिटी निल हो चुकी थी और उसको गिरने से ज़्यादा चोट नही लगी, लेकिन उसमें हिलने की हिम्मत नही थी.

दूसरी तरफ प्रतिक को ज़्यादा परेशानी नही हुई. उसने पहले ही डिसाइड कर लिया था कि वो पानी में ही गिरेगा ताकि लँडिंग सेफ रहे. उस लड़की को ज़ोर से पकड़ कर वो छप्पक से

पानी में गिरा और काफ़ी अंदर तक चला गया. तभी दिया की भी बेहोशी टूटी और अपने चारों ओर पानी देख के वो घबरा गयी और साँस ले लिया. साँस लेते ही सारा पानी उसके अंदर चला गया. यह चीज़ प्रतिक ने देख ली थी. फॉर्चुनेट्ली वो लोग किनारे के काफ़ी करीब थे. प्रतिक ने जल्दी से दिया को पानी की सतह से उपर किया और उसे ले कर, स्विम करता हुआ किनारे पर आ गया. किनारे पर आ कर उसने जल्दी से दिया को थोड़ा माउथ टू माउथ दिया और उसकी छाती दबाई जिससे सारा पानी बाहर आ गया. दिया थोड़ा खाँसी और फिर करवट ले कर लेट गयी. प्रतिक भी बहुत ठक गया था और वो भी वहीं पर लेट गया. अब चारों लोग एक दूसरे के आसपास थे और पस्त हुए पड़े थे. कोई बेहोश था तो कोई सो रहा था. किसी का भी दिमाग़ अभी कुछ सोचने की हालत में नही था.

# १०

आज रेगिस्तान के उस टीले के अंदर बहुत हलचल थी. इस प्लेन एक्सीडेंट ने सबकुछ चौपट कर दिया था. चंद्रशेखर का सारा प्लान, उसकी सारी मेहनत उसको मिट्टी में मिलती दिखाई दे रही थी.

"चंद्रशेखर मैं तो सोचती हूँ कि उन लोगों को बता देना चाहिए असलियत" उसकी साथी अरुणा ने बोला.

"अरुणा मेरी इतने साल की मेहनत पर पानी फिर जाएगा. मैं चाहता हूँ कि इन लोगों को नॅचुरल तरीके से पॉवर डेवेलपमेंट होते देखूं तभी इनके अंदर वो टोज़िन्स आएँगे जिनको मैं स्टडी करना चाहता हूँ"

"चंद्रशेखर लेकिन इतने बड़े प्लेन क्रॅश में, जब सिर्फ़ यह चार ही बचे रहेंगे, तो इनको शक तो होगा ही कि ऐसा क्यूँ है. अगर इन्होने किसी तरह से वो ट्रॅकिंग चिप अपने अंदर से निकाल दी, तो उसके बाद हम कभी फिर इनको नही ढूँढ पाएँगे कुछ तो सोचो तुम"

"अरुणा मैने सब सोच लिया है. तुम बस उस मशीन को हेलिकॉप्टर में डालो और मेरे साथ चलो. इस इन्सिडेंट की सारी मेमोरीस हमे उनके दिमाग़ से निकालनी होंगी"

"कमऑन चंद्रशेखर, यू मस्ट बी जोकिंग. तुम्हें पता है कि वो मशीन पूरी तरह से तैयार नही है"

"अरुणा आइ आम रेडी टू टेक दट चान्स. वैसे भी हमारी वजह से ही आज उनकी जान सलामत है, नही तो मर गये होते अभी तक. हम जो चाहे उनके साथ कर सकते हैं"

"चंद्रशेखर भगवान बनने की कोशिश मत करो"

"अरुणा जैसे कहा है, वैसा करो. दिस ईज़ अन ऑर्डर" कहते हुए उसने अरुणा को वहाँ से भेजा. "जस्टिन, इन तीनो लड़कों के पेरेंट्स को फोन कर के बोल दो कि लड़के सेफ हैं और कभी भी वो लोग इस इन्सिडेंट के बारे में बात ना करें इनसे. मैं प्लेन कंपनी को फोन कर के

पॅसेंजर लिस्ट से इन चारों का नाम हटवाता हूँ. डू इट क्विक्ली आंड कम वित मी. वी हॅव टू डू सम इंपॉर्टेंट वर्क वित दोज़ फोर"

"हरी अप एवेरिबडी. बिल्कुल समय नही है वेस्ट करने को. सोनाली, तुम पूजा को संभालो. एरिका टेक दिया, केविन टेक विवेक और जस्टिन प्रतिक ईज़ युवर रेपोंसिबिलिटी. टी माइनस ३० मिनिट्स एवेरिवन. ३० मिनिट्स में सारे ऑपरेशान ख़तम होना चाहिए. सब को हल्का अनेस्तीसिया दो जिससे इनकी नींद ना टूटे. भारी नही. आइ वान्ट देम अप इन १ अवर. डॉक्टर डू आ क्विक हेल्त चेक. देखो किस की बॉडी में क्या चोट है. ट्रेगो तुम मशीन तैयार करो" चंद्रशेखर एक मिलिटरी कमँडर की तरह धडाधड ऑर्डर दे रहा था. उसकी टीम बिल्कुल मेटिक्युलसली हर एक टास्क कर रही थी. चंद्रशेखर को पता था कि अभी १० मिनिट का समय है, जब वो चारों तैयार होंगे. तब तक वो साइड पे हो लिया.

दिन की शुरुआत में चंद्रशेखर बहुत खुश था. उस का काम बहुत आसान हो गया था. चारों सब्जेक्ट्स सेम जगह पर जा रहे थे जहाँ पे उनको अब्ज़र्व करना बहुत ही आसान हो जाएगा. उसका प्लान आखरी स्टेज पर था. जल्द ही वो समझ जाएगा इन चारों के शरीर में कितने बदलाव आए हैं और उनके कारण क्या क्या फायदा हो सकता है. एक चीज़ जो उसे बहुत एक्साइट कर रही थी वो यह थी के वो चारों बचपन से ले कर अब तक किसी भी बीमारी के शिकार नही हुए थे. तो यह तो पक्का हो गया था कि चंद्रशेखर के पास इस दुनिया को बीमारी मुक्त करने का फ़ॉर्मूला था जिसको बस अब थोड़ा तैयार करना था. लहरों को देखते हुए वो सोचने लगा कि जिस तरह लहरों को पता नही होता कि अगले पल वो कहाँ होंगी, उसी तरह से इंसान को भी पता नही होता कि अगले पल उसके साथ क्या होने वाला है.

उसकी सारी एक्साइट्मेंट उस समय मर गयी थी जब उसको पता चला कि चारों जिस प्लेन में जा रहे हैं, उस का एक्सीडेंट हो गया है. उसको अपनी पिछली बहुत साल की मेहनत मिट्टी में मिलती दिखाई दे रही थी. लॅब में भी मातम सा माहौल छा गया था कुछ पल के लिए. फिर जस्टिन के ट्रॅकर से पता चला कि चारों सब्जेक्ट्स ज़िंदा है. यह खबर सुनके उसे बहुत खुशी होनी चाहिए थी लेकिन हुई नहीं. रह रह के चंद्रशेखर के मन में यह ख़याल आता कि उसने इन ४ लोगों को क्या बना दिया है... ना इनको बीमारी होती है और ना यह मरते हैं. लेकिन इस बारे में ज़्यादा सोचा नहीं था उसने. पहली प्राइयारिटी थी कि इन सब लोगों को वापस नॉर्मल किया जाए ताकि इनकी एवोल्यूशन स्टडी करी जा सके.

"सर, एवेरिवन ईज़ रेडी. वेटिंग फॉर फर्दर इंस्ट्रक्शन" एक क्र्यू मेंबर ने बोला तो चंद्रशेखर की ख्याली ट्रेन रुकी. वो फटाफट से उस जगह पहुँचा जहाँ सारे मॉनिटर्स वगेरह लगे हुए थे.

"गुड. चारों कनेक्टेड हैं... यस.... अब दोस्तों जो हम अभी करने जा रहे हैं, वो पहली बार हो रहा है. इस मशीन का इस्तेमाल आज तक नही हुआ है और शायद यह ठीक से तैयार भी नही है. लेकिन हमारी कम से कम २० साल की मेहनत का फल आज इस मशीन पे डिपेंड करता है. इसको यूज़ करने से पहले मैं सब से सहमति लेना चाहता हूँ. यह मशीन इन चारों को मार भी सकती है, बट सीयिंग दा कटॅस्ट्रफी दीज़ पीपल हॅव सर्वाइव्ड, आइ डाउट इट. इस मशीन से इनको कितना डॅमेज होगा, पता नही.बस इतना पता है. मशीन यूज़ नही करी तो शायद इनको प्यारालाइज करके लॅब में ही रखना पड़े इनको स्टडी करने के लिए. मैं चाहता हूँ कि आप सब में से अगर कोई अभी भी ऐसा सोचता है हमे यह मशीन यूज़ नही करनी चाहिए, अपना हाथ खड़ा कर दे"

अब उसका आर्ग्युमेंट तो ज़ोरदार था और ऑडियेन्स भी सारी साइंटिस्ट. उसे ज़्यादा आश्चर्य नही हुआ जब किसी का हाथ खड़ा नही हुआ. मशीन का एक्सपेरिमेंटेशन कभी ना कभी तो करना ही था, सब यह ही सोच रहे थे कि इस से अच्छा मौका नही मिलेगा. "देन लेट्स गो पीपल. वी हॅव मोर हिस्टरी टू क्रियेट" कहता हुआ वो मैन कंप्यूटर के पास आ गया. "केविन इन सब के दिमाग़ के उस हिस्से पे अटॅक करो जहाँ रीसेंट मेमोरीस होती हैं आंड वाइप दा लास्ट १ अवर क्लीन" उसने कहा और केविन डाइयल्स से खेला और धीरे से एक बटन दबा दिया जिससे उन चारों के शरीर में एक करेंट दौड़ने लगा.

१५ मिनिट बाद सारा काम ख़तम हो गया था. "सर वी हॅव डन और बेस्ट. रिज़ल्ट तभी दिखेगा जब यह जाग जाएँगे." केविन बोला.

"एक्सलेंट वर्क गाइस. अब इन चारों को एक्सट्रा हेलिकॉप्टर में रखो और यह सारा एक्विपमेंट वापस पॅक करो मैं हेलिकॉप्टर में. अरुणा तुम मेरे साथ रहोगी एक पाइलट के साथ. एवेरिवन एल्स विल रिटर्न टू दा बेस विथ दा एक्विपमेंट्स. सब बस यह दुआ करो कि हमारा एक्सपेरिमेंट सफल हो जाए" उसने कहा और फिर अरुणा के साथ साइड में हो गया.

"आगे का क्या इरादा है चंद्रशेखर?" अरुणा ने उनसे पूछा.

"वी विल टेक देम टू टोरोंटो. रास्ते में कोई स्टोरी सुना देंगे इनको के यह कैसे बच गये. सब कुछ ठीक हुआ यह लोग फिर से अपना जीवन ठीक से शुरू कर सकेंगे"

"स्टोरी सुना देंगे??? चंद्रशेखर कमऑन... क्या कहोगे इनको... कैसे यकीन दिलाओगे इन्हे इस 'लक' पे... कम से कम १५० लोग मरे हैं. और सिर्फ़ यह ४ ही बचेंगे शायद"

"ह्म्म.. लक ईज़ गुड वर्ड. हम इनको बोलेंगे कि दीज़ वर फोर लकी पीपल, जिनको हमारे साथ हेलिकॉप्टर में जाने का चान्स मिला था. एर प्रेशर कम होने से इनकी तबीयत खराब हो गयी थी आंड वी हॅड टू गिव देम सम स्लीपिंग सीरम. यह लोग उठेंगे तो कन्फ्यूज़्ड होंगे, काम बन जाएगा"

"मुझे इतना आसान नही लगता, पर तुमने सोच ही लिया है तो ठीक है. लेट्स सी व्हाट हॅपन्स"

"...अनफॉर्चुनेट्ली तुम्हारा बॅगेज उसी प्लेन में था और नही बच पाया" चंद्रशेखर ने हेलिकॉप्टर में टोरोंटो की तरफ जाते हुए प्लान के हिसाब से सब कुछ उन्हे बोल दिया. देखने में लग नही रहा था कि उनके उपर कोई साइड एफेक्ट है. कोई बात उन्हें याद नही थी जर्नी की,और सारे वाइटल्स भी ठीक थे.

"सर आप लगेज की बात कर रहे हो, यहाँ अभी भी गोटियाँ मूह में आई हुई हैं. पता नही क्यूँ दिल दहेल रहा है और नितंब फट के चार हुई पड़ी है" विवेक ने टनटन बोल दिया और फिर रीयलाइज़ किया कि उनके साथ तीन लड़कियाँ भी है जो उसको घूर रही थी. "ऐसे मत देखो मुझे. तुम्हारी नही फटती होगी, मैं तो अभी तक काप रहा हूँ. सर यह कैसा हेलिकॉप्टर है जिसमें इतनी जगह है. खिड़कियाँ भी इतनी सारी है. यह तो बिल्कुल प्लेन जैसा ही लगता है. मेडम मुझे खिड़की वाली जगह मिलेगी?" वो पूजा के पास जा कर बोला

"मेरा सर बहुत दुख रहा है. प्लीज़ परेशान मत करो और जा कर अपनी जगह पर बैठ जाओ. मैं यहाँ से नही हिलूंगी' कहते हुए उसने अपना बॅग और ज़ोर से पकड़ लिया

"अर्रे कोई ग़रीब को खिड़की वाली सीट दे दो... दूसरी बार का हवाई सफ़र है" विवेक ज़ोर से चिल्लाया

"तुम यह वाली सीट ले लो" दिया ने बोला

"कितनी अच्छी हो तुम मेडम. थँक्स फॉर द विंडो. मैं दुआ करता हूँ कि आपका सारा सामान बिल्कुल सुरक्षित मिल जाए" उसने दिया को मुस्कुराते हुए बोला और पूजा को घूरने लगा. दिया भी थोड़ा सा मुस्कुराइ और अपनी जगह विवेक को दे दी.

प्रतिक एक कोने में बैठा कुछ गहरी सोच में डूबा हुआ था. पता नही क्यूँ उसको चंद्रशेखर की बात का भरोसा नही हो रहा था. वो बहुत ज़ोर डाल रहा था अपने दिमाग़ पर लेकिन उसको कुछ याद नही आ रहा था. बस एक विचार ही दिमाग़ में आ रहा था कि वो उड़ सकता है और कुछ देर पहले उड़ रहा था. आख़िर में थक कर उसने हार मान ली. शायद उनको बेहोश करने के लिए जो दवाइयाँ दी गयी थी, उनका असर था कि उसको ऐसा लग रहा था. वो बस इंतेज़ार करने लगा कि कब टोरोंटो आए, और वो अपने कॉलेज के कँपस में दाखिल हुए.

विवेक खिड़की से बाहर झाँक के खूब खुश हो रहा था. वो अपने आस पास के लोगों को बिल्कुल ही इग्नोर कर रहा था

"कुछ पूछ रहा है चंद्रशेखर" जब साथ बैठी दिया ने उसको कुहनी मारी तो उसको ध्यान आया कि प्लेन में और भी लोग हैं

"उहह हां .. बोलिए सर"

"एक तो सर कहना बंद करो मुझे"

"तो क्या फिर अंकल कहें?? उमर में इतने बड़े हो, मुझे लगता है वी वर नोट ईवन इन लिक्विड फॉर्म, व्हेन यू वर इन फुल फॉर्म" उसके यह कहते ही सब लोग ज़ोर ज़ोर से हँसने लगे. चंद्रशेखर गुस्से में लाल हो गया. उसके आगे ऐसा मज़ाक आज तक किसी ने नही किया था.

"जो कहना है कहो"

# INDIAN BEST TELEGRAM ADULT (18 ) CHANNELS

## हिंदी Adult स्टोरी, Adult कॉमिक्स, सबसे अनूठे देसी मस्ती भरे XXX वीडियोज, हिंदी एडल्ट शायरिया, फन्नी एडल्ट जोक्स का अनूठा संगम..!! 🔞💯

(*Top To Click Here Join*)

**X Night Clubs**

*Click Here*

**Adult Comics Club**

*Click Here*

**Adult Shayari & Stories**

*Click Here*

**Night Club Chat Group**

*Click Here*

**18 Vargin Girls**

*Click Here*

"अभी तो आप कुछ कह रहे थे सर"

"हां. मैं पूछ रहा था कि अपना इंट्रोडक्शन तो दे दो सब. हमें तो बस तुम्हारे नामों के सिवा कुछ नही पता"

"क्यूँ नही जी.. बंदे को प्यार से विवेक कहते हैं. वैसे मैं हूँ ही इतना प्यारा कि लोग और किसी नाम से बुलाते ही नही हैं" उसने दिया को कुहनी मारी और हँसने लगा. ना जाने क्यूँ उसको दिया में बहुत इंटेरेस्ट आ रहा था. "पापा बिजनेस करते हैं, मैं पढ़ने के लिए टोरोंटो जा रहा हूँ. वैटलिस्टेड अड्मिशन था. वो शायद एंट्रेन्स एसी में कुछ गड़बड़ी हो गयी थी. दिलजीत ने थोड़ा पी के लिखा था मेरे लिए और मैने भी वैसे ही छाप दिया था. दिलजीत मेरा बचपन का यार है. हमारे पापा साथ ही बिजनेस करते हैं. मूड तो उसका भी बड़ा था कॅनडा आनेका पर उसकी माँ थोड़ी सेंटी है, उसने फॉर्म भी भरने नही दिया था. आप मानोगे नहीं, पिछले महीने जब....."

"बस बस. अपने बारे में बताने को कहा था, दोस्तों के बारे में नही" दिया हँसते हुए बोली

"जी वो तुम कहती हो तो चुप हो जाता हूँ. लेकिन अगर तुमने उसका पिछले महीने वाला ट्रॅक्टर का किस्सा सुन लिया तो हँसते हँसते दम निकल जाएगा.. हुआ क्या कि हम ने लल्लन के खेत से रात को ट्रॅक्टर उठा लिया.. लल्लन पास में ही रहता है हमारे, जवार की खेती करता है.."

"अर्रे तुम फिर रेडियो की तरह शुरू हो गये.. बस करो अब" जब फिर से दिया ने कहा तो विवेक चुप हो गया और उसकी तरफ टकटकी बाँध के देखने लगा. देखने में वो कुछ ज़्यादा सुंदर नही थी. पर उसकी आँखों में डूबने का दिल कर रहा था. रह रह के उसकी नज़र दिया की छाती पर जाती. उसके वक्ष कुछ ज़्यादा ही "हेल्ती" थे और विवेक का मन उनको छूने का कर रहा था.

"मेरा नाम दिया है. मेरे पेरेंट्स टोरोंटो में ही रहते हैं."

"विवेक आवाज़ उपर से निकल रही है, वहाँ से नही" विवेक को अपनी छाती की तरफ घूरता देख उसने उससे टोका.

विवेक झेंप गया और इधर उधर देखने लग गया.

"मैं भी टोरोंटो पढ़ने जा रही हूँ"

"अर्रे यह तो बहुत बढ़िया बात है. लगता है भगवान ने हमे यहाँ मिलाया है. हमारी दोस्ती बहुत लंबी चलने वाली है. साथ ही पढ़ा करेंगे" विवेक फिर शुरू हुआ

"टोरोंटो में एक ही कॉलेज नही है. बहुत हैं"

"अच्छा कौन से कॉलेज में हो तुम?"

"क्यूँ बताऊं?"

"मेडम.. इतना घमंड भी ठीक नही है.. वो तो यहाँ थोड़ा कंट्रोल कर रहा हूँ, वरना बहुत लड़कियाँ मरती है नाचीज़ पर. एक इशारा कर दूं तो ३-४ को ज़मीन पे लेटा दूं. ज़मीन से याद आया, वो ट्रॅक्टर वाला किस्सा तो रह गया"

"नहीं सुनना मुझे ट्रॅक्टर वाला किस्सा. प्लीज़.. चुप रहो" दिया को पता नहीं क्यूँ, थोड़ा मज़ा आ रहा था. पहली बार ज़िंदगी में उसके साथ कोई इतनी ओपन्ली फ्लर्ट कर रहा था, पर वो यह ज़ाहिर नही होने देना चाहती थी

"अच्छा तो चलो कॉलेज का नाम ही बता दो"

"तुमने ही कहा था ना कि भगवान ने मिलाया है हमें, तो चलो टेस्ट कर लेते हैं. भगवान ने चाहा तो फिर मुलाक़ात होगी टोरोंटो में"

"अर्रे यार भगवान का टेस्ट... चलो यह भी कर के देख लेंगे. अगर मुलाक़ात हुई तो फिर कॉफी पीने चलना पड़ेगा मेरे साथ. बोलो मंज़ूर है"

"मंज़ूर है"

"तो फिर आओ झप्पी पा लो" कहते हुए उसने ज़ोर से दिया को हग कर लिया. उसके बूब्स को अपनी छाती से स्पर्श कर के ही उसको चैन आया. उसने एक बात नोटीस करी कि हर पल के साथ, दिया और खूबसूरत होती जा रही थी.

"आप दोनो का ख़तम हो गया हो तो आगे शुरू करें?" अरुणा बोली

"लो कर लो बात. आप लोग हमारी पर्सनल बातें सुन रहे थे? शरम नही आती" विवेक ने हँसते हुए कहा "चलो खिड़की वाली मेडम से पूछते हैं. मेडम आप भी कुछ बताओ अपने बारे में"

"मेरा नाम पूजा है. बचपन में माँ बाप का देहांत हो गया था एक्सीडेंट में. टोरोंटो मैं भी पढ़ने के लिए जा रही हूँ" पूजा ने एक साँस में जवाब दिया. उसको इस इंट्रोडक्शन में कोई इंटेरेस्ट नही था.

"मेडम उस बॅग में ऐसा क्या है.. तब से उसको अपने साथ सटा के बैठी हो.." विवेक फिर बोला

"तुमसे मतलब? अपने काम से काम रखो..." पूजा उसे घूरते हुए बोली..

"हां मुझे तो कोई मतलब नही है. बस यह उम्मीद करता हूँ कि हम दोनो एक कॉलेज में ना हो... और आप भाई साब... आप भी शकल से इंडियन ही लगते हैं... टोरोंटो पढ़ाई के लिए?"

"हां.. प्रतिक.. प्रतिक नाम है मेरा. मेरे मम्मी पापा का भी बिजनेस है. पढ़ के जाऊंगा और बिजनेस को संभालूँगा. पहली बार इंग्लेंड से बाहर निकला हूँ. पला बढ़ा इंग्लेंड में ही हूँ."

"चलो हो गया इंट्रो सब का. अब कुछ खाने को दे दो. बहुत भूख लग रही है" विवेक ने चंद्रशेखर को बोला

"ओह सॉरी.. मुझे नहीं लगता कि यहाँ कुछ खाने को है.. देखता हूँ"

"यार कमाल करते हो आप.. ७ घंटे की फ्लाइट है और कुछ खाने को नही है, मैं तो पागल हो जाऊंगा. मेडम आपके बॅग में कुछ है क्या?"

पूजा ने फिर उसकी तरफ घूरा और कुछ नही बोली

"चंद्रशेखर देखो मेरे बॅग में कुछ सँड्विचस होंगे. वो दे दो" अरुणा पहले ही सारे साइंटिस्ट्स के लिए सँड्विचस बना के लाई थी, लेकिन टाइम कम होने के कारण किसी ने खाए नहीं.

"यह हुई ना बात. चिकन वाले हैं क्या?" विवेक बोला

"नहीं.. वेज है विवेक"

"अर्रे यार.. चलो वो ही आने दो.. अब कुछ तो खाना ही है" तभी चंद्रशेखर सँड्विचस ले कर आ गया. और बाँटने लगा. विवेक का नंबर तीसरा आया

"एक और मिलेगा.. थोड़े छोटे हैं" उसने चंद्रशेखर से बोला और एक और ले लिया

"नहीं जी मुझे नहीं चाहिए. आइ आम नोट हंग्री" जब चंद्रशेखर ने दिया के पास सँडविच किया तो वो बोली.

"अर्रे भूख कैसे नहीं है... सर आप रखो यहाँ.. मुझे पता है इसको अभी भूख लगेगी" कहते हुए विवेक ने सँडविच ले कर दिया के हाथ में थमा दिया और अपने वाले खाने लगा. "सो गयी क्या दिया?" ५ मिनिट बाद उसने पूछा. बाकी लोग भी सो गये थे

"ह्म.. अभी सोई ही थी. बोलो क्या हुआ"

"मैं कह रहा था कि नही खाना तो ज़बरदस्ती नही हैं, मैं खा लूँ?"

"अर्रे खा ले.. यह ले.. ठूंस ले" दिया ने हँसते हुए उसे सँडविच पकड़ा दिया जिसे वो ३ बाइट में हड़प कर गया.

उसने फिर थोड़ी देर बाहर देखा कि उसको अपने कंधे पर कुछ महसूस हुआ. मूड कर देखा तो दिया का सर था. वो मन ही मन बहुत खुश हुआ. दिया के चेहरे से उसकी नज़र नही हट रही थी. एक पोयम की तरह उसका चेहरा विवेक के दिमाग़ में घूम रहा था. अपने कंधे को और थोड़ा ढीला करके विवेक ने भी अपनी आखें बंद कर ली और दिया के सपनों में खो गया

"एवेरिवन प्लीज़ गेट अप. वी हॅव रीच्ड" अरुणा की आवाज़ सुनते ही सब उठ गये. नींद से अभी भी उनका बुरा हाल था. शायद दवाई का असर अभी तक था. सब लोगों ने सेफ्टी बेल्ट लगा ली और डिसेंट का इंतेज़ार करने लगे. प्रतिक और पूजा अभी भी चुप थे, विवेक सिर्फ़ दिया के बारे में सोच रहा था और दिया अपने पेरेंट्स से मिलने के लिए बेताब हो रही थी. हेलिकॉप्टर लँड हुआ और उसके ब्लेड्स बंद होते ही चंद्रशेखर ने दरवाज़ा खोल दिया.

"थँक यू चंद्रशेखर" सब जाते हुए उसको बोल के गये

"हमारी जान बचाने का धन्यवाद. यह एहसान मैं ज़िंदगी भर नही भूलूंगा" प्रतिक ने कहा और वो भी उतर गया.

चंद्रशेखर और अरुणा ने भी डिसाइड किया कि आज रात टोरोंटो में ही रुका जाए और सुबह होते ही वो वापस चले जाएँगे अपने बसे में.

# ११

विवेक, दिया, पूजा और प्रतिक ने अलग अलग कॅब्स करी और वो भी चले गये. दिया अपने घर गयी, विवेक और प्रतिक हॉस्टिल और पूजा ने सोचा कि थोड़ा शहर घूम ले, फिर हॉस्टिल चली जाएगी. चारों में से किसी को नही पता था कि बाकी कहाँ जा रहे हैं. विवेक और दिया के सिवा कोई आपस में मिलना भी नही चाहता था. प्रतिक और विवेक दोनो अलग अलग हॉस्टिल पहुँचे और फॉरमॅलिटीस पूरी कर के अपने इंडिविजुयल रूम्स में चले गये. उसके बाद दोनो ने अपने घरों पे फोन किया और बता दिया कि वो लोग पहुँच गये हैं. चंद्रशेखर ने उनको बताया था कि हेलिकॉप्टर में चढ़ने से पहले चारों ने अपने घर फोन कर दिया था कि वो हेलिकॉप्टर से जा रहे हैं, इसलिए उन्हे कोई टेंशन नही थी पेरेंट्स को इनफॉर्म करने की. दोनो ने थोड़ा रिलॅक्स किया और फिर कपड़े वगेरह खरीदने के लिए मार्केट चले गये.

जब वापस आए तो देखा कि नोटीस बोर्ड पे एक बहुत बड़ा नोटीस लगा हुआ है "स्पेशल पार्टी टुनाइट अट दा कामन रूम्स फॉर ऑल दा न्यू ज़ोइनीस बाइ दा सीनियर्स. प्लीज़ कम". विवेक वो पढ़ के खूब खुश हुआ. "आते ही फ्री की दारू मिलेगी शायद. मज़ा आएगा" उसने सोचा और अपने रूम में चला गया. उसको पता था कि पार्टीस में हमेशा लेट ही जाना ठीक होता है क्यूंकी समय पर कोई नहीं पहुँचता. लेकिन जब वो पहुँचा तो कामन रूम खचाखच भरा हुआ था लोगों से. खाने का अलग काउंटर था और दारू का अलग. वो सोच ही रहा था कि कहाँ से शुरू करे के उसको पूजा दिख गयी.

"सो वी मीट अगेन... बाकी लोग भी हैं क्या... टोरोंटो में इतने ज़्यादा भी कॉलेजस नही है मतलब"

"ओह्ह नो.. नोट यू अगेन... पूरे ३ साल झेलना पड़ेगा क्या तुम्हें" पूजा खिज कर बोली

"मुझे लोग झेलते नहीं, मेरा इंतेज़ार करते हैं. और ज़्यादा भाव मत बढ़ाओ अपने, मुझे कोई इंटेरेस्ट नही है तुम में. बस एक पहचाना चेहरा देखा तो आ गया"

"तुम अपने आप को बहुत कूल समझते हो ना..."

"इसमें समझने की क्या बात है.. मैं तो हूँ ही कूल.. कूलनेस मेरे दिल में भरी है... इनफॅक्ट कूल का स्कूल हूँ"

"ओह गॉड सेव मी... मुझे तो तुम बिकुल पागल लगते हो..."

"लगने को तो तुम भी मुझे बहुत इंटेलिजेंट लगती हो पर मुझे पता है कि जैसी तुम दिखती हो, वैसी हो नही.. सेम वित मी"

"चलो एक शर्त लगाते हैं....."

""क्या शर्त.. मेरा क्या फ़ायदा होगा इस-से?"

"तुम्हें प्रूव करने को मिलेगा कि तुम सच मच बहुत ही कूल और लड़कियों के चहेते हो... फिर मेरी नज़र में तुम्हारी रेस्पेक्ट बढ़ जाएगी.."

"अर्रे तुम्हारी नज़र की किसको पड़ी है.. मैं तो किसी और को ढूँढ रहा हूँ..."

"हाहहाहा.. इतनी जल्दी डर गये.."

"मेडम विवेक किसी से नही डरता.. शर्त बोलो.." पूजा के चुंगल में आसानी से फस गया विवेक

"वो देख २ गोरी लड़कियाँ बैठी हैं... उनको जा कर हिन्दी में प्रपोज़ करो.. देखते हैं कितने कूल हो तुम... देखते हैं वो तुम्हारी दिल की कूलनेस देख पाती हैं या नहीं"

विवेक ने सोचा कि इसमें क्या है.. वैसे भी इतनी लाउड गाने की आवाज़ है, अगर चाँटा वांटा पड़ भी गया तो किसी को क्या सुनाई देगा... और वो उन लड़कियों के पास चला गया... देखने में वो दोनो बहुत ही हॉट लग रही थी और विवेक मन ही मन सोच रहा था कि काश एक हां कर दे तो मज़ा आ जाए. उन दोनो के पास पहुँच कर वो उनके सामने बैठ गया.

"बहुत सुंदर हो आप... किसी ने यह बात बताई है आपको कभी"

"सॉरी" एक लड़की बोली

"डोंट बी सॉरी... खूबसूरत होना कोई पाप नही है...."

"टेस-वू डे नाउस पार्लर" उस लड़की ने बोला ("आर यू टॉकिंग टू अस?")

"नही नही, सच में ... मज़ाक नही कर रहा मैं... इस अंधेरे रूम में अगर कोई चाँद है.. तो वो तुम ही हो" विवेक बोला

"आइ'म नोट अंडरस्टँडिंग यू"

"ओह्ह थँक यू. मुझे नही पता था कि आपको भी मैं सुंदर लग रहा हूँ...

"आर यू क्रेज़ी?"

विवेक ने आगे बढ़के उस लड़की का हाथ पकड़ा और उसको चूम के बोला "आइ लव यू टू" चटाक़ की एक आवाज़ आई और म्यूज़िक बंद हो गया... सब विवेक की तरफ देखने लग गये और वो दोनो लड़कियाँ वहाँ से खिसक ली... "क्या तमाशा चल रहा है क्या यहाँ ?? चलो अपना अपना काम करो... गाने क्यूँ बंद कर दिए रे मनहूस... गाने चला" कहता हुआ विवेक अपना लाल गाल ले कर वापस वहीं पर आ गया जहाँ पे पूजा को छोड़ा था.

"ओह्ह तो उसने मुझ से पीछा छुड़ाने के लिए मुझे वहाँ भेजा था. खुद निकल ली और मुझे पिटवा दिया" जब विवेक ने पूजा को वहाँ नही देखा तो सोचा.

"हे विवेक.. क्या चल रहा है... आते ही थप्पड़ खाने शुरू कर दिए... क्या हुआ..." प्रतिक ने उसके पास आकर पूछा

"अर्रे यार पता नही तमिल में वो लड़कियाँ क्या बक रही थी... मुझे लगा प्रपोज़ कर रही हैं.. मैने हां कह दिया तो थप्पड़ पद गया.. अजीब शहर है"

"तमिल ?? पर वो तो फ्रेंच लग रही थी..."

"कुछ भी हो.. बोली समझ नही आई, यह इंपॉर्टेंट बात है.. कौनसी बोली थी, यह इंपॉर्टेंट नही है"

"हाहहाहा... लगे रहो.. आइ एम श्योर ५०-६० थप्पड़ खा के तुम्हें या तो भाषा आ जाएगी, या कोई तुम्हारे जैसी मिल जाएगी... अगर नही भी मिली तो कम से कम थप्पड़ खाने की आदत हो जाएगी... " प्रतिक ने हँसते हुए कहा

"इन्न बातों को छोड़ और बता कि दिया दिखी क्या..."

"नहीं.. वो तो नहीं दिखी.... चल कल मिलते हैं" कहता हुआ प्रतिक वहाँ से चला गया

विवेक बेचारा अपनी किस्मत को रो रहा था. साले वो दोनो जिनमें उसको इंटेरेस्ट नही था, इसी कॉलेज में टपक पड़े और दिया नहीं है.. "भगवान तुझसे एक चीज़ माँगी थी, तूने वो तो दी नहीं, थप्पड़ पड़वा के बेइज़्ज़ती और करवा दी" सोचते हुए वो भी बियर पीने के लिए चल पड़ा

# १२

"चंद्रशेखर ऐसा कब तक चलता रहेगा? हम कब तक ऐसे ही मिलते रहेंगे" बिस्तर पर लेटी अरुणा ने पूछा

"अरुणा तुम्हें पता है कि हमारा फ्यूचर खराब हो जाएगा अगर कंपनी को पता चल गया इस अफेर के बारे में तो. दे हॅव स्ट्रिक्ट पॉलिसी रिगार्डिंग दिस"

"अभी कौन सा फ्यूचर अच्छा है चंद्रशेखर? यू आर ४७, मैं ४५ की हूँ, दोनो ने शादी नही करी है और दोनों टीनेजर्स की तरह छुप छुप के मिलते हैं" अरुणा ने गुस्से में कहा

"बस अरुणा हमारा यह एक्सपेरिमेंट ख़तम हो जाए, उसके बाद हम आराम की ज़िंदगी बिताएँगे" चंद्रशेखर ने अरुणा के बालों में हाथ फेरते हुए कहा. उसका हाथ धीरे धीरे थोड़ा नीचे गया और अरुणा के स्तनों तक पहुँच गया... वो धीरे धीरे उसके स्तनाग्र पर हाथ फेरने लग गया. अरुणा की आँखें बंद थी... चंद्रशेखर ने अपना चेहरा उसके पास करके उसके मुलायम होठों पे एक हल्का से चुंबन दिया. अब अरुणा ने भी अपना हाथ उठा कर चंद्रशेखर के कंधे पर रख दिया और दोनो एक दूसरे को चूमने लगे.

अभी दोनो गरम हो ही रहे थे कि चंद्रशेखर के फोन की घंटी बजी.

"आज की रात फोन मत उठाओ चंद्रशेखर. आज की रात सिर्फ़ मेरे नाम कर दो ना..." अरुणा उसके सामने गिड़गिडाई

चंद्रशेखर ने भी फोन पे ध्यान नही दिया और अरुणा को चूमने में लगा रहा. फोन बंद हो गया और कुछ ही पलों में उनके रूम में रखा फोन बजने लगा. "अरुणा लगता है कुछ इंपॉर्टेंट बात है.. तभी यहाँ फोन आया है.. रूको मैं देख के आता हूँ क्या हुआ"

"चंद्रशेखर तुमने क्यूँ बताया कि हम इस होटेल में रुके हुए हैं?? क्या एक रात भी हम आराम से साथ नही रह सकते?" अरुणा ने बोला और इस बात को चंद्रशेखर ने अनसुना कर दिया

"हेलो.."

"सर, केविन हियर... एक बहुत इंपॉर्टेंट चीज़ दिखानी है आपको, प्लीज़ बेस कँप में जल्दी से जल्दी आ जाइए.. वी डोंट हॅव लिट्ल टाइम टू वेस्ट"

"क्या हुआ केविन"

"सर मैं फोन पे नही बता सकता. जितनी जल्दी हो सके, प्लीज रिटर्न. मैने यह अब्ज़र्वेशन किसी को नही बताया है और आपके साथ सबसे पहले शेयर करना चाहता हूँ. इट ईज़ ह्यूज"

"ओके केविन.. टेल द पाइलट कि वो तैयार रहे. हम निकल रहे हैं और १५ मिनिट में हेलिकॉप्टर तक पहुँच जाएँगे"

रात में चारों को ठीक से नींद नही आ रही थी. रह रह के अजीब अजीब ख्वाब आते जैसे कोई प्लेन टूट रहा है और यह लोग गिर रहे हैं. हैरत की बात थी कि इनको दिख रहा था कि कैसे यह किसी को बचा रहे हैं या कोई इन्हें बचा रहा है. जैसे ही नींद लगती, थोड़ी देर में ही आँखें खुल जाती और पूरा शरीर पसीने से तर बतर होता.

जब काफ़ी कोशिशों के बाद भी प्रतिक को ठीक तरह से नींद नही आई तो उसने हार मान ली. वो छत पर चला गया और वहाँ से नज़ारा देखने लगा. दूर दूर तक सिर्फ़ अंधेरा ही अंधेरा था और उन अंधेरो में टिमटिमाते दियों की तरह बिल्डिंग्स पर रोशनी. ठंडी ठंडी हवा चल रही थी. पहले ही पसीने में भरे होने के कारण, प्रतिक को झुरजुरी पड़ने लग गयी ठंडी हवा के थपेड़ो से. रह रह के प्रतिक के दिमाग़ में यह ही ख़याल आता कि क्या वो सच में उड़ सकता है या यह सब कुछ एक भ्रम ही है. कहीं उन दवाइयों के असर से ही तो ऐसा सब कुछ नही हो रहा जो हेलिकॉप्टर में उन्हे दी गयी थी... काफ़ी सोचने के बाद उसने डिसाइड किया कि वो एक ट्राइ करेगा. वो उँचाई से कूदेगा और उससे पता चल जाएगा कि वो सच मुच उड़ सकता है कि नहीं.

उसने छत के कोने से नीचे झाँक के देखा तो उसके होश उड़ गये. यह तो बहुत उँचाई है. अगर उड़ नही पाया तो जान तो जाएगी नही, उमर भर के लिए टुंडा हो जाएगा. उसने इधर उधर देखा और पाया कि एक टंकी है जिसके उपर वो चढ़ सकता है. वहीं पास में एक स्ट्रे रूम था जिसके अंदर झाँकने पर प्रतिक ने पाया कि उसमें कई गद्दे रखे हैं. अब तो प्लान पूरा बन गया. प्रतिक ने कुछ गद्दे निकाले और टंकी के नीचे रख दिए. फिर वो १० फुट की टंकी पे पहुँचा. उपर चढ़ते हुए उसका दिल ज़ोर ज़ोर से धड़क रहा था उसने उपर से नज़ारा देखा तो पाया कि वो और भी दूर दूर तक देख सकता है. दूर एक कमरे में जलती बुझती बत्ती दिख रही थी. प्रतिक ने सोचा कि वो अकेला नहीं है जो इतनी रात में जगा है. कोई तो और भी है. उसको मालूम नही था कि वो घर दिया का है और दिया अपने अंदर समाए करेंट से बत्ती ऑन/ऑफ कर रही है.

अपने दिमाग़ को सारी बातों से क्लियर कर के, उसने छलाँग लगा दी. अगले ही पल वो उन गद्दों पे था. खड़े हो कर उसने चेक किया तो जिस्म का कोई भी अंग दर्द नही कर रहा था. मतलब चोट तो नही लगी, ऐसा सोचते हुए वो वापिस टंकी पर चढ़ गया. इस बार उसने नया तरीका अपनाने का सोचा उसने अपने दिमाग़ से सारा डर निकाल दिया और अपने आप को कन्विन्स कर दिया कि वो सच मुच उड़ सकता है. वो अपने दिमाग़ में सोचने लगा कि वो उड़ रहा है और जंप मारी आँखें बंद कर के. जब एक पल तक उसको उन गद्दों का

स्पर्श अनुभव नही हुआ तो उसने आँखें खोली. उसको लगा जैसे वो अभी भी टंकी पे ही खड़ा है. उसने अपने नीचे देखा तो हवा के सिवा कुछ नही था. थोड़ी नीचे गद्दे दिख रहे थे. डर और हैरानी ने फिर उसके अंदर प्रवेश किया और अगले ही पल धम्म से वो उन गद्दों पर गिर गया.

"ओ ओ सुपरमैन.. क्या कर रहा है इतनी रात में... ऐसे ना तो टाँग टूटेगी और ना ही छत..." विवेक सीडीयों से उपर आता हुआ बोला

प्रतिक थोड़ा सकपका गया "कुछ नहीं, नींद नही आ रही थी तो उपर चला आया"

"वैसे यह ठीक किया... नींद नही आ रही थी तो टाँग तुड़वाने की कोशिश करी.. हॉस्पिटल में आराम से सोना... वैसे गद्दों के उपर क्यूँ कूद रहे थे"

"ऐसे ही यार. थोड़ा एक्साइट्मेंट"

"अर्रे एक्साइट्मेंट तो इस चीज़ से मिलता है" विवेक ने गांजे की २ सिगरेट्स निकालते हुए कहा. "चलो आओ.. साथ में उड़ेंगे"

"तू भी उड़ता है?" प्रतिक ने हैरानी में पूछा

"अर्रे वाह.. पुराने खिलाड़ी मालूम होते हो. चलो आज उड़ ही लिया जाए" कहते हुए विवेक ने एक सिगरेट उसके आगे कर दी. दोनो छत के कोने में बैठकर कश मारने लगे. थोड़ी देर बाद प्रतिक बोला

"यार तुझे ऐसा कभी लगा है कि तू कुछ कर सकता है पर कर नही पाया हो"

"बिल्कुल. १०वी का हाफ यियर्ली था. मुझे लग रहा था कि फिज़िक्स आती है तो पढ़ा नहीं.. साला एक भी सवाल ठीक से हल नही कर पाया"

"हा हा हा.. ऐसे नहीं यार... कहने का मतलब है कभी तुम्हें लगा है कि तुम कुछ और करने के लिए पैदा हुए हो और कर नही पा रहे"

"पूरा वक़्त... मुझे लगता था कि मैं सिर्फ़ लड़कियों के लिए पैदा हुआ हूँ... पिछले कॉलेज में एक लड़की को ठोका, उसके बाद सारी मुझसे दूर भागने लगी... अब मेरी ग़लती थोड़े है कि आधे मिनिट में झड गया.. पहली बारी था यार"

"हा हा हा.. होता है पहली बार में... मेरे साथ भी हुआ था.. धीरे धीरे सीख जाता है बंदा"

"तुम तो गुरु लगते हो ... आज से तुम्हारा नाम गुरु सुपरमैन. वैसे तुम गांजा मार के ही बात करते हो या वैसे भी मूह खुलता है कभी कभी"

"तुम्हारे जितना तो नहीं, पर हां बात तो करता ही हूँ"

"अच्छी बात है.. तुम्हारे से बहुत कुछ सीखना है मुझे"

"मुझसे सीखकर तो नरक में ही जाओगे"

"तो अभी कौन सा स्वर्ग का रिज़र्वेशन है. मेरे हिसाब से आदमी के पास २ ऑप्शन होती हैं - दुनिया में स्वर्ग और मरने के बाद नर्क या दुनिया में नर्क और मरने के बाद स्वर्ग. अब मरने के बाद क्या होता है, किससे पता, इसलिए हम तो यहीं स्वर्ग का आनंद लेते हैं"

# १३

अब रात में सोया लेट, तो जायज़ है कि सुबह टाइम से उठा नही जाएगा. अलार्म को स्नऊज़ करते करते विवेक आधा घंटा लेट उठा. घड़ी को देखा तो उसके चेहरे पे बारह बज गये. "नहाने से तो कोई फ़ायदा है नहीं, वैसे भी कल ही नहाया हूँ.. आज शेव कर के ही चल पड़ता हूँ" उसने सोचा और जल्दी जल्दी शेव करने लगा. अब शेव तो जल्दी जल्दी करी नही जा सकती, तो दूसरे ही पल उसके चेहरे पे एक लंबा सा घाव हो गया. "ओह शिट.. यह क्या हुआ, मुझे बदसूरत बनाने की चाल...." उसने सोचा और बाकी की शेव निपटाई. बाद में वो अपने बॅग से डेटोल ढूँढ के लाया तो शीशे में देखा कि उसका चेहरा पहले जैसा सपाट था. घाव का कोई नामोनिशान नही था. उसने इस बारे में ज़्यादा नहीं सोचा और कपड़े बदल के, कॉलेज की तरफ रवाना हो गया.

कॉलेज हॉस्टिल से थोड़ा ही दूर था. विवेक ने फटाफट बॅग टांगा और ओलिंपिक रन्नर की तरह भागना शुरू कर दिया. कॉलेज पहुँचा तो देखा कि कोई भी स्टूडेंट खुला नहीं घूम रहा. "यहाँ साले सब पढ़ने के लिए ही आते हैं क्या..." उनसे सोचा और अपनी क्लास ढूँढने लगा. तभी उसको एक लड़की वहाँ से जाती हुई दिखी..

"हेलो.. एक्सक्यूस मी..." विवेक ने बोला पर उस लड़की ने उसकी तरफ नही देखा, तो विवेक ने ज़ोर से सीटी बजा दी. वो लड़की पीछे मूडी

"व्हाट आर यू डूयिंग.. दिस ईज़ आ कॉलेज"

"हां वो ठीक है.. यह बताओ कि फर्स्ट एअर की अकाउंट क्लास कहाँ है... लेट हो गया हूँ मैं"

"आ जाओ मेरे साथ. आइ विल टेक यू"

विवेक महाशय खुश. उसको लगा चलो कोई तो है जो मेरे साथ लेट हो गया है. एक क्लास के सामने पहुँच कर उस लड़की ने अंदर की ओर इशारा किया और घुस गयी. विवेक २ कदम की दूरी पे था. अंदर झाँका तो देखा क्लास चल रही है. विवेक ने सोचा कि शायद

यहाँ पे क्लास में घुसने से पहले पूछने पाछने का सिस्टम नही है, वो लड़की भी तो घुस के आगे बैठ गयी थी, तो वो भी झट अंदर घुस गया और खाली सीट देखने लगा.

"एक्सक्यूस मी"

"यस मॅम"

"व्हाट डू यू थिंक यू आर डूयिंग??"

"मॅम वो बैठने के लिए सीट ढूँढ रहा हूँ"

"शरम नही आती तुम्हें ऐसे अंदर घुसते हुए..."

"लो मॅम शरम क्यूँ आने लगी.. अब यह गुरुद्वारा यह मंदिर तो है नहीं कि चप्पल खोल के घुसू.. और वैसे भी बाहर किसी और की चप्पल तो पड़ी नहीं है"

"आइ मीन.. क्लास में घुसने से पहले तुम्हें अपने आप को एक्सक्यूस करना चाहिए... ऐसे कैसे घुस रहे हो जैसे यह कोई प्लेग्राउंड है"

"मॅम वो लड़की भी घुसी थी, मैने सोचा कि यहाँ सब ऐसे ही होता होगा तो मैं भी घुस गया... सॉरी..."

"जाओ और जा कर बैठ जाओ... पहले दिन ही लेट आए हो... आगे से कोई भी लेट हुआ तो क्लास में घुसने नही दिया जाएगा.. और मिस्टर.. जिसको तुम देख कर अंदर घुस गये थे, शी ईज़ माइ टीचिंग असिस्टेंट.. कोई स्टूडेंट नही है जो तुम्हारी तरह लेट आई थी"

"अर्रे मेडम बोल तो दिया ना सॉरी.. नहीं होगा आगे से.. आप बोलो तो १०० बार लिख के दे दूं कॉपी पे" विवेक ने कहा और सारी क्लास ज़ोर ज़ोर से हँसने लगी

"शट अप आंड टेक युवर सीट" गुस्से में आग बाबूला हो कर टीचर बोली

विवेक चुप चाप पीछे जा कर बैठ गया. धीरे धीरे करके उसने सारी क्लास का मुआयना किया. पूजा उसे वहाँ बैठी दिखी लेकिन दिया नहीं दिखी. उसको लगने लगा कि शायद वो दिया से कभी नही मिल पाएगा.. क्लास भी बोर हो रही थी.. यह सब तो उसने फर्स्ट ईअर में पढ़ रखा था.. तभी उसका ध्यान शेविंग इन्सिडेंट पर गया.. अब उसको यकीन हो रहा था कि उसके अंदर कुछ तो बात है जो उसको कोई बीमारी या चोट नही होती.. फिर उसको कल की बात याद आई प्रतिक वाली.. कहीं प्रतिक के साथ भी तो ऐसा नहीं है.. क्या कल वो सच मुच हवा में उड़ रहा था या मेरी ग़लतफेहमली थी.. वो यह सोच ही रहा था कि तभी एक ज़ोर की घंटी बजी और क्लास ख़तम हो गयी..

"प्रतिक नही आया क्या" विवेक ने जा कर पूजा से पूछा

"नहीं.. दिया नहीं दिखी मुझे"

"हे हे हे.. पर मैने तो प्रतिक के बारे में पूछा"

"पर मुझे पता है कि तुम क्या पूछने वाले थे अल्टिमेट्ली. रास्ते से हटो मुझे अगली क्लास के लिए लेट हो रहा है"

"तुम्हारे जैसी नकचड़ी लड़की मैने अपनी ज़िंदगी में नही देखी.. या शायद देखी है... याद नहीं.. पर तुम बहुत ही नकचड़ी हो" विवेक ने जाती हुई पूजा के पीछे बोला जिसके रिप्लाइ में पूजा ने बस उसको जीब निकाल कर चिड़ा दिया और चलती रही... विवेक को भी याद आया कि उसको नेक्स्ट क्लास में जाना है और वो क्लासरूम ढूँढने लगा. पूरा दिन क्लास में निकल गया. प्रतिक से उसकी मुलाक़ात हो गयी थी लेकिन दिया उससे कहीं नही दिखी. अब उसको यकीन हो गया था कि दिया किसी और कॉलेज में ही पढ़ रही है. उसने सोचा कि चलो दिया ना सही, किसी और को ही ढूँढ लेते हैं टाइम पास के लिए. उसने डिसाइड किया कि कल से वो किसी और लड़की पे लाइन मारेगा.. लेकिन किस पे - यह था सबसे बड़ा क्वेस्चन. पूरा दिन उसने लड़कियों की तोल मोल करी और इस निष्कर्ष पे निकला कि पूजा ही सबसे सेफ  है. वो उसके देश की थी और वो उसको थोड़ा बहुत जानती थी.. तो बात तो आराम से शुरू हो जाएगी.. लेकिन सबसे बड़ी प्राब्लम भी यही थी - वो विवेक को जानती थी. हो सकता है कि वो पहली बार में ही चाँटा मार दे...

दूसरी ओर पूजा विवेक से बहुत खिजी हुई थी. उसको ज़्यादा बोलने वाले लड़के बिल्कुल पसंद नही थे और उपर से विवेक उसको बहुत इरिटेटिंग लगता था. वो इतना कूल बनता था जबकि था एक बड़ा फूल. जब भी वो उससे देखती, गुस्से से आग बाबूला हो जाती. उसका बस चलता तो ऐसे इंसानों को पैदा होने से पहले ही मार डालती. वो अपनी ही धुन में खोई हुई चल रही थी कि पीछे से उससे किसी ने आवाज़ मार. पीछे मूडी तो देखा के दिया है.

"हाई पूजा. क्या हाल.. वॉट आ प्लेज़ेंट सर्प्राइज़"

"मुझे देख कर सर्प्राइज़.. वेट टिल यू सी युवर आशिक़"

"डोंट टेल मी... विवेक भी इसी कॉलेज में है.."

"हां.. सुबह से ३ बार तुम्हारे बारे में पूछ चुका है... मैं तो हैरान हूँ कि अभी तक तुमसे मिला नही"

"ढूँढ तो मैं भी उसे रही थी.. फिर मुझे लगा शायद इस कॉलेज में नही होगा"

"डोंट टेल मी दिया... तुम कैसे उसे अपना दिमाग़ खाने देना चाहती हो.."

"बस ऐसा ही है... और बताओ.. तुम्हें कहीं ड्रॉप कर दूं..."

"हां प्लीज, मुझे लॅडीस हॉस्टिल ड्रॉप कर दो" पूजा ने कहा और दिया के पीछे पीछे उसकी कार की तरफ चली गयी

वापस हॉस्टिल जाते हुए विवेक को फिर से प्रतिक दिखा. विवेक उसके पास गया और साथ साथ वो दोनो हॉस्टिल चलने लगे. उनके साथ एक और बंदा था जिस से प्रतिक नोन स्टॉप किसी सब्जेक्ट के बारे में बात कर रहा था. "कैसे लोग है यार यह.. कॉलेज में पढ़ कर मन नही भरा तो अब भी पढ़ाई की बात कर रहे हैं" उसने सोचा.. सारा रास्ता विवेक चुप रहा. जो रास्ता सुबह जल्दी से कट गया था, वो उसको जीटी रोड जैसा लग रहा था अब.. ऐसा लग रहा था कि घंटों से चल रहा है पर हॉस्टिल नही आ रहा था. उपर से प्रतिक और जॅक की बकवास. जैसे ही हॉस्टिल आया और जॅक अपने रूम की तरफ बढ़ा, विवेक

ने प्रतिक का हाथ पकड़ लिया. "प्रतिक यार मेरे रूम में आ. तुझसे बहुत इंपॉर्टेंट बात करनी है" उससे कहा और उसको खीच के अपने रूम में ले गया.

प्रतिक हैरान था कि ऐसी कौन सी बात करनी है विवेक को. फिर उसको लगा कि शायद कल रात के बारे में बात करनी हो. उसने पहले ही सोच लिया था कि सारा ब्लेम गांजे पे डाल देगा. रूम के अंदर पहुँच कर विवेक ने अंदर से रूम लॉक कर दिया

"विवेक तुम मेरा रेप तो नही करने वाले ना"

"अबे तुझे मैं गे लगता हूँ? और वैसे भी प्रतिक नाम वाले लोग गे नही होते हैं. चल उधर बैठ जा" कहते हुए विवेक कुर्सी पर बैठ गया. "यार कल रात जो मैने देखा, मुझे नहीं लगता कि वो गांजे का असर था."

"अबे पागल हो गया है क्या तू. तुझे क्या लगता है कि मैं सच मुच उड़ सकता हूँ?"

"हां मुझे यही लगता है. और यह भी लगता है कि तुम उड़ने की ही प्रॅक्टीस कर रहे थे जब मैं उपर आया. यार मैं शकल से मूरख लगता होऊँगा, हूँ नहीं."

"यार कैसी बहकी बहकी बातें कर रहा है यार. तुझे कैसे लग सकता है कि मैं कुछ ऐसा कर सकता हूँ जो और कोई इंसान नही कर सकता"

"क्यूंकी मैं भी कुछ ऐसा कर सकता हूँ"

"क्या बकवास कर रहा है" प्रतिक ने हैरानी से पूछा

जवाब में विवेक ने टेबल से चाकू उठाया और अपनी एक उंगली के आगे का छोटा सा हिस्सा काट दिया. देखते ही देखते उंगली में से खून निकलने लगा. २-३ सेक. बहने के बाद प्रतिक ने देखा कि विवेक की उंगली का घाव अपने आप ठीक हो गया और वो उंगली बिल्कुल पहले जैसी हो गयी. हैरानी में प्रतिक का मूह खुले का खुला रह गया. "यह देखकर तुझे लग गया होगा कि तू अकेला इंसान नही है जो स्पेशल है. प्लीज़ यार. एक दोस्त होने की हैसियत से बता दे. मैं सच हूँ या ग़लत"

"यह क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है मुझे कुछ नही पता विवेक.. तुम्हारा घाव ठीक कैसे हो गया?"

"बात को बदल मत प्रतिक"

"मुझे नहीं पता कि मैं उड़ सकता हूँ कि नहीं. पर हां.. मुझे यह लगता ज़रूर है कि मैं उड़ सकता हूँ"

"आज रात को ९ बजे छत पे मिलते हैं. लेट्स सी अगर हम तेरी पॉवर को डेवेलप कर पायें" विवेक ने एक लंबी सास छोड़ते हुए बोला

# १४

दिया को रात में नींद नही आई. वो बस करवटें बदलते बदलते विवेक के बारे में सोच रही थी. इतने बड़े टोरोंटो में, वो दोनो एक ही कॉलेज में है, ऐसा कोयिन्सिडेन्स तो नही हो सकता. शायद भगवान चाहता ही था कि वो और विवेक भी एक दूसरे से मिले. उसने सोचा कि कल जाते ही सबसे पहले विवेक को ढूँढेगी कॉलेज में.

"बेटा खाने के लिए आ जाओ"

"हां माँ आई" दिया ने बोला और झट से नीचे पहुँच गयी

"बेटे कैसा गया पहला दिन कॉलेज में" खाने की टेबल पर उसके पापा ने पूछा

"ठीक गया पापा."

"बेटा एक बात पूछूँ.. जब से तुम वापस आई हो, इतना गुमसुम क्यूँ रहती हो.. आज भी कॉलेज से आ कर सीधा अपने रूम में चली गयी...सब ठीक तो है ना"

"पापा मैं आप लोगों को १० बार कह चुकी हूँ कि सब ठीक है. क्यूँ दिन रात एक ही बात के पीछे पड़े रहते हो. क्या ज़रूरी है कि कुछ हुआ हो तभी मैं यहाँ आई हूँ?"

"बेटा इस तरह से सब छोड़ छाड़ के आ जाना तो सब ठीक होने की तरफ इशारा नही करता"

"क्यूँ एक बात के पीछे पड़े हुए हो... बोल दिया कि नहीं है तो नहीं है कोई प्राब्लम" दिया ज़ोर से चीखी और खाना छोड़ कर उपर चली गयी.

"अर्रे बेटा खाना तो खा ले. ऐसे क्यूँ नाराज़ होती है" उसके पापा ने पीछे से बोला. "अर्रे यह बत्ती को क्या हो गया... लगता है फ्यूज़ उड़ गया... अब खाने के बाद फ्यूज़ ठीक करना पड़ेगा"

दिया अपने रूम में गयी और अपने पलंग पर लेट गयी... उसके माँ बाप बार बार उसको वो रात याद दिलाते थे. वो ना चाहते हुए भी फिर उस डर और असहयता को एक्सपीरियेन्स करती थी. पहले तो उसको करेंट के झटके भी लगते थे, पर अब उसने उनको कंट्रोल करना सीख लिया था. लेकिन हर बार उसको अपनी पॉवर किसी चीज़ पे कॉन्सेंट्रेट करनी पड़ती थी. अभी कल प्लँट्स में आग लग गयी थी और आज फ्यूज़ पिघल गया. यह क्यूँ हो रहा है उसको नही पता था. पर जब भी उसके अंदर करेंट पैदा होता और वो उसे बाहर फेंकती तो उसको एक अच्छी सी पॉवर का एहसास होता. उसको लगता कि वो अब उतनी असहाय नही है जितनी उस रात थी. बस वो यही सोच रहही थी कि काश, उस दिन वो उस दरिंदे से बच पाती किसी तरह तो आज शायद उसकी ज़िंदगी इतनी उदास नही होती. उदासी में वो बाहर झाँक रही थी और झाँकते झाँकते कब सो गयी, उससे पता भी ना चला.

"हां तो प्रतिक. कॉन्सेंट्रेट. तुझे हल्का महसूस हो रहा है... तू चलते चलते बहुत हल्का हो रहा है. अब तू हवा में उड़ रहा है... अब तू नीचे देख..."

"अबे तू क्या मुझे हिप्नोटाइज कर रहा है हिन्दी फिल्मों की तरह?? ज़मीन पर ही हूँ मैं"

"यार मैं तेरी मदद कर रहा हूँ और तू ऐसे कर रहा है... कोशिश कर ना..."

"नही होती मुझसे और कोशिश."

"अबे तो कल कैसे हवा में चल रहा था... गांजा ख़तम है नहीं तो अभी तेरी नसों में घुसेड देता मैं.. तू उड़ बस.. मैं नही जानता"

"अबे मैं कोई रिमोट कंट्रोल्ड प्लेन नहीं हूँ जो ऐसे ही उड़ जाऊंगा"

"देख तू उड़ नहीं तो मैं फिर से अपना हाथ काट लूँगा. फिर खून को देख कर तुझे उल्टी होगी... तू जब तक नही उड़ेगा मैं तब तक ऐसा ही करता रहूँगा"

"शट अप विवेक.. क्या बचपना है... नहीं उड़ा जा रहा मेरे से मैं क्या करूँ"

"क्या मैं तुझे नीचे धक्का दूं?? अपने आप उड़ जाएगा"

"और अगर नही उड़ पाया तो?"

"तो यमराज आ के उड़ा लेगा तुझे" कहता हुआ विवेक हँसने लग गया.

"तुझे हर वक़्त मज़ाक ही क्यूँ सूझता है यार? चल बहुत ठंड लग रही है, अंदर चलते हैं" असल में बात यह थी कि प्रतिक विवेक के सामने उड़ना नही चाहता था. वो नहीं चाहता था कि विवेक को पता लगे कि वो भी एक आम इंसान नही है. विवेक की हरकतें उसे अभी भी कोई ट्रिक लग रही थी. उससे नहीं लग रहा था कि विवेक अपनी उंगली काट रहा है. उसको लगा शायद वो कोई नयी ट्रिक सीख के आया है और उसको मूरख बना रहा है...

"वैसे विवेक तू है कौन सी जगह से" प्रतिक ने पूछा तो पाया कि विवेक उसके पास नही है. उसने पीछे मूड के देखा तो विवेक छत की एड्ज पे खड़ा नीचे देख रहा था

"प्रतिक तेरे को पता है कि अगर मैं यहाँ से कूद गया, तो नीचे गिर के मुझे कुछ नही होगा"

"विवेक फालतू के काम मत कर और चुप चाप नीचे चल"

"अर्रे मैं सच कह रहा हूँ. यह देख" कह कर विवेक ने छलाँग मार दी

"विवेक...." प्रतिक ज़ोर से चिल्लाया और उसके पीछे दौड़ा. विवेक नीचे गिर रहा था. उसकी आँखें बंद थी. जब काफ़ी देर तक वो ज़मीन से नही टकराया तो उसने अपनी आँखें खोली

"हे हे हे.. उड़ गये ना फिर तुम. चलो मुझे वहाँ ले कर चलो" विवेक ने इशारा करते हुए कहा

"दिमाग़ खराब है तेरा विवेक. कहते हुए प्रतिक उसे ले कर वापस छत की तरफ बढ़ा"

"कसम है तुम्हें अपने प्यार करने वालों की प्रतिक, मुझे वहाँ ले कर चलो" विवेक ने फिर इशारा करते हुए कहा

"क्या है वहाँ विवेक जिस के लिए तू अपनी जान तक पे खेल गया"

"मेरी जान है वहाँ. आज ही कॉलेज के डेटाबेस हॅक करके उसका अड्रेस निकाला है. चल ले चल ना यार. एक पल भी नही रहा जाता अब उसको देखे बिना."

"पागल हो गया है तू विवेक."

"हां हो तो गया हूँ. लेकिन थोड़ा सा. चल उस बिल्डिंग के आगे से राइट टर्न ले लेना... और हां थोड़ा उपर उड़ ताकि कोई हमें देख ना ले" विवेक ने उसे गाइड करते हुए कहा

"विवेक मेरे से और नही उड़ा जा रहा विवेक. मैं थक गया हूँ"

"अर्रे बस पहुँच गये मेरे यार. होसला रख"

"अबे होसला क्या रख साले. गधा हूँ मैं जो मेरी पीठ पर इतना भारी समान लाद दिया"

"अर्रे तू मुझे समान मत कह. चल मैं तेरा मनोबल बढ़ाता हूँ गाना गा के"

"अबे बकवास मत कर.."

"तू जहाँ, जहाँ रहेगा, मेरा साया साथ होगा...."

"अबे यह क्या गाने गा रहा है... इससे कोई मनोबल बढेगा क्या"

"अबे बहुत हिट गाना है अपने टाइम का. कोई ममता कुलकर्णी का रापचिक आइटम सुनाऊं क्या"

"विवेक मेरे से सच में ... नही.. हो रहा" कहते हुए प्रतिक ने झट से नीचे हो कर छत का एंड पकड़ लिया और उसपे लटक के उपर खिच गया. अब विवेक बेचारे को पता भी नही था कि ऐसा होने वाला है. वो मज़े से प्रतिक की पीठ पे लदा हुआ था और कि अचानक से रुक जाने के कारण धम्म से उसकी पीठ से नीचे गिरा. कम से कम १० मीटर की उचाई से वो नीचे गिरा.

"कौन है वहाँ..."घर के अंदर से आवाज़ आई. विवेक की आँखों के सामने तारे नाच रहे थे. सर पे चोट ज़ोर की लगी थी. थोड़ी देर ऐसे ही पड़ा रहा फिर खड़ा हो गया. "कौन है वहाँ, बाहर निकलो" फिर वो आवाज़ आई. विवेक को लगा कहीं वो आदमी गोली वोलि ना चला दे तो चुप चाप बाहर निकल गया.

"जी मैं विवेक हूँ. कोई चोर नही है. हाथ मेरे उपर ही हैं. प्लीज़ गोली मत चलना"

"यह तुम उपर से कहाँ से गिर रहे थे ??"

"जी मैने सोचा संतरे का पेड़ है. मूड हो रहा था खाने का तो चढ़ गया"

"पर यह संतरे का पेड़ नही है"

"हां. उसपे तो बॅलेन्स की आदत है. ये कोई और पेड़ है इसलिए नीचे गिर गया. आप गोली मत चलाना"

"मेरे हाथ में बंदूक नही टॉर्च है. घर का फ्यूज़ उड़ गया है. वोही चेक करने आया था. तुम्हें फ्यूज़ ठीक करना आता है"

"अर्रे बिल्कुल आता है. मैने तो फ्यूज़ में ही पला बढ़ा हूँ. दिखाओ इधर" विवेक ने चैन की सास ली और लगा फ्यूज़ देखने.

"यह तो पूरा पिघल गया है.. नया लेना पड़ेगा सर जी आपको"

"अब इतनी रात में नया कहाँ से लाउ... यह तो कल सुबह ही हो सकता है अब.. लगता है रात अंधेरे में ही काटनी पड़ेगी"

"अर्रे हॅव नो फियर व्हेन विवेक ईज़ हियर... मैं डाइरेक्ट कनेक्षन कर देता हूँ.. मीटर की तार निकाल के... बहुत किया है गांव में... लेकिन सुबह ठीक कर देना. गांव में चलता था.. यहाँ किसी को पता चल गया तो कहीं फासी ना हो जाए"

"हां हां कर दूँगा. तुम लगाओ तो सही"

"अर्रे आप टॉर्च की लाइट मारो तो सही, ऐसे थोड़े लगेगा." विवेक ने कहा और लग गया काम में. ५ मिनिट में घर में बत्ती आ गयी. "लो जी हो गया. आप भी क्या याद रखोगे. घर मे संतरा है क्या?? मूड कर रहा है थोड़ा"

"हां हां अभी ला देता हूँ. अंदर ही क्यूँ नही आ जाते."

"अर्रे वाह आप तो बड़े बहादुर हो. किसी अंजान लड़के को ऐसे ही घर में घुसा दोगे संतरे के लिए..."

"शकल से तुम वैसे ज़्यादे बड़े चोर नही लगते.. और घर में मेरे पास बंदूक भी है" हँसते हुए उस आदमी ने कहा.."आ जाओ अंदर"

"संतरे के लिए तो मैं छत से कूद जाउ, यह घर में आना कौन सी बड़ी बात है.. चलिए... आज आपके घर का संतरा भी चख ही लेते हैं" विवेक ने कहा और पीछे पीछे हो लिया.

अंदर से घर बहुत आलीशान था. ऐसा हर विवेक ने अपने गांव में कभी नही देखा था. वॉल टू वॉल कार्पेटिंग, सेंट्रली टेंपरेचर कंट्रोल्ड, महनगा फर्निचर.. यह पार्टी तो सच मुच मालदार लगती थी. वो अभी घर की खूबसूरती निहार ही रहा था कि उसकी नज़र एक बड़ी सी फोटू पे पड़ी. फॅमिली पोर्ट्रेट था. वो आदमी, उसकी बीवी और दिया. "वाह रे उपर वाले.. भला हो तेरा... टपकाया भी तो सीधा मेरी माशूका की गोद में" उसने सोचा और इधर उधर देखने लग गया कि शायद दिया कहीं दिख जाए.

"क्या देख रहे हो मियाँ.. कहीं सच में कोई चोरी का इरादा तो नहीं..."

"अर्रे नहीं जी... मैं देख रहा था कि मेज़ पे एक प्लेट पड़ी है खाने की और घर में आपके सिवा कोई भी नहीं है..."

"मेरी वाइफ सो गयी है. बेटी का मूड थोड़ा ठीक नही है, तो उसने खाया नहीं.. मुझे तो वैसे ही कम नींद आती है... कुछ पियोगे"

"जी संतरे का जूस है क्या..."

"यह क्या संतरा संतरा लगा रखा है.. संतरा ना हुआ हीरा हो गया... कुछ बियर वगेरह पीयोगे?"

"अर्रे नही सर.. इतनी ठंड में बियर पी के कहाँ जाऊंगा... चलो आप इन्सिस्ट करते हो तो... विस्की है क्या.."

"हां हां क्यूँ नही... रोज़ अकेला पीता हूँ.. आज तुम्हारा साथ मिल गया..." कहते हुए अंकल ग्लास और दारू लेने चले गये और विवेक फिर इधर उधर देखने लग गया

दिया का भी भूख के मारे बुरा हाल था. जोश में वो खाना छोड़ के तो आ गयी थी, पर अब उसको भूख लगी थी. वो बिस्तर से उठी और सीडीयों की तरफ चल पड़ी डाइनिंग एरिया में जाने के लिए. उसका रूम फर्स्ट फ्लोर पे था. वो जैसे ही सीडीयों के पास पहुँची उसको किसी की आवाज़ आई नीचे से उसके पापा से बात करते हुए. वो सोचने लगी कि इतनी रात में कौन आ गया है. उसने थोड़ी सी बातें सुनी तो उसको वो आवाज़ जानी पहचानी सी लगी .. कहीं यह..... वो फटाफट से नीचे उतरी और सच में विवेक वहाँ खड़ा हुआ था... उसको देख के अजीब से हँसी हँस रहा था. दिया भी उस को देखती रह गयी.. कैसा लड़का है.. यहाँ तक पहुँच गया .. वो उसे देख कर बस सोचती रही

"तुम यहाँ कैसे आ गये"

"उड़ के आया हूँ. खीच लाई तुम"

"तुम्हें यहाँ का अड्रेस किसने दिया"

"भगवान की कृपा है मेडम"

"तुम अंदर कैसे घुस गये?"

"संतरे का कमाल.. मेडम संतरे का कमाल.. तुम क्या जानो कितनी महान चीज़ है संतरा... अर्रे अंकल आप रहने दो अब.. मेरा हो गया..."

"क्या हो गया बेटा.." अंकल हाथ में २ ग्लास ले कर आ गये थे. "अर्रे आप भी यहाँ है.. गुस्सा हो गया ठंडा.. इनसे मिलो.. यह हैं... यह हैं..."

"विवेक जी.. विवेक नाम है मेरा. बताया था ना आपको.. शायद बंदूक के डर से ज़ोर से नही बोला था.. वैसे हम दोनो मिल चुके हैं"

"मिल चुके हो... कहाँ??"

"पापा मैने बताया था ना कि हेलिकॉप्टर में ४ लोग थे.. यह भी उनमें से एक है" दिया बोली.

"वेरी इंट्रेस्टिंग... बैठो विवेक... कौन कौन है तुम्हारे घर में"

"रहने दो पापा.. यह एक बार शुरू हो गया तो फिर इसका बंद होना मुश्किल है.. रात बहुत हो गयी है.. आप सो जाओ..."

"हा हा हा.. सीधा क्यूँ नही कहती बेटी कि तुम्हें अकेले वक़्त बिताना है इसके साथ.. तुम्हारा बाप हूँ.. बुढ्ढा हो गया हूँ लेकिन थोड़ी बहुत अकल है अभी भी मुझमें" कहते हुए अंकल उठे और अपने रूम में चले गये

"देखो भगा दिया पापा को.. कैसी बेटी हो तुम" विवेक ने एक ही सास में सारी विस्की हलक से उतारते हुए कहा

"रहने दो तुम इन बातों को.. और यह बताओ कि यहाँ तक पहुँचे कैसे."

"मैं और प्रतिक घूमते घूमते आ गये थे."

"उस खड़ूस को साथ लाए हो?"

"अर्रे अच्छा आदमी है वो भी... उस दिन थोड़ा रिज़र्व्ड था, बट दिल का बहुत अच्छा है... मेरी तरह"

"तुम्हारे से तो हर कोई अच्छा होगा... पीछा करते करते यहाँ तक आ गये"

"अर्रे यह तो उपर वाले की मेहेरबानी है... और वैसे भी अब तो हमारी कॉफी डेट पक्की है... कल चलें"

"अर्रे इतनी ठंड में कॉफी की याद मत दिलाओ... "

"ओ तेरी.. ठंड से याद आया.. प्रतिक तो बाहर ही रह गया..."

"कितने बड़े गधे हो तुम, अंदर ले आओ उसे. कुलफी जाम गयी होगी उसकी तो" दिया ने हँसते हुए कहा

विवेक बाहर गया और इधर उधर देखा. प्रतिक का कहीं नामोनिशान नही था. उसने इधर उधर काफ़ी ढूँढा पर प्रतिक कहीं दिख नही रहा था. वो वापस अंदर गया और बहाना बना के दिया को छत पर ले गया. उसे लगा कि प्रतिक वहाँ होगा लेकिन वहाँ भी और कोई नही था

"कहाँ चला गया प्रतिक."

"अर्रे छत पे कहाँ ढूँढ रहे हो उसे?? आसमान से टपके थे क्या तुम लोग"

"टपके तो थे. पर उसको यहीं कहीं होना चाहिए"

"उसको फोन कर के क्यूँ नही पूछ लेते कि वो कहाँ है"

"अर्रे हां. काफ़ी इंटेलिजेंट हो तुम. फोन तो कर ही सकते हैं. अपना फोन दो. मेरे में बॅलेन्स कम है" दिया नीचे अपना फोन लेने चली गयी और विवेक छत पे घूमता रहा

"अर्रे पापा. आप क्यूँ ग्लास उठा रहे हो... मैं उठा दूँगी ना"

"अर्रे बेटा कुछ नही होता. वैसे भी मुझे नींद नही आ रही. तुम एंजाय करो" उसके पापा ने कहा. अगर दिया थोड़ी देर और रुकती तो देखती कि उसके पापा वो ग्लास डिश वॉशर में डालने की बजाए अपनी बेसमेंट की लॅबोरेटरी में ले गये हैं.

"लो. ले लो फोन... कंगाल कहीं के" विवेक को फोन देते हुए दिया बोली.

"अर्रे कंगाल नही हूँ. बस थोड़ा बुरे दौर से गुज़र रहा हूँ. और तुम्हारे सामने तो पूरी दुनिया ही कँगाल है. इतनी अमीरी मैने देखी नहीं है किसी पे"

"चुप रहो और फोन लगाओ"

"अर्रे फोन कहाँ भागा जा रहा है. अच्छा ही है कि प्रतिक यहाँ नहीं है. कम से कम हमे थोड़ा टाइम अकेले में बिताने का मौका तो मिला"

"तुम्हें क्यूँ अकेले में मेरे साथ टाइम बिताना है? मुझे कोई ऐसी-वैसी लड़की मत समझना"

"अर्रे तुम्हें मैं अगर ऐसी वैसी लड़की समझता तो सीधा तुम्हारे बिस्तर पे आता, छत पे नही"

"शट अप और फोन लगाओ..."

"लगा रहा हूँ. जितनी मुझे प्रतिक की चिंता नही है, उससे कहीं ज़्यादा तुम्हें लग रही है... कुछ है तो बता दो... रास्ते से हटा दूँगा उसको"

"उफ्फ तुम कितना बोलते हो.."

"ह्म्म लेकिन अच्छा बोलता हूँ ना... हेलो.." कॉल लग गयी थी "अबे कहाँ है बे... मुझे यहाँ छोड़ के कहाँ भाग गया"

"मेरी हालत ठीक नही है विवेक. बहुत वीकनेस लग रही है. तुम्हें वापस उठाने की हिम्मत नही थी मेरे में.. और वैसे भी मुझे लगा कि तुम्हारा कोई प्रॉब्लम हो गया है मकान मालिक के साथ, इसलिए मैने वहाँ रुकना मुनासिब नही समझा"

"वाह.. दोस्त को प्राब्लम में देख के भाग गया... तुझसे आ के निपट-ता हूँ. कहाँ है अभी"

"रास्ते में ही थोड़ा रेस्ट कर रहा हूँ.. उड़ा नही जा रहा... सब तेरी वजह से हुआ.. शायद रास्ता भी भूल गया हूँ मैं.. किसने कहा था तुझे इतना ठूँसने को"

"अबे फोन धर अब... आके तेरा हिसाब किताब क्लियर करता हूँ मैं" कहते हुए विवेक ने फोन वापस दिया को दे दिया "कैसे बंद करते हैं इसे... फोन है या कंप्यूटर"

"तुम्हें यहाँ का अड्रेस मिला कैसे ? सच सच बताना..." दिया ने फोन लेते हुए कहा

"देखो दिया.. मैने इस बात को छुपा के नहीं रखा है कि तुम मुझे अच्छी लगती हो. अब मैं उन लोगों में से नही हूँ जो भगवान की मर्ज़ी प्रकट होने का इंतेज़ार करते रहें. मुझे तुमसे मिलना था, मैने अड्रेस ढूँढ लिया और टपक पड़ा. डीटेल्स में क्यूँ जाना है तुम्हें"

"तुम्हें पता है तुम कितने अजीब हो..."

"हां मैं अजीब ही सही दिया.. लेकिन मुझे लगता है कि तुम्हें मुझे एक मौका देना चाहिए. एक बार मेरे साथ होके देखो. अगर तुम्हें मैं पसंद नही आया, बस एक बार बोलने भर की देर है.. मैं कभी तुमसे बात नही करूँगा"

"विवेक इतनी जल्दी मैं ऐसा डिसीजन नही ले सकती. यह हमारी दूसरी मुलाक़ात है बस. तो मैं कैसे तुम्हें इतनी जल्दी जड्ज कर सकती हूँ. थोड़ा टाइम दो, सब ठीक हो जाएगा."

"ओके.. चलो रोमँटिक बातें करते हैं.."

"व्हाट....."

"वो चाँद देख रही हो..."

"यार अब यह चाँद तारों की बोरिंग बातें मत करना..."

"बोरिंग??"

"हां मैं जानती हूँ कि तुम अब कहोगे कि मैं चाँद की तरह हूँ, उसपे दाग है, मुझपे नहीं एट्सेटरा एट्सेटरा"

"अर्रे चाँद को तो लोगों ने ऐसे ही मशहूर कर रखा है.. क्या सुंदर है उसमें ?? अपनी रोशनी तक नही है उसके पास. सूरज की उधार ले कर धरती को रोशन करता है. तुम्हें चाँद से कंपेर करना तुम्हारी सुंदरता की बदनामी करना होगा दिया.."

"हा हा हा... तुम तो बिल्कुल फिल्मी हो विवेक... मुझे नही पता था कि तुम ऐसी बातें भी कर सकते हो"

" हा हा हा... सीख के आया था यह डाइलॉग... वैसे चाँद को देखना हो तो कभी हमारे खेत से देखो, गन्ने चूस्ते हुए... ऐसा लगता है कि हम किसी और दुनिया में हैं... जहाँ सिर्फ़ हम और चाँद. जब बहुत टेंशन में होता हूँ, तो मैं यही करता हूँ"

" कभी इंडिया आई तो ज़रूर तुम्हारे खेत आऊंगी.."

" बहुत बढ़िया.. वहाँ तुम्हें दिलजीत से भी मिलवाऊंगा. बहुत अच्छा दोस्त है मेरा. मेरे दिल, जिगर, फेफड़ा, अंडकोष - तक का टुकड़ा है वो"

"छी..."

"ओह सॉरी.. में थोड़ा जज़्बात में बह गया था...."

"विवेक मुझे नींद आ रही है"

"तो मेरे कंधे पे सर रख के सो जाओ... कसम वाहे गुरु की.. ऐसी नींद कभी नही आई होगी तुमको."

"शट अप विवेक. रात बहुत हो चुकी है. अब तुम्हें भी जाना चाहिए."

"ना... मुझे तो ऐसा नही लगता... मुझे लगता है यह रात सिर्फ़ इसलिए बनी है कि हम दोनो एक दूसरे को जान पाए"

" अब मैं जा रही हू सोने.. तुम्हें जो करना है करो..."

" मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ.."

"शट अप..."

"मतलब है नीचे तक...यहाँ से कूद के तो नीचे उतरूंगा नहीं..."

" हां चलो.."

" पहले अपना फोन तो दो"

" अब क्या करना है?"

" एक मिस कॉल मारूँगा अपने नंबर पे और एक कॉल कॅब कंपनी को. मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे ख़याल दिमाग़ में रख कर मैं इतनी दूर पैदल जाऊं"

" यह लो"

विवेक ने कॅब कंपनी को कॉल किया तो मेसेज मिला के १५ मिनिट में कॅब पहुँच जाएगी. उसने दिया का नंबर अपने सेल में स्टोर किया और उसके साथ नीचे चल पड़ा

"यह नीचे की लाइट क्यूँ जल रही है.."

"पापा की लॅब है नीचे.. कुछ कर रहे होंगे.."

" अंकल डॉक्टर हैं?"

" नहीं साइंटिस्ट हैं.."

" क्या फरक पड़ता है... कोट तो दोनो ही पहनते हैं... चलो तुम भी जा के सो जाओ. मैं अंकल को बाइ करके निकलता हूँ"

" ओके... गुड नाइट... कॉलेज में मुलाक़ात होगी.."

"हां.. कॉलेज में शायद मुलाक़ात हो जाए.." विवेक ने कहा और विदा ले कर नीचे चला गया "क्या कर रहे हो अंकल"

" कुछ नही बेटा... ऐसे ही थोड़ा रिसर्च कर रहा था.."

"इतनी रात में काम... बहुत ज़रूरी है क्या..."

" काफ़ी स्ट्रेंज पज़्ज़ील है.. सुलझाने की कोशिश कर रहा हूँ... वैसे तुम्हारे घर में और कौन कौन है...."

" माँ बाप है... रिश्ते की बात करनी है तो उनका नंबर ले लेना..." कहते हुए विवेक हँसने लगा "वैसे मैं सिर्फ़ बाइ बोलने आया था. मैं जा रहा हूँ. आऊंगा कभी. फिर बता दूँगा सारी फॅमिली हिस्टरी आप को.. गुड नाइट"

" गुड नाइट बेटा.. आते रहना.. अपना ही घर समझना इसे"

" मेरे तो २ घर आ जाएँगे यहाँ... थँक यू" कहते हुए विवेक बाहर निकल गया. टॅक्सी आ गयी थी. वो उसमें बैठ गया और उसको हॉस्टिल का अड्रेस दे दिया

प्रतिक ने फोन रखा तो वो बहुत हाफ़ रहा था. एक जगह से दूसरी जगह उड़ के जाने में सच मुच उसकी बहुत एनर्जी खरच हो रही थी. उसको लग रहा था कि वो अभी नही उड़ पाएगा और. वो थोड़ी देर छत पे बैठ कर अपनी एनर्जी रिस्टोर करने लगा. अब खाली बैठा है तो उल्टे सीधे ख़याल तो आएँगे ही. वो सोचने लगा कि इतनी बड़ी दुनिया, १९ साल में आज तक उसने एक भी आदमी नही देखा था जिसके पास सूपरहीरो पॉवर हो. अब ना सिर्फ़ उसके पास पॉवर थी, पर विवेक के पास भी थी. क्या यह सिर्फ़ लक है कि ४ अजनबी प्लेन क्रॅश में बच गये और एक अंजान हेलिकॉप्टर में सेफ्ली अपनी डेस्टिनेशन पर पहुँचाए गये. क्या यह लक ही है कि उन चार में से २ लोगों के पास वो पॉवर हैं... प्रतिक का रॅशनल दिमाग़ यह मान-ने को तैयार नही था कि यह सब लक या कोयिन्सिडेन्स है. हो ना हो, कुछ कनेक्षन तो है हम चारों में - वो ऐसा सोचने लगा.

जितना ज़्यादा वो सोच रहा था, उतना ही ज़्यादा उसे यकीन हो रहा था कि वो सही है. क्या कनेक्षन है, वो नही समझ पा रहा था, लेकिन कनेक्षन है ज़रूर यह उसने डिसाइड कर लिया. "तो अगर विवेक और मेरे पास पॉवर हैं, तो हो ना हो दिया और पूजा के पास भी पॉवर होंगी. और कितने लोग हैं जिनके पास यह पॉवर हैं ?? क्यूँ यह पॉवर हमारे पास हैं?? क्या चंद्रशेखर और अरुणा जानते हैं हमारी पॉवर के बारे में या वो भी सिर्फ़ एक मोहरा ही हैं ?? क्या हमारे घर वालों को पता है कि हम नॉर्मल नहीं है ??" ऐसा वो सोचता ही रहा काफ़ी देर तक. जितनी देर वो सोचता, सल्यूशन उससे उतना ही दूर भागता. अब तो उसके दिमाग़ ने भी इस पेचीदा प्राब्लम के आगे घुटने टेक दिए. उसका सर ज़ोर से दुखने लगा. वो खड़ा हो गया और सोचा कि अब वापस हॉस्टिल जाना चाहिए. तभी उसकी नज़र नीचे गयी

नीचे गली में एक लड़की अकेली जा रही थी. उसके हाथ में पर्स और कुछ सामान था. गली बिल्कुल सुनसान थी और वो लड़की भी आराम से चले जा रही थी. शायद उसने थोड़ी पी हुई थी क्यूंकी उसकी चाल रह रह कर एक ग़लत कदम लेती थी. तभी एक आदमी उस लड़की के पास आया और उसका बॅग छीन के भागने लगा. प्रतिक पहले से ही सूपरहीरो की तरह फील कर रहा था. अब तो उसका सुपरमैन बनने का टाइम आ ही गया था. उसने

आव देखा ना ताव, बिल्डिंग से नीचे कूद गया और उड़ता हुआ उस आदमी से जा टकराया और आदमी और बॅग लेकर आगे उड़ गया. थोड़ा दूर चलने पर उसने आदमी को छोड़ दिया जो रोड पे गिर गया. प्रतिक भी नीचे उतर आया और आदमी को जा के २ पंच मार दिए. वो दर्द से कराह रहा था. शायद उसकी टाँग टूट गयी थी. फिर किसी हीरो की तरह प्रतिक वापस मुड़ा और उस लड़की की तरफ चलने लगा. उसको लगा कि उड़ के जाने से थोड़ी ज़्यादा हीरोगिरी हो जाएगी.

वो अभी १०-१२ कदम ही चला था कि ज़ोर से गोली चलने की आवाज़ आई. उसके हाथ से वो बॅग छूट गया और कंधे में तेज़ दर्द होने लग गया. उसने अपना बाया हाथ जब दायें कंधे पे रखा तो उससे कुछ चिपचिपा सा महसूस हुआ. उसने गौर से देखा तो उसके कंधे में से खून निकल रहा था. उस का सर चकराने लगा और वो नीचे गिर गया. गिरते हुए उसने देखा कि सामने से वो लड़की भागी हुई उसके पास आ रही है और साइड से ४ बदमाश और आ रहे हैं.

उसने उठने की कोशिश करी पर उठ ना सका. उड़ने की कोशिश करी पर कंधे में दर्द होने के कारण वहाँ भी कॉन्सेंट्रेट ना कर पाया. तभी वो लड़की उसके पास आ गयी

"ओह माइ गॉड... प्रतिक.. क्या ज़रूरत थी यह करने की"

"पूजा... वो.. गन... वहाँ... ४.." प्रतिक के मूह से शब्द भी नही निकल रहे थे. पूजा ने तभी देखा कि ४ और बदमाश टाइप लोग पीछे से आ के उन दोनो को घेरने लगे. २ और लोग जा कर उस गिरे हुए गुंडे की मदद करने लगे.

"देखो जो तुम्हें चाहिए, तुम ले लो. बस हमे छोड़ दो"

"तुम्हारे साथी ने हमारे आदमी को चोट पहुँचाई है... अब तो हम तुम दोनो को ऐसे नही जाने दे सकते. तुम्हारा सारा समान तो हम लूटेंगे ही, साथ में तुम्हारी जान भी लेंगे... पता चला कल को पोलीस ले कर आ गये तुम दोनो हमारी पहचान करने"

"ऐसा कुछ नही होगा, मैं वादा करती हूँ.. ऐसा कुछ नही होगा"

"हाहाहा.. पता नहीं क्यूँ तुम्हारे वादे पे यकीन नही आता... पहले इसको मारूँगा.. फिर हम लोग तेरी इज़्ज़त लूटेंगे, फिर तू मरेगी... पकड़ लो इन दोनों को और ले चलो अड्डे पे" लगभग साडे ६ फीट की हाइट वाले उस बंदे ने बोला. बोलने के तरीके से वो इन लोगों का बॉस लग रहा था.

"बॉस लड़के का एक्सट्रा बोझ क्यूँ उठा के चलें? इसे यहीं पे मार के छोड़ देते हैं... अपने आप कल किसी को मिल जाएगी बॉडी" एक बंदे ने बोला

"बात तो तेरी ठीक है. चल इसको यहीं पर ख़तम कर देते हैं" कहते हुए बॉस ने उंगली ट्रिग्गर पर रख दी... वो ट्रिग्गर दबाना चाह रहा था पर दबा नही पा रहा था अपना पूरा ज़ोर लगाने पर भी.

"मैने तुम्हें बोला था कि हमे छोड़ दो... तुम्हें मेरी बात मान लेनी चाहिए थी... अब बहुत देर हो गयी..." पूजा ने कहा

उस बॉस ने देखा कि उसके तीनो आदमी जो पूजा को पकड़े हुए थे, अगले ही पल उड़ के अलग अलग दिशाओं में जा गिरे. उसने हड़बड़ा के गन पूजा के उपर तान दी लेकिन अभी भी उससे ट्रिग्गर नही दब रहा था... "तूने कहा था ना कि अगर तूने हमे ज़िंदा छोड़ दिया तो तुझे डर है कि हम कल को तुझे पहचान लेंगे... मुझे भी इसी बात का डर है... इसलिए मैं तुम्हें ज़िंदा नही छोड़ सकती" पूजा बोली और इशारे से ही "बॉस" को हवा में उठा लिया. डर के मारे उस आदमी का बुरा हाल हो रहा था. वो समझ नही पा रहा था कि आज किस से टकरा गया है. लेकिन इतना समझ गया था कि आज उसका बच निकलना असंभव था. मौत उसको अपने सर पर तांडव करती हुई दिख रही थी... एक तेज़ चुभन उसको हुई और फिर कुछ भी महसूस होना बंद गया.

पूजा ने उस निर्जीव शरीर को दूर फेंका और बाकी तीनो के उपर कॉन्सेंट्रेट करने लग गयी. वो सोचने लगी कि ऐसा क्या किया जाए कि किसी को शक ना हो कि यह मर्डर है... एक पल में ही उससे आइडिया आ गया... उसने एक एक कर के उन सब आदमियों को हवा में उठा लिया... वो उनको तब तक उड़ाती रही जब तक वो बिल्डिंग की हाइट तक नही पहुँच गये. फिर उसने एक एक कर के उन तीनो को रिलीज कर दिया. इतनी उँचाई से ज़मीन पर टकराते ही उनके सर से खून का फव्वारा छूटने लगा और भेजा इधर उधर गिर गया.

वो बाकी बचे ३ लोगों को ढूँढ रही थी कि तभी पोलीस साइरन की ज़ोर ज़ोर से आवाज़ आने लगी. उसकी पहली इन्स्टिंक्ट थी कि अपना सारा समान उठा के भाग जाए. लेकिन तभी उसने सोचा कि उसको प्रतिक को ऐसे छोड़ कर नही जाना चाहिए. क्या पता इसने क्या देखा है और पोलीस के सामने क्या बक दे... और तो और, यह धोखा नही था कि पूजा को लगा कि प्रतिक बिल्डिंग के उपर से कूदा और उड़ कर उस आदमी से जा टकराया. उसने इधर उधर नज़र दौड़ाई तो एक पार्क्ड कार दिखी... उसने अपनी पॉवर से उसके डोर्स खोलें और प्रतिक को उसके अंदर डाल दिया... फिर उसने अपना सारा सामान समेट के कार में रखा.. यह सब करने में उसको सिर्फ़ २ पल ही लगे थे. कार में बैठ कर उसने देखा कि उसमें चाबी नही है, और होती भी क्यूँ... उसने फटाफट से कार को हॉटवाइर किया और फुल स्पीड में वहाँ से निकल गयी...

१० मिनिट तक १०० की स्पीड से चलाने के बाद ही उसे साँस आई... अब वो सोचने लगी कि आगे क्या किया जाए. प्रतिक को वो हॉस्पिटल ले कर जा नही सकती थी. वहाँ पे उसको बहुत सारे सवालों का जवाब देना पड़ता. उस ने डिसाइड किया कि वो उसको अपनी आंटी के यहाँ ले जाएगी. आंटी और अंकल छुट्टियाँ के लिए बाहर गये हैं तो घर पे कोई होगा नहीं, और चाबी पूजा के पास थी ही... उसको यह आइडिया बहुत ही अच्छा लगा और उसने वो गाड़ी घुमा ली... थोड़ी और दूर जाने पर उसे रियलाइज़ हुआ कि यह कार चोरी की है और जीपीएस से आराम से ट्रॅक किया जा सकता है और इन दोनों को पकड़ा भी जा सकता है. यह ख़याल दिमाग़ में आते ही उसने कार एक जगह पार्क कर दी. फिर उसने एक टॅक्सी ली और प्रतिक को किसी तरह से उसमें लादा. थोड़ी ही दूर जाने पर उसने चोरी की कार में भी आग लगा दी ताकि पोलीस चाह के भी उस तक ना पहुँच पाए. वो इतने सालों से क्राइम वर्ल्ड में आक्टिव थी कि यह सारी सावधानियाँ बरतना उसके लिए नॅचुरल हो गया था

पूजा ने प्रतिक को घर में ले जा कर सीधा बाथ टब में बैठा दिया और उसका घाव धोने लगी. प्रतिक बेहोश ही था. शायद खून ज़्यादा बह जाने के कारण. पूजा ने आंटिसेपटिक ढूँढा और प्रतिक के घाव को सॉफ करने लगी और उसके बाद अच्छी तरह से पट्टी कर दी. अब प्रतिक बीच बीच में कुछ बोल रहा था लेकिन पूजा के समझ में नही आ रहा था कि वो बोल क्या रहा है. प्रतिक का जिस्म बुखार से तप रहा था. पूजा ने उसको एक पेरासीटामोल और एक पेन किल्लर भी दे दी और उसको बिस्तर पे लेटा दिया. पूजा को टेंशन हो रही थी कि कहीं प्रतिक को कुछ हो ना जाए. वैसे तो प्रतिक से उसका कोई लेना देना नहीं था पर अगर उसको कुछ हो जाता है तो वो उम्र भर अपने आप को माफ़ नही कर पाएगी कि एक

आदमी उसको बचाते हुए मारा गया. अगर वो पहले ही अपनी पॉवर से उस गुंडे को रोक लेती तो शायद प्रतिक नीचे ना कूद ता और अभी तक ठीक होता.

"पानी.. पानी" प्रतिक ने बुदबुदाया. पूजा झट से उसके लिए पानी ले आई और थोड़ा थोड़ा कर के उसको पिलाने लगी. थोड़ा सा पानी पी के प्रतिक फिर बेहोश हो गया. पूजा भी बिस्तर पर उसके पास ही लेट गयी और उसे कब नींद आ गयी, उसे पता ही नही चला. थोड़ी देर में उसकी नींद फोन की घंटी से टूटी. प्रतिक का फोन बज रहा था. उसने फोन निकाला तो देखा विवेक का कॉल है. वो सोचने लगी कि फोन उठाया जाए या नहीं कि तभी फोन कट गया. एक पल बाद वापस फोन बजने लग गया विवेक के कॉल से. पूजा को लगा कि विवेक आराम से नही मानेगा इसलिए उसने फोन उठा ही लिया.

"अबे कहाँ है साले... मुझे वहाँ छोड़ कर खुद रफूचक्कर हो गया... अब दरवाज़ा नही खोल रहा"

"हेलो"

सामने से लड़की की आवाज़ सुनकर विवेक चौंक गया. "हाई. मैं विवेक बोल रहा हूँ. आप कौन" उसको लगा कि रॉंग नंबर है, पर जब लड़की सामने हो तो फोन क्यूँ रखा जाए.

"रॉंग नंबर" पूजा बोली

"अच्छा ठीक है रॉंग नंबर है तो.. पैसा तो मेरा कट रहा है.. तुम अपना नाम तो बताओ"

"किससे बात करनी है तुम्हें?"

"मेडम अब नंबर आपका लगा है तो आप ही बात कर लो... "

"इतनी रात में तुम्हें कोई काम नही है?"

"काम तो तुम्हें भी नही लग रहा... ऐसे ही टाइम पास कर रही हो.. नाम बता देती तो ठीक होता"

"शट अप." कहके पूजा ने फोन काट दिया.

"यह कैसा नाम है... हेल्लू.. हेलो.... अबे फोन मत काटो यार... " जब सामने से फोन कट गया तो विवेक थोड़ा उदास सा हो गया... उसके साथ ही ऐसा क्यूँ होता है... क्या जा रहा था उस लड़की का थोड़ी देर बात करने में.... उसको लगा कि प्रतिक शायद सो रहा होगा, इसलिए वो भी अपने कमरे में जा कर सो गया.

# १५

सुबह जब विवेक उठा तो फिर लेट था. गनीमत थी कि वो रात को कपड़े बदले बिना सो गया था... तो वो फटाफट से टॉयलेट गया और मूह धो के, बॅग कंधे पे टाँग कर निकल पड़ा. बदक़िस्मती से जब वो कॉलेज पहुँचा तो क्लास स्टार्ट हो चुकी थी.

"एक्सक्यूस मी मॅम.. मे आइ एंटर?"

"नो यू मे नोट. रोज़ रोज़ लेट आने की आदत है क्या?"

"मॅम वो लूज मोशन लग गये हैं यहाँ के खाने से, इसलिए लेट हो गया" विवेक ने झूट बोला और सारी क्लास हंस पड़ी.

"शट अप. तुम्हें सिर्फ़ बहाने बनाना आता है... तुम मेरी क्लास में लेट नहीं घुस सकते. स्टे आउट"

"अर्रे मेडम थोड़ी तो दया करो. टाइम डिफरेन्स देखो इंडिया और कॅनडा का... इतनी जल्दी कैसे कोई आदमी अड्जस्ट हो सकता है?"

"बाकी लोग भी तो हैं... उन्हें तो कोई प्राब्लम नही हुई..."

"मेडम आज के लिए माफ़ कर दो प्लीज"

"नो... स्टे आउट"

"मेडम प्लीज"

"मेरी बात ध्यान से सुनो. इस लेक्चर में या तुम रहोगे, या मैं... जल्दी डिसाइड करो.."

"मेडम एक आइडिया है... आप स्लाइड्स को ऑटो टाइमर पे लगा दो.. मैं बैठ जाता हूँ, आप बाहर से लेक्चर देते रहना" जब विवेक ने देखा कि टीचर की आँखें गुस्से में लाल हो रही हैं तो "सॉरी आइ वाज़ जोकिंग.. जा रहा हूँ मैं" कह के वो निकल गया. उसने सोचा कि

कँटीन में बैठ कर थोड़ा नाश्ता कर लेगा अगली क्लास तक.. वो कँटीन जा ही रहा था कि उसको सामने से दिया आती हुई दिखाई दी."हाई दिया क्या हाल चाल है... लेट हो गयी क्या?"

"नहीं.. मेरी क्लास शुरू होने में १० मिनिट हैं.. क्लास के बाद मिलते हैं"

"आओ कँटीन चलते हैं." उसने दिया का हाथ पकड़ के कहा

"विवेक मेरी क्लास है. हाथ छोड़ो मेरा.. मुझे जाना है.. तुम क्लास में क्यूँ नही हो"

"अर्रे क्या रखा है ऐसी क्लास में.. उल्टा सीधा पढ़ा रही थी टीचर, उठ के बाहर आ गया मैं"

"मतलब तुम्हें बाहर निकाल दिया गया क्लास से"

"तुम्हारी कसम.. मुझे बाहर नही निकाला क्लास से"

"फिर तुम यहाँ क्या कर रहे हो.."

"मुझे क्लास में घुसने ही नही दिया.. आक्च्युयली टीचर मेरी नालेज से जलती है.. चलो ना कँटीन प्लीज... थोड़ा साथ में रहेंगे... पढ़ाइयाँ तो होती रहेंगी" विवेक ने दिया को खीचते हुए बोला

"विवेक मैं क्लास मिस नही करूँगी. आइ म लीविंग."

"तुम्हारी क्लास १० मिनिट पहले शुरू हो चुकी है.. मैने ही तुम्हारी फ्रेंड को कल बोला था तुम्हें ग़लत टाइम मेसेज करने को" विवेक ने अंधेरे में तीर छोड़ा

"व्हाट!!! तुम ऐसा कैसे कर सकते हो... कितनी इंपॉर्टेंट क्लास है पता है तुम्हें?"

"ना मुझे तो कुछ नही पता... मैं तो एक गवार आदमी हूँ जो अभी क्लास में ही बैठा है... रोने से कोई फ़ायदा नहीं. चलो कँटीन". दिया ने विवेक की बात का विश्वास कर लिया और दोनो गप्पे मारते हुए कँटीन की ओर चल दिए

# १६

"विवेक... विवेक को बुलाओ...." प्रतिक ने बदहवासी में बोला..

"क्या प्रतिक.. क्या हुआ..." पूजा की नींद टूटी और वो झट से प्रतिक के पास हो ली... उसने चेक किया तो प्रतिक का माथा एकदम गरम था. शायद दवाई ने असर नही किया था

"विवेक को यहाँ बुलाओ..."

"अर्रे क्या करेगा वो यहाँ आ कर.. और दिमाग़ खाएगा तुम्हारा. आइ विल मेक श्योर दट यू आर अलराइट" पूजा ने कहा

"विवेक को बुलाओ..." प्रतिक ने एक बार और बोला और बेहोश हो गया. पूजा सोचती रही कि क्या उसे विवेक को फोन करके बुलाना चाहिए या खुद ही प्रतिक की देखभाल करनी चाहिए. अंत में उसने डिसाइड किया कि विवेक को बुला ही लेना चाहिए. वो इन्सिडेंट में इन्वॉल्व्ड नही था और शायद आराम से प्रतिक को हॉस्पिटल ले जाए. यह सोचते ही उसने प्रतिक का फोन उठाया और विवेक को मिला दिया

"हां तो उस दिन रात को दिलजीत ने ट्रॅक्टर चुरा लिया..." विवेक ने सँडविच का एक बड़ा बाइट लिया और दिया को किस्सा सुनाने लगा...तभी उसके फोन की घंटी बज गयी..."हां प्रतिक"

"दिस ईज़ पूजा.."

"ओह्ह.. कल रात को तुमने फोन उठाया था जब मैने कॉल किया था... तुम और प्रतिक...."

"प्रतिक का एक्सीडेंट हो गया है... यह अड्रेस लिखो और जल्दी से यहाँ पर पहुँच जाओ..."

"व्हाट... जल्दी दो अड्रेस. " विवेक जल्दी जल्दी अपनी कॉपी में अड्रेस नोट करने लगा और फोन रख दिया. "सॉरी दिया.. मुझे जाना पड़ेगा." उसने दिया को कारण बताना मुनासिब नही समझा.

"व्हाट डू यू मीन जाना पड़ेगा... तुमने मेरी क्लास मिस करवाई और अब तुम मुझे छोड़ के जा रहे हो??"

"मैने झूठ बोला था ऑलराइट... तुम्हारी क्लास शुरू होने में अभी भी १ मिनिट रहता है... अगर तुम भाग के जाओगी तो पहुँच जाओगी.. मुझे अर्जेंट काम आ गया है... आइ हॅव टू रश..."

"व्हाट अन आस यू आर" दिया ने कहा और अपनी बुक्स उठा के क्लासरूम की तरफ भागी... विवेक भी भागते हुए मेन रोड तक पहुँचा और एक टॅक्सी ले कर, पूजा के बताए अड्रेस की तरफ रवाना हो गया

विवेक पूजा के बताए पते पर पहुँच गया. उसको बहुत हैरानी हुई यह देख कर कि वहाँ एक घर है. उसको लगा कि एक्सीडेंट के बाद पूजा प्रतिक को ले कर हॉस्पिटल गयी होगी. उसने घर की घंटी बजाई. घंटी की आवाज़ सुनकर पूजा की नींद टूटी. पहले उससे लगा कि उसकी आंटी वापस आ गयी हैं.. फिर उससे याद आया कि उसने विवेक को कॉल किया था. वो जल्दी से उठी और जा कर दरवाज़ा खोल दिया.

"कहाँ है प्रतिक?"

"वो वहाँ कमरे में है. चलो मेरे साथ"

"कैसे हुआ एक्सीडेंट?"

"कल रात को हम दोनो घूम रहे थे, तभी शायद कोई गँगवार हुआ और एक गोली प्रतिक को लग गयी"

"व्हाट!!! प्रतिक को गोली लगी है... तुम उसे हॉस्पिटल क्यूँ नही ले कर गयी?? आर यू मॅड?? कितने बजे हुआ यह हादसा"

"कल रात लगभग ९ बजे.."

"पर उस वक़्त तो प्रतिक मेरे साथ था... तुम मुझसे कुछ छुपा रही हो पूजा.."

" मैं तुमसे क्या छुपाउंगी... और तुम आते ही मेरा इंटरव्यू क्यूँ लेने लगे... प्रतिक की हालत ठीक नही है"

"मुझे पता नही तुम क्या छुपा रही हो.. लेकिन कुछ तो है... बताओ मुझे तुम हॉस्पिटल क्यूँ नही ले कर गयी..."

"इतना खून देख के मैं डर गयी थी... आइ डोंट लाइक ब्लड"

"अच्छा डर गयी तही... इसलिए उससे घर पर ले आई और उसकी पट्टी खुद ने करी..." प्रतिक के पास बैठकर विवेक बोला.

"पूजा मुझे बता दो कि क्या छुपा रही हो..."

"विवेक मेरा दिमाग़ नही चल रहा था. मुझे पता था कि अगर हम हॉस्पिटल जाते तो वहाँ पोलीस केस होता जिसमें और टाइम लगता.. उपर से गोली बारी में मौतें भी हुई हैं.. कहीं पोलीस हमे ज़िम्मेदार मानती तो"

विवेक को पता था कि पूजा जितना मूरख होने का नाटक कर रही है, उतनी मूरख है नही. लेकिन इस समय उसने पूजा से बहस ना करना ही मुनासिब समझा. वो प्रतिक के पास बैठ गया और कॅब को फोन किया.

"कहाँ जा रहे हो इससे इस हालत में ले कर"

"हॉस्पिटल ले जा रहा हूँ... इसका शरीर बुखार से तप रहा है... घाव से खून भी बह रहा है... इसको मारने का इरादा है क्या तुम्हारा..."

"अभी इसको सोने दो... मुझे लगता है कि यह ठीक हो जाएगा..."

"पूजा यह कोई खरोंच नही है जो अपने आप ठीक हो जाएगी. मुझे इसे हॉस्पिटल ले कर जाना ही पड़ेगा... कहीं इसकी जान ना चली जाए..."

"ठीक है जैसा तुम्हारा मन करता है तुम करो... ले जाओ इससे हॉस्पिटल" तभी कॅब आ गयी और विवेक ने प्रतिक को अपनी गोद मैं उठा लिया..

"चलो दरवाज़े खोलो जल्दी... मुझे नहीं लगता ज़्यादा देर तक इसे उठा पाऊंगा..." अब विवेक को रीयलाइज़ हो रहा था कि कैसे प्रतिक उसे उठा के इतनी देर तक उड़ता रहा... "अबे कार का दरवाज़ा भी खोल मूरख... छत पर रख के ले जाऊंगा क्या इसे"झल्लाते हुए उसने पूजा से बोला जिसको सुनते ही पूजा ने फटाफट दरवाज़ा खोल दिया... "तुम आगे बैठ जाओ.. मैं इसके साथ पीछे बैठ जाता हूँ"

"मैं नही आ रही विवेक. तुम जाओ..."

"व्हाट..." हैरानी में भर के विवेक ने बोला.. "चलो तुम्हारी मर्ज़ी.. मैं ले कर जाता हूँ इसे. अपना नंबर दे दो. ज़रूरत पड़ने पर फोन कर दूँगा..."

"मैने तुम्हें बोला ना कि मुझसे खून नही देखा जाता... चलो नंबर लिखो मेरा.." और पूजा ने अपना नंबर विवेक को बता दिया और कार के जाते ही मूड कर वापस घर में चली गयी... उसको मेन डर बस पोलीस का ही था. उसे डर था कि अगर किसी तरह से भी पोलीस ने उस पर शक किया और उसको प्रेशराइज किया, तो कहीं वो फिर कोई खून ख़राबा ना कर बैठे. इन सारी चीज़ों से बचने के लिए ही उसने हॉस्पिटल जाने से इनकार किया था. अब जब वो शांति से घर में आ कर बैठी तो उसका दिमाग़ तेज़ी से काम करने लगा.

"तो प्रतिक उड़ सकता है".. उसने मन ही मन कहा... मतलब कहीं ना कहीं उसके पास भी कुछ पॉवर हैं. आज तक पूजा समझ रही तही कि सिर्फ़ उसी के पास ऐसी पॉवर हैं, पर इस घटना ने उसको सोचने पर मजबूर कर दिया. जिसको आज तक वो एक रँडम आक्ट ऑफ नेचर समझती थी, वो उतना रँडम नही था मतलब. हो सकता है और लोगों के पास भी पॉवर हो. कहीं उन चारों के पास तो पॉवर नही हैं जो उस हेलिकॉप्टर में आए थे. मतलब चंद्रशेखर और अरुणा भी इस चीज़ में इन्वॉल्व्ड हैं. उसको इस बात पे पहले ही शक था. इसलिए उसने अपने पेंडेंट में लगे कमेरे से उनकी तस्वीर उतार ली थी. अब उसने वो तस्वीरें अपने लॅपटॉप पे डाउनलोड करी और उन दोनो की असलियत ढूँढने का ट्राइ करने लग गयी.

दूसरी तरफ दिया का भी मन नही लग रहा था क्लास में. उसको रह रह कर विवेक पे गुस्सा आ रहा था. जब प्रोफेसर ने उसको ध्यान ना देने के लिए टोका, तो वो खुद ही उठ के बाहर हो ली. वो चलते चलते बस विवेक के बारे में ही सोच रही थी कि ऐसा क्या हो गया जो उसको क्लासस छोड़ के ऐसे भागना पड़ा... उसने विवेक को कॉल किया पर विवेक ने फोन नहीं उठाया जिससे उसकी चिंता और बढ़ गयी. वो क्लासरूम के बाहर बैठ कर, फाउंटन को देखते हुए चिंता कर रही थी कि तभी उसके कंधे पर एक हाथ आ कर लगा. चौंक के उसने पीछे देखा

"अर्रे पापा आप. आप यहाँ कैसे"

"यही सवाल मुझे तुमसे पूछना चाहिए बेटी.. बाहर कैसे.. क्लास से बाहर निकाल दिया तुम्हें?"

"नही पापा वो थोड़ी तबीयत ठीक नही थी..."

"हां हां रहेगी भी कैसे जब इतनी रात में दोस्तों से बात करती रहोगी"

"आपने यह नही बताया कि आप यहाँ कैसे..."

"वो थोड़ा रिसर्च का काम देखने आया था... अब ट्रस्टी भी हूँ तो इंशुअर करना पड़ता है कि सही जगह पैसा डाल रहा हूँ. वैसे विवेक कहाँ है"

" वो ज़रा... पता नहीं... दिखा नहीं सुबह से..."

"और वो बाकी २ लोग जो तुम्हारे साथ थे हेलिकॉप्टर में... तुमने बताया था कि वो भी इसी कॉलेज में हैं..."

"हां.. पर आज वो भी नही दिख रहे..."

"अच्छा.. मिलो उनसे तो उनको कहना कि कभी घर आया करें... ऐसा करो.. उन सब को फ्राइडे नाइट डिन्नर के लिए बुला लो.. तुम्हारी मम्मी भी खुश हो जाएँगी कि घर पे कोई आ रहा है..."

# INDIAN BEST TELEGRAM ADULT (18 ) CHANNELS

## हिंदी Adult स्टोरी, Adult कॉमिक्स, सबसे अनूठे देसी मस्ती भरे XXX वीडियोज, हिंदी एडल्ट शायरिया, फन्नी एडल्ट जोक्स का अनूठा संगम..!! 🔞💯

(*Top To Click Here Join*)

**X Night Clubs**

*Click Here*

**Adult Comics Club**

*Click Here*

**Adult Shayari & Stories**

*Click Here*

**Night Club Chat Group**

*Click Here*

**18 Vargin Girls**

*Click Here*

"हां ज़रूर पापा.. मैं बुला लेती हूँ" दिया ने खुश होते हुए कहा.

"चलो ठीक है मैं चलता हूँ फिर. घर पे ही मुलाक़ात होगी" कहकर उन्होने विदा ली और चल दिए

उधर विवेक की हालत पतली थी. प्रतिक को इस हाल में देख कर उसको बहुत बुरा लग रहा था और यह ही लग रहा था कि वो ही इस हालत का ज़िम्मेदार है.. ना ही कल वो ज़िद्द करता और ना ही प्रतिक उसे दिया के घर ले जाता और ना ही यह हादसा होता. लेकिन इन सब के बीच वो नकचड़ी पूजा कहाँ से आ गयी... वो कैसे घुस गयी बीच में और क्या उसने प्रतिक को उड़ते हुए देख लिया था जिसके कारण वो उसे हॉस्पिटल नही ले कर गयी... विवेक अभी सोच में डूबा ही हुआ था कि प्रतिक को थोड़ा सा होश आया...

"विवेक....विवेक.."

"हां भाई बोल... मैं यहीं हूँ"

"खून... खून..."

"हां हॉस्पिटल ले कर जा रहा हूँ तुझे.. महेंगे वाले में जा रहे हैं.. अच्छा सा खून चढ़ा देंगे वो तुझे..."

"विवेक तेरा खून दे..."

"अबे तू मेरा खून पीएगा... पहले कम जल रहा है यह जो अब तू भी चूसेगा.... क्या बके जा रहा है..."

"विवेक तेरा खून...." कह कर प्रतिक फिर बेहोश हो गया...

विवेक को समझ ना आ रहा था कि दिया का फोन उठाया जाए या नहीं. उठा लिया तो उसको भी प्रतिक के बारे में बताना पड़ेगा. इस बात को जितने कम लोग समझे उतना ही अच्छा है. दूसरी तरफ दिया का बाप साइंटिस्ट था तो लोगों को जानता भी होगा. हो सकता

है वो इस मामले को दबाने में कुछ हेल्प कर दे. उसने सोचा के सुट्टा मारते हुए इस बात पर सोचता है.

"भाई गाड़ी साइड में लगाना ५ मिनट के लिए"

"सर आपको हॉस्पिटल नही जाना?"

"जाना है.. ५ मिनट रोक साइड में कहीं सिगेरेट बूथ पे जहाँ मैं खड़ा हो कर सुट्टा मार सकूँ"

"सर मुझे लगता है कि आपको पहले हॉस्पिटल लेके जाना चाहिए अपने दोस्त को"

"ओये तेरे को पूछ कौन रहा है... दोस्त मेरा, टेंशन तुझे हो रही है"

"सर लेकिन टॅक्सी तो मेरी है ना..."

"अबे तो खा थोड़ी रहा है यह तेरी टॅक्सी... ५ मिनट में मरेगा नही.. फिकर ना कर तू"

ड्राइवर ने एक बूथ के पास गाड़ी रोक दी और विवेक चला गया सुट्टा मारने. सुट्टा मारते हुए वो यही सोच रहा था कि कैसे वो यह सब मामला भी ठीक कर दे और दोनो की पॉवर्स की बात भी किसी को ना पता चले. "पावर्स.... अर्रे शायद तभी प्रतिक को मेरा खून चाहिए था... हां यही कारण होगा.. रिस्क है लेकिन ट्राइ कर सकते हैं" उसने सोचा, जल्दी से अपना सुट्टा ख़तम किया और टॅक्सी में बैठ गया.. "भाई ऐसा कर.. हॉस्पिटल का प्रोग्राम कॅन्सल.. यह अड्रेस हैं, यहाँ पे चल" उसने अपने हॉस्टिल का अड्रेस बताते हुए ड्राइवर को बोला

"सर हॉस्पिटल नही जाना क्या"

"अर्रे मैं तुझे बोल रहा हूँ ना.. क्यूँ पगला रहा है... जैसा कहता हूँ, वैसा ही कर"ड्राइवर का माथा थोड़ा ठनका लेकिन वो भी क्या कर सकता था. उसने गाड़ी घुमाई और विवेक के दिए अड्रेस पर चल पड़ा. थोड़े टाइम वो हॉस्टिल पहुँच गये. विवेक ने प्रतिक को गाड़ी में से निकाला और उसको उठा के हॉस्टिल की तरफ चला गया. उसने देखा नहीं कि पीछे से

ड्राइवर ने फोन उठा के पोलीस को फोन लगा दिया है. ड्राइवर को शक था कि मरीज़ के साथ जो भी हुआ है उस लड़की और विवेक ने ही मिल के किया है और यह डर था कि कहीं प्रतिक मर ना जाए. इसलिए उसने फोन किया पोलीस को और बता दिया कि वो कहाँ पे खड़ा है और उसको क्या शक है.

इस सब से अंजान विवेक प्रतिक को अपने कमरे में ले आया. उसने उसको बिस्तर पे लिटाया और उसको होश में लाने की कोशिश करने लगा. जब काफ़ी देर तक उससे होश नही आया तो विवेक ने सोचा कि किसी तरह से ऐसे ही खून प्रतिक के अंदर पहुँचाना होगा. वो उसने चाकू से अपनी उंगली काटी और प्रतिक का मूह खोल के काफ़ी देर तक बार बार उंगली पे चीरा लगा के खून उसके मूह में टपकाने लगा. जब ५ मिनट में प्रतिक को होश नही आया तो विवेक ने उसकी पट्टियाँ खोल दी. उसने देखा कि गोली अंदर नही फसि हुई. शायद कंधे को छू कर निकल गयी थी. उनसे अपना थोड़ा खून उसके कंधे पर भी टपकाया लेकिन फिर भी कुछ असर नही हुआ... उल्टा खून और बहे जा रहा था. विवेक को लगा कि हॉस्पिटल ही जाना ठीक होगा. फिर भी एक बार उसने आख़िरी ट्राइ करने की सोची. वो अपने रूम से बाहर आया और अपने विंग के डॉक्टर वाले रूम में चला गया. किस्मत से वहाँ पे डॉक्टर नही था. उसने थोड़ी ड्रॉयर्स टटोली तो उसको एक नीडल और सरिंज मिल गयी. उसने वो फटाफट से अपनी जेब में डाल ली और वापस अपने रूम में आ गया. उसने नीडल को सरिंज में लगाया और अपनी नस में घुसा कर उसमें खून भर लिया. फिर उसने प्रतिक के हाथ की नस ढूंढी और गले की नस ढूंढी और दोनो में आधी आधी सरिंज खून डाल दिया और वेट करने लगा. तभी उसके दरवाज़े पे दस्तक हुई. उसने उठ कर दरवाज़ा खोला तो सामने २ पोलीस वाले, वॉर्डन और वो टॅक्सी ड्राइवर खड़ा था.

"यही है क्या.." पोलीस वाले ने ड्राइवर से पूछा

"हां यही है.."

"क्या हुआ सर.. कोई प्राब्लम है क्या..." विवेक ने डरते हुए इनस्पेक्टर से पूछा.

"वो तो तुम ही बता सकते हो हमें. इस टॅक्सी वाले का मान-ना है कि तुमने अपने दोस्त को मारने की कोशिश करी है और हॉस्पिटल तक नही ले गये"

"अर्रे आप भी कैसे कैसे लोगों की बातों में आ जाते हैं... ऐसा कुछ नही है... अपना काम करिए जा के"

"तुम हमे मत समझाओ कि हमारा काम क्या है.. वॉचमन ने भी तुम्हें एक लड़के को अंदर लाते हुए देखा है.. हमे तुम्हारा कमरा चेक करना पड़ेगा."

"ऐसे कैसे करना पड़ेगा... तुम्हारे ससुर का कमरा है क्या?"

"देखो बेटा, कमरा तो चेक करवाना ही पड़ेगा .. इसलिए मैं भी साथ आया हूँ" वॉर्डन ने बोला

"अर्रे आप क्या ओबामा हो कि साथ आ गये तो करवाना ही पड़ेगा कमरा चेक... सर्च वॉरेंट है आपके पास?"

"बेटा बहुत मूवीस देखते हो लगता है... इन चीज़ों के लिए कोई वॉरेंट्स की ज़रूरत नही पड़ती.. अब तुम हट ते हो या ज़बरदस्ती उठा के बाहर फेंकू तुम्हें रूम से" पोलीस वाले ने कहा. दोनो पोलीस वालों की आँखों में गुस्सा सॉफ झलक रहा था. विवेक को यकीन था कि अब वो तो फस ही गया है... जितना डिले करेगा, उतना ही प्राब्लम और होगा... इसलिए वो खुद ही हॅट गया और पोलीस वाले को अंदर जाने दिया.

इधर पूजा पूरी कोशिश के साथ चंद्रशेखर और अरुणा की असलियत जान-ने की कोशिश कर रही थी. उन इमेजस से उसने पूरी जान लगा दी उनके बारे में इंटरनेट से जानकारी निकालने में लेकिन उसको नाकामी ही हाथ लगी. जब वो हार मान-ने ही वाली थी तो उसकी नज़र एक वेबसाइट पर पड़ी जहाँ चंद्रशेखर का नाम था. उसने वेबसाइट खोली तो देखा किसी कान्फरेन्स के बारे में लिखा है जो चंद्रशेखर ने अटेंड करी थी. उस कान्फरेन्स के बारे में विस्तार से पढ़ने के बाद उससे पता चला कि यह साइंटिस्ट्स की कान्फरेन्स थी. मतलब चंद्रशेखर एक साइंटिस्ट था. उसने अटेंडीस की लिस्ट देखी तो चंद्रशेखर के नाम के आगे उसकी कंपनी का नाम भी लिखा था. उसने उस कंपनी के बारे में सर्च करना शुरू करा. उसकी वेबसाइट पर जाने के बाद उसको पता चला कि चंद्रशेखर और अरुणा वहाँ पे सीनियर साइंटिस्ट्स हैं. वो कंपनी नासा की हेल्प कर रही थी यूनिवर्स की मिस्टरीस सुलझाने में. थोड़ा और रिसर्च करने पर उसे एक वेबसाइट मिली जहाँ "सोर्सस" से मिली खबर के अनुसार यह लिखा था कि उस कंपनी ने कोई ब्रेकत्रू हासिल करी है कुछ बाहरी दुनिया के सिग्नल्स टॅप करने में. ऐसी कॉन्स्पिरेसी थियरीस पूजा ने बहुत पढ़ी थी और उसको पता था कि यह कभी सच नहीं होती. बस कोई पागल आदमी जो अपने कंप्यूटर के आगे बैठ के बोर हो गया होता है, वो ऐसी कोई थियरी निकाल देता है थोड़ा नाम कमाने के लिए. इसलिए उसने इस रिपोर्ट पर ज़्यादा ध्यान नही दिया. तभी उस की नज़र पड़ी उस रिपोर्ट की डेट पर. डेट आज से २० साल पहले की. यानी उस समय के आस पास की जब पूजा का जानम हुआ था... वो सोचने लग गयी कि क्या यह एक कोयिन्सिडेन्स है या इस रिपोर्ट में सच में कोई सच्चाई छुपी है. चंद्रशेखर और अरुणा ने उनको बताया क्यूँ नही कि वो साइंटिस्ट्स हैं? उसने प्लेन क्रॅश में हुए विक्टिम्स की लिस्ट देखी और पाया कि इन चारों के नाम पॅसेंजर लिस्ट में नही है और क्लियर्ली लिखा था कि सारे पॅसेंजर्स मर गये हैं... जैसे जैसे उसे एक्सट्रा इन्फर्मेशन मिल रही थी, यह मिस्टरी और गहरी होती जा रहही थी. उसका सर दुखने लगा और उसने कंप्यूटर बंद कर दिया. तभी उसका फोन बजा.

"हेलो"

"पूजा.. मैं दिया बोल रही हूँ.. कहाँ हो..."

"मैं.. मैं अपने रिलेटिव के घर पे हूँ..."

"अर्रे कॉलेज नहीं आई.. क्या हुआ??"

"कुछ नहीं.. बस थोड़ा सा पेट में दर्द था... बताओ कैसे फोन किया.."

"कॉलेज में पापा से मुलाक़ात हुई थी... उन्होने तुमसे, प्रतिक और विवेक से मिलने की इच्छा जताई है और फ्राइडे को डिन्नर पे इन्वाइट किया है... तुम्हें आना है..."

"देखती हूँ यार.. तबीयत ठीक हो गयी तो ज़रूर आउंगी" पूजा ने बात को टालते हुए कहा

"कुछ नही सुन-ना मुझे.. तुम्हें आना ही पड़ेगा.. बस.." कह कर दिया ने फोन काट दिया. पूजा फिर से सीधा अपने कंप्यूटर के पास गयी और कॉलेज रेकॉर्ड्स में से दिया की इन्फर्मेशन फाइल निकाली और उसके पापा की डीटेल्स पढ़ी.. उससे पता चला कि वो भी एक साइंटिस्ट हैं..."ह्म्म... मुझे लगता है यहीं से कुछ इन्फर्मेशन मिलेगी इस मिस्टरी की" पूजा ने सोचा और फ्राइडे की रात का प्रोग्राम पक्का कर लिया

"अर्रे यहाँ तो कोई नहीं है" जब अंदर से आवाज़ आई तो विवेक भी अंदर की ओर हुआ. सच मैं वहाँ कोई नहीं था. "कहाँ है वो दूसरा लड़का" पोलीस वाले ने विवेक से पूछा. अब विवेक को तो खुद ही नही पता था. अभी तो वो उसे यहीं छोड़ के गया था.

"सर यहीं होगा.. जाएगा कहाँ... अर्रे मेरा मूह क्या ताक रहे हो, बिस्तर के नीचे तो देखो" तभी टॉयलेट में से किसी के ज़ोर ज़ोर से उल्टी करने की आवाज़ आई. "अर्रे अंदर है... प्रतिक दरवाज़ा खोल.. ठीक है तू" विवेक ने दरवाज़े पे दस्तक देते हुए बोला.

"हां ठीक हूँ. रात की उतार रहा हूँ उल्टी करके... साले इतनी क्यूँ पिला देता है..."

"हां हां आराम से कर उल्टी... बाहर कुछ लोग आए हैं मिलने. ठीक हो जाए तो आ के मिल लेना"

"यार थोड़ा पेट खराब है... हल्का हो कर आता हूँ" प्रतिक ने अंदर से बोला

"एक तो आप लोग इस छोटे से कमरे में भीड़ मत बढ़ाओ... एक को रुकने दो.. बाकी सब बाहर खड़े रहो.. मैं तो समझता हूँ कि रुकने की ज़रूरत किसी को भी नही है.. आवाज़ सुन ली है, अब चलते बनो" पलट कर विवेक ने बोला.

"नही ऐसा नही हो सकता. चेक तो करना ही पड़ेगा. मैं अंदर रुकता हूँ. बाकी सब लोग बाहर जा रहे हैं.. वैसे तुम इतनी टेंशन में क्यूँ हो ..."

"मुझे किस चीज़ की टेंशन होने लगी अब... मेरी बला से.. यहाँ रूको, सब चेक करो.. कहो तो प्रतिक को बोल दूं कि फ्लश ना करे, रंग भी चेक कर लेना अंदर जा के" खीजते हुए विवेक ने कहा और अपने बिस्तर पर लेट गया. पास पड़ी कुर्सी पे पोलीस वाला बैठ गया और इंतेज़ार करने लगा.

"कमरा बहुत गंदा रखते हो तुम..." वो विवेक से बोला

"तो तुम्हें यहाँ आ कर रहना है क्या .. या तुम्हें सॉफ करना है.. यार क्यूँ दिमाग़ की दही करते हो.. बस चुप चाप बैठे रहो और मेरे दिमाग़ को भी शांति दो" विवेक ने अपनी आँखें बंद कर ली. सुबह से टेंशन में इधर उधर भागते हुए वो भी थक गया था. "अबे प्रतिक किला फ़तेह कर रहा है क्या अंदर.. एक बार रोक के बाहर आ जा... तेरा थोबड़ा देखने के लिए बैठे हैं इनस्पेक्टर साहब. पसंद आया तो लड़की का रिश्ता करवाएँगे अपनी"

तभी दरवाज़ा खुला और प्रतिक टॉयलेट से बाहर आ गया...शर्ट उसने पहनी नही हुई थी और उसके शरीर पे कोई भी घाव नही दिख रहा था. "हां जी. बोलो.. क्या काम है.." उसने इनस्पेक्टर की तरफ देखते हुए कहा

"मुझे बस चेक करना था कि आप सही सलामत हैं कि नहीं"

"चेक कर लिया ना.. अब निकलो... खाने के लिए बैठे हो क्या यहाँ अभी.." विवेक फिर बीच में कूदा

"तुम्हें क्या तकलीफ़ हो रही है?? यह मेरी ड्यूटी है और मुझे करनी है.. मुझे भी तुम्हें देख कर कोई ज़्यादा खुशी नही हो रही ना ही कोई इंटेरेस्ट है तुम में कि यहाँ बैठा हूँ. कंप्लेन हुई है तुम्हारे खिलाफ, तो मामले की तह तक पहुँचना मेरा फ़र्ज़ है" पोलीस वाला गुस्से में विवेक को बोला

"हां तो देख लिया ना, पहुँच गये मामले की तह तक.. अब क्या यहाँ बॉम्ब बनाने का समान ढूँढ रहे हो?? टेररिस्ट लगता हूँ मैं तुम्हें... यह रेशियल डिस्क्रिमिनेशन है...'

"जस्ट शट अप. सर आप ठीक हैं बिल्कुल? कोई परेशानी?"

"बिल्कुल ठीक हूँ, कोई परेशानी नही है.. बस कल रात थोड़ी ज़्यादा पी ली थी.. नतिंग एल्स."

"वो टॅक्सी वाला कह रहा था कि आपके कंधे से खून बह रहा था.."

"हां तो वो भगवान है क्या.. खून बह रहा था तो अभी कहाँ गया ?? साले पता नही सुबह सुबह क्या चढ़ा लेते हैं, फिर हम जैसी इनोसेंट सवारियों को परेशान करते हैं... अगर यह इंडिया होता ना, कभी फोन ना घुमाता कोई टॅक्सी वाला पोलीस को.. उसको पता होता कि इन्फर्मेशन ग़लत निकल गयी तो उसकी खैर नही हैं... मैं तो यह सारे हालत आपकी ही ग़लती मानता हूँ" विवेक ने फिर से बीच में टाँग अड़ाई.

पोलीस वाले ने बस उसको घूरा और रूम से बाहर निकल गया. प्रतिक ने जा कर दरवाज़ा बंद किया. दरवाज़ा बंद होते ही विवेक कूद के पलंग से उठा. "क्या हुआ प्रतिक.. कैसा लग रहा है... घाव तो एकदम गायब हो गया यार"

"हां.. देखा मैने... लेकिन उल्टियाँ हो रही थी.. थोड़ा खून भी निकला था उनमें.. लेकिन चलो अब सब सही है"

"यार हुआ क्या था कल रात को...."

"पता नहीं यार.. कुछ याद नहीं है..."

"पूजा को तेरी पॉवर का तो पता नही चला ना यार..."

"मुझे लगता तो नहीं... मैं तो चल ही रहा था जहाँ तक मुझे याद है"

"फिर तो बहुत अच्छी बात है.. वैसे अब सब सही लग रहा है..."

"हां सही तो लग रहा है..."

"मेरे खून का कमाल है... अब तू सीना तान के कह सकता है कि तेरी रगों में मेरा खून दौड़ रहा है..."

"अबे चुप कर कमिने.. मैं अपने रूम जा रहा हूँ.. पूजा का नंबर है तेरे पास?"

"हां है... टेंशन मत ले.. उसको फोन करके बोल दूँगा मैं कि तुम ठीक हो"

"नहीं मैं खुद करूँगा.. तू नंबर दे...."

"हाँ हाँ क्यूँ नही... नियर डेथ एक्सपीरियेन्स लिया है उसके साथ... पटा लो उसको.. नकचड़ी है लेकिन पीस तो सॉलिड है..."

"अबे बोल कम और नंबर दे..." और प्रतिक विवेक से नंबर ले कर अपने रूम में चला गया

"हेलो"

"हां.. क्या हाल चाल है... कैसी चल रही है क्लास"

" पहली में से खुद बाहर आ गयी, और दूसरी में से प्रोफेसर ने निकाल दिया... सोच रही हूँ कि घर चली जाओं अब.. मन नही लग रहा आज.." दिया ने बोला

"हां मन लगेगा भी कैसे, मैं जो नहीं हूँ वहाँ."

"हां.. तुम तो मुझे बैठा के भाग निकले... कैसे आदमी हो तुम"

"नहीं यार थोड़ा ज़रूरी काम आ गया था. तुम बोलो तो अभी आ जाता हूँ.. साथ चलते हैं कहीं मूवी शूवी के लिए"

"नहीं रहने दो.. " दिया ने बोला.. मन तो उसका बहुत था विवेक के साथ टाइम बिताने का लेकिन वो चाहती थी कि विवेक और कोशिश करे उसके लिए... अगर विवेक एक बार और पूछता तो शायद मान भी जाती... लेकिन विवेक ने पूछा नहीं

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी.. कल मिलते हैं फिर"

"अर्रे एक बात बताना तो भूल ही गयी.. पापा ने डिन्नर पे इन्वाइट किया है फ्राइडे को"

"अर्रे यार.. मैने अंकल को पहले ही कहा था कि शादी की बात सिर्फ़ पेरेंट्स से ही करें... चलो फोन पे बात कर लेंगे.. अपना फोन में पूरा टॉक टाइम रखना...  कॉल्स महनगी होती हैं"

"ऐसी कोई बात नहीं हैं... उन्होने पूजा और प्रतिक को भी बुलाया है..."

"प्रतिक तो मेरे साथ ही था सुबह से.. उसको तो कोई फोन नही आया.. कहीं तुम मुझे अकेले में बुला कर मेरी इज़्ज़त पे हाथ डालना तो नहीं चाहती दिया"

"इन युवर ड्रीम्स विवेक..."

"वाह.. क्या ड्रीम्स होंगी वो भी... मैं, तुम और हमारा अपना खेत"

"शट अप... कल मिलते हैं.. मुझे प्रतिक को भी फोन करके बोलना है"

"ओके देन" खेकर विवेक ने फोन रख दिया.

"हेलो"

"इस दट पूजा"

"यस"

"पूजा प्रतिक बोल रहा हूँ"

"ओह्ह हाई प्रतिक. तुम्हार तबीयत कैसी है? हाथ कैसा है तुम्हारा?"

"अब मैं ठीक हूँ. मुझे तुमसे मिलना है पूजा"

"क्यूँ नही.. कभी भी बोलो मिल लेंगे.."

"अभी.. अभी आ रहा हूँ मैं वहाँ.. अपना अड्रेस दो"

"अभी ?? हां लिख लो अड्रेस... और हां .. उड़ के मत आना... "हँसते हुए पूजा ने अपना अड्रेस लिखवा दिया

"मैं ३० मिनट में आता हूँ पूजा" कह कर प्रतिक ने फोन रख दिया. वो अपने बाथरूम में जा कर अच्छी तरह से नहाया. उसे अभी भी कमज़ोरी लग रही थी. उसको खून की उल्टी एक बार और हुई और उसे थोड़ा अच्छा लगने लगा. शायद उसकी बॉडी विवेक का खून रिजेक्ट कर रही थी. पर अब उसको डर नही था क्यूंकी अब उसके घाव भर चुके थे. नहा धो के वो तैयार हुआ और टॅक्सी ले कर पूजा के बताए पते पर चला गया.

# १७

उधर पूजा के मन में एक प्लान बन रहा था. देर सवेर किसी तरह से प्रतिक को पता चल ही जाएगा कि उसके पास भी पॉवर हैं.. खास कर के अगर उसको कल की डेत्स के बारे में पता चलेगा तो क्यूंकी एक भी बंदा गोली लगने से नही मरा था. उसको लगा कि क्यूँ ना वो खुद ही प्रतिक को अपनी सच्चाई बता दे. शायद विवेक ने उसको कुछ बताया हुआ था जिसके कारण वो अधमरी हालत में भी विवेक को याद कर रहा था. लेकिन उसपर अपनी पॉवर ज़ाहिर करने से पहले पूजा को उसको अपने वश में करना होगा. प्रतिक को अपने प्यार के जाल में इस कदर फसाना होगा के वो चाहकर भी कभी उससे अलग ना हो पाए. वो सोचने लगी कि अगर वो और प्रतिक मिल जायें तो क्या क्या नही कर सकते. वो प्रतिक के साथ मिल के कोई बड़ा हाथ मारेगी और फिर उसको छोड़ कर, सारी उम्र आराम से बिताएगी. अगर छोड़ ना भी पाई तो भी प्रतिक के साथ उम्र बिताने में भी उससे कोई प्राब्लम नही थी. प्रतिक एक हँडसम और इंटेलिजेंट आदमी था और उसने प्रूव कर दिया था कि वो डरपोक भी नही है. धीरे धीरे वो अपने मन में प्रतिक को फसाने का प्लान सोचने लगी.

उसकी सोच तब टूटी जब दरवाज़े की घंटी बजी. घंटी सुनते ही वो प्रतिक को रिसीव करने के लिए जल्दी से दरवाज़े की तरफ भागी और देखा कि सच मुच वो ही आया है. दरवाज़ा खोल के वो उससे लिपट गयी

"ओह्ह प्रतिक तुम्हें पता है कि मुझे तुम्हारी कितनी चिंता हो रही थी.. कैसे हो तुम.. फोन पे तुम थोड़े वीक लग रहे थे"

"हां थोड़ी वीकनेस है. पर ठीक हूँ मैं" प्रतिक ने सप्राइज़्ड होकर बोला. उसने पूजा से ऐसे वेलकम की उम्मीद नही करी थी

"चलो अंदर आ जाओ" उसका हाथ पकड़ कर पूजा उसे अंदर ले आई. रह रह कर प्रतिक की नज़र पूजा के बदन पर जाती. पूजा एक मैक्सी पहने हुए थी. संगमरमर की तरह का उसका बदन नुमाइश पे लगा हुआ था और उसको देख के प्रतिक का ईमान डोल रहा था. उसकी महकी खुशबू प्रतिक को और दीवाना बना रही थी और उसके हिलते होठों को देखकर प्रतिक किसी और ही दुनिया में खोता जा रहा था.. "तुम कुछ सुन भी रहे हो कि नही" जब पूजा ने बोला तो प्रतिक का ध्यान टूटा

"नही.. मतलब हां.. मतलब मेरा सर बहुत दुख रहा है.. मुझे अभी कुछ नही सुन-ना"

"तो फिर तुम यहाँ आए क्यूँ हो" पूजा को पता चल चुका था कि उसका जादू कुछ कुछ असर करने लग गया है प्रतिक पे

"पूजा मैं कल के बारे में बात करना चाहता था"

"हां. वो बात तो मुझे भी सुन-नी थी. कल मैने देखा था. तुम सच मुच उड़ रहे थे" पूजा ने हैरत में अपनी आखें बड़ी बड़ी करते हुए बोला.

"हां पूजा. मुझे पता नही यह कैसा होता है और मेरे साथ क्यूँ होता है, पर मैं सच मुच उड़ सकता हूँ" उसकी आँखों में खोते हुए प्रतिक ने बोला

"मतलब तुम आज के ज़माने के सुपरमैन हो ना" अपनी पलकें झपकाती हुई पूजा बोली

"मुझे कुछ पता नही है पूजा. कुछ समझ नही आता. बस एक दरख़्वास्त है कि हम दोनो के अलावा तुम किसी और को यह बात मत बताना. मैं नही जान-ता कि लोगों का क्या रिएक्शन रहेगा इस बात पे. जब मेरे लिए ही यकीन करना इतना मुश्किल है तो औरों के लिए तो और भी मुश्किल होगा"

"तुम मेरा विश्वास करो प्रतिक. मैं यह बात किसी को नही बताउन्गी. यह राज़ मेरे अंदर ही दबा रहेगा." पूजा ने उस का हाथ अपने हाथ से सहलाते करते हुए कहा.

इतनी सुंदर लड़की झूठ नही बोल सकती. ऐसा सोच कर प्रतिक का मन उसपर विश्वास करने को हो गया. पता नही क्यूँ आज उसकी नज़रें पूजा से हट ही नही रही थी. यह पूजा की ड्रेस के कारण था या किसी और कारण से, उसे पता नही.. पर आज पूजा उसको बहुत सहवासी लग रही थी. वो सोचने लगा कि पहले उसने क्यूँ नही पूजा को इन नज़रों से देखा, अगर देख लिया होता तो शायद प्लेन से ही ट्राइ कर रहा होता उसके लिए. उसका मन कर रहा था कि बस यूँ ही पूजा को देखता रहे और वक़्त कभी ना थमे. उसके ऐसे घूरने से पूजा भी थोड़ा अनकंफर्टबल महसूस कर रही थी. हालाँकि उसने पूरा प्लान सोच समझ कर ही यह चाल चली थी, पर फिर भी जिस तरह से प्रतिक उसको घूर रहा था, उसको थोड़ा अजीब सा लग रहा था. "प्रतिक तुम कुछ खाओगे" कहते हुए वो उठी.

"हां. कुछ भी बना दो. बहुत भूख लग रही है"

"तुम लेट जाओ. मैं कुछ बना के लाती हूँ"

"यार तुम तो मुझे पूरा पेशेंट की तरह ट्रीट कर रही हो. नही लेटना मुझे. मैं भी हेल्प कर देता हूँ थोड़ी" कह कर वो उठ गया. पूजा ने भी मना नही किया और दोनो इधर उधर की गप्पें मारते हुए किचन में पहुँच गये और खाना बनाने लगे.

पूरी कॉन्वर्सेशन के दौरान प्रतिक को ऐसा लगता रहा जैसे पूजा उस से फ्लर्ट करने की कोशिश कर रही है. कोशिश क्या, फुलटू फ्लर्ट कर रही है. हो सकता है यह उसके मन का वेहम हो और उसे वही लग रहा हो जो वो करना चाहता है इसलिए उसने इस बात का ज़िक्र ना करने की ही सोची. पूजा ने खाना बना लिया और दोनो ने अपनी प्लेट में डाल के खाना शुरू कर दिया. खाते वक़्त भी वो इधर उधर की बातें करने लगे. खाना ख़तम करने के बाद, उन्होने प्लेट्स वापस रखी तो पूजा प्रतिक की आँखों में झाँकति हुई बोली, "प्रतिक एक बात कहूँ बुरा तो नही मानोगे"

"नहीं मानूँगा. बोलो.." शायद वो बोलने वाली थी जो सुनने को प्रतिक के कान तरस रहे थे

"अपनी शर्ट उतारोगे एक मिनट"

"व्हाट !! क्यूँ??"

"मुझे देखना है कि तुम्हारा घाव कैसा है"

"नहीं है कोई घाव वहाँ पे"

"प्लीज़. एक बार .. मेरे लिए" फिर अपनी पलकें झपकते हुए उसने कहा

"ठीक है. पर मेरी बॉडी देखकर हसना मत" कहते हुए प्रतिक ने अपनी शर्ट उतार दी और उसके सामने खड़ा हो गया.

पूजा ने हैरानी से उसके कंधे के वहाँ देखा और वहाँ सच मुच कोई घाव नही था. वो उठ कर उसके पास गयी और उसके कंधे पर हाथ फेरने लग गयी. हाथ फेरते हुए वो धीरे धीरे अपना मूह उसके पास लेकर आई और पहले उसका कंधा और फिर उसकी गर्दन चूमने लगी. प्रतिक ने अपना दूसरा हाथ उसके कंधे पर रखा और थोड़ा नीचे मूह कर के अपने होठ उसके नाज़ुक से फूल जैसे होठों पर रख के दबा दिए

पूजा के नरम मुलायम होठ उसको ऐसी फीलिंग दे रहे थे मानो वो किसी गुलाब की पंखड़ी को छू रहा हो. धीरे धीरे वो अपना हाथ पूजा की पीठ पर फेरने लगा और अपने होठ उसके होठों से हटा कर उसकी गर्दन को धीरे धीरे चूमने लगा. यह सिलसिला थोड़ी देर तक जारी रहा और उसके बाद दोनो ने साँस ली.

"यह क्या कर रही हो पूजा"

"मैं क्या कर रही हूँ तुम्हें नही मालूम? तुम भी तो लगे हुए हो" थोड़ा सा मुस्कुरा कर पूजा ने बोला

"मतलब हम ऐसा क्यूँ कर रहे हैं"

"तुम्हें नही पता ? तुम्हारी तबीयत ठीक है?"

"मतलब पूजा कि अचानक से यह सब..."

"आइ लाइक यू प्रतिक. आइ लाइक यू अ लॉट. पहले दिन से ही. और जब कल तुमने मेरे लिए अपनी जान की बाज़ी लगा दी तो मुझे तुम और अच्छे लगने लगे"

"पूजा मैने तुम्हारे बारे में कभी वैसे सोचा नही.. तुम बहुत सुंदर हो, आइ वुड लव टू गो आउट वित यू. पर हम शायद जल्दी कर रहे हैं"

पूजा फिर झुकी और उसको चूमने लग गयी जिंदगी में किसी भी चीज़ में हारना उसे कतयि पसंद नही था. धीरे धीरे प्रतिक ने भी हार मान ली और अपने आप को पूरी तरह से पूजा को समर्पित कर दिया. उसको पता था कि इस क्रिया का अंत जो भी हो, जीत तो उसे महसूस होगी ही.

पूजा के कोमल हाथों का जांघों पर स्पर्श होने से प्रतिक का लिंग एकदम से तनाव मे आ गया था.प्रतिक का लिंग झटके पर झटके देने लगा.प्रतीक ने थोड़ा जांघें खोलकर कोशिश भी की कि किसी तरह पूजा का हाथ और नीचे की तरफ आये और प्रतिक का लिंग उनके हाथ से टच हो जाये मगर ऐसा हुआ नहीं.

अबकी बार पूजा प्रतिक के लिंग की तरफ उंगलियों को सरकाने की कोशिश कर रही थी.प्रतिक को भी लगने लगा था कि हवस की ये आग सिर्फ प्रतिक के ही जिस्म में नहीं लगी,बल्कि पूजा भी उसी आग में जल रही है.

प्रतिक का लिंग अब तक खड़ा हो चुका था. पूजा फिर प्रतिक की ओर देखकर मुस्करायी और उसका हाथ सीधे ही प्रतिक का लिंग पर आ टिका.जैसे ही उसने हाथ रखा प्रतिक की तो आह्ह निकल गयी.

उसके कोमल हाथ का स्पर्श पाकर प्रतिक का लिंग पैंट में से जोर जोर के झटके देने लगा.फिर उनके होंठ मिलते हुए देर न लगी.  दोनों एक दूसरे से लिपट गये और होंठों को चूसने लगे.

जीवन में पहली बार किसी स्त्री का साथ (स्पर्श) पाकर प्रतिक का पूरे बदन में मानो आग सी लग गई थी. किस करते करते प्रतिक का हाथ कब उनकी स्तनों पर चले गए पता ही नहीं चला॥

उसकी मुलायम और रूई जैसी नर्म स्तनों को प्रतिक जोर जोर से कपड़ों के ऊपर से ही भींचने लगा.उसने एक मैक्सी पहनी हुई थी और अंदर ब्रा भी नहीं थी.

पूजा के स्तनों का स्पर्श प्रतिक को पागल किये जा रहा था.प्रतिक स्तनों को जोर जोर से भींचने लगा तो पूजा सिसकर उठी- आह्ह … धीरे से … इतनी जोर से मत दबाओ.प्रतिक फिर आराम से उसके स्तनों से खेलता रहा. पूजा अपनी जीभ को प्रतिक का मुंह में ऐसे घुसा घुसा कर किस कर रही थी मानो पूजा कई दिन से इस रात का इन्तज़ार कर रही हो.

वो दोनों किस करते करते कब दूसरे रूम तक पहुंच गए पता ही नहीं चला. अब सारी शर्म उतर चुकी थी और वो दोनों एक दूसरे में खो जाने के लिए बेताब थे.पूजा ने प्रतिक को बेड पर लिटा लिया और प्रतिक के ऊपर आकर उसको किस करने लगी.

प्रतिक भी पूजा की पीठ को मैक्सी के ऊपर ही सहलाने लगा. पूजा प्रतिक को किस किये जा रही थी और प्रतिक का हाथ उसके पूरे शरीर पर घूम रहे थे.फिर पूजा ने प्रतिक की पैंट उतार दी और प्रतिक की जांघों के बीच में आकर उसका लिंग को मुंह में भरकर मस्ती में चूसने लगी.

पूजा के मुंह के द्वारा चुसाई करने में प्रतीक को गजब का मजा आ रहा था.पूरे जोश में पूजा अपनी गर्दन को ऊपर नीचे कर रही थी.फिर कुछ देर चूसने के बाद पूजा उठी और उसने अपने सारे कपड़े निकाल फेंके.अब पूजा भी पूरी नंगी थी.प्रतीक ने उसे नीचे पटका और उसकी स्तनों पर टूट पड़ा. उसकी स्तनों को मुंह में भरकर पीने लगा; जोर जोर से दबाते हुए उनका दूध निचोड़ने लगा.

पूजा जोर जोर से आहें भरने लगी- आह्ह … अम्म … ऊम्म … ओहोह् … आह्ह .. आई … उफ्फ …. करते हुए पूजा अपनी वासना को दर्शा रही थी.फिर प्रतिक चूमता हुआ उसकी योनि तक पहुंचा और उसकी योनि में पहले उंगली से ठोका और फिर जीभ अंदर दे दी.

जीभ अंदर जाते ही पूजा झटके से उठी और प्रतिक का सिर को अपनी योनि पर दबा दिया. पूजा प्रतिक का सिर को योनि पर पटकने लगी. प्रतिक की जीभ उसकी योनि की गहराई को नाप रही थी.

फिर उसने सिसकारते हुए कहा- ठोक दो अब … अब क्या रह गया है … मेरी जान निकलने वाली है प्रतिक. अब बर्दाश्त नहीं कर पा रही हूं.

प्रतीक ने उसकी योनि को तेजी के साथ जीभ से ठोकना शुरू कर दिया.पूजा पागल हो गयी और प्रतिक को नोंचने लगी.

अब प्रतिक के पास कोई रास्ता नहीं था. प्रतीक ने अपना लिंग तैयार कर लिया. इससे पहले कि प्रतिक आगे बढ़ता पूजा उठी और प्रतिक का लिंग पर अपना थूक भी लगा लिया.फिर उसने प्रतिक को नीचे गिरा लिया और अपनी योनि को प्रतिक का लिंग पर टिका दिया.

पूजा लिंग पर बैठ गई और उसने प्रतिक का लिंग को अंदर ले लिया. फिर अपनी नितंब उछाल उछाल कर ठुकने लगी.पूजा तो किसी पोर्न स्टार की तरह ठुक रही थी, झटके पर झटके लगा रही थी.

प्रतिक का लिंग पूरा उसकी योनि के अंदर तक जा रहा था. लिंग को और अंदर तक ले जाने के लिए पूजा अपनी नितंब को गोल गोल घुमाते हुए लिंग को रास्ता दे रही थी.

प्रतिक उसकी स्तनों को दबाने में लगा हुआ था. स्तनों के निप्पल एकदम तनकर मटर के दाने जैसे हो चुके थे. उसको लिंग से ठुककर बहुत अधिक उत्तेजना हो रही थी.पूजा अब चरम सुख को प्राप्त कर रही थी. पूजा दस मिनट तक इसी तरह प्रतिक का लिंग की सवारी करती रही.

फिर प्रतीक ने उसको उठाया और घोड़ी बना लिया; उसकी योनि में पीछे से लिंग डाला और उसकी कमर को पकड़ कर ठोकने लगा.अगले पांच मिनट तक प्रतीक ने उसको इसी पोजीशन में ठोका.

पूजा सिसकारती रही- आह्ह … हा … हां … ओह्ह … जोर से … ठोको … घुसा दो … ओह्ह … ठोकते रहो.

बिस मिनट की ठुकाई के बाद पूजा और प्रतिक फिर एक साथ झड़ गए।

पूजा की लगाई हवस की आग में वो ऐसा उलझा कि उसको ३० मिनट बाद ही होश आया जब वो दोनो बिस्तर पर बदहवास पड़े थे. प्रतिक मुस्कुरा रहा था क्यूंकी इतना मस्त सहवास उसने आज तक महसूस नही किया था. पूजा इसलिए मुस्कुरा रही थी क्यूंकी उसको पता था कि उसके बिछाए जाल में प्रतिक कदम रख चुका है और जल्द ही वो समय आएगा जब प्रतिक ना चाहते हुए भी इस जाल में उलझ चुका होगा. तभी प्रतिक के फोन की घंटी बजी

"हेलो"

"हाई प्रतिक.. दिस ईज़ दिया"

"हां दिया"

"फ्राइडे को क्या कर रहे हो..."

"पता नही.. कुछ प्लान है क्या..." आज तो लगता है किस्मत उसपे मेहेरबन थी... फ्राइडे को थ्रीसम के चान्सस लग रहे थे

"हां. मेरे पापा ने इन्वाइट किया है डिन्नर के लिए तुम्हें, विवेक और पूजा को.. वो दोनो तो आ रहे हैं. तुम्हें भी आना है"

"अच्छा.. कोशिश करूँगा. अभी के लिए हां समझो" प्रतिक के सपनों का महल टूट गया. पर सहवास ना सही, घर का बना खाना तो मिलेगा, यह सोचकर ही वो खुश था

"किसका फोन था" पूजा ने प्रतिक के फोन रखने पर पूछा

"दिया का था.."

"ओह्ह वो फ्राइडे नाइट की पार्टी. अचानक से ही पता नही उसके बाप को क्या सूझी जो हमे इन्वाइट कर लिया..."

"हां.. पर जाता क्या है... अच्छा खाना मिलेगा. शायद दारू भी हो.. मज़े करेंगे.."

"मज़े तो अभी भी कर रहे हैं" पूजा ने कहा और फिर प्रतिक को चूम लिया. प्रतिक फिर से गरम हो गया और एक बार वापिस सहवास किया. इस बार उसने ध्यान रखा कि पूजा की नीड्स का भी ख़याल रखे. फिर वो दोनो निढाल हो गये और इस बार सो गये.

# १८

जब रात में खाने की मेज़ पर विवेक ने प्रतिक को नही देखा तो उसका माथा ठनका कि प्रतिक ठीक भी है या नहीं. वो उसके रूम में गया पर वहाँ तो ताला लगा हुआ था. उसने प्रतिक को फोन घुमाया तो पता चला कि वो बाहर है और थोड़ी देर में वापस आएगा. अब विवेक ने भी टाइम पास के लिए दिया को फोन लगा दिया और दोनो इधर उधर की बातें करने लगे. दिया बहुत एक्ससाइटेड थी कि फ्राइडे को वो चारों उसके घर पे मिलेंगे. वो अपनी माँ के खाने की तारीफ करते नही थक रही थी. सुन सुन के विवेक के भी मूह में पानी आ रहा था और उसको फिर से भूख लग गयी. उसने दिया से विदा ली और वापिस कँटीन पहुँच कर खाना खाने लग गया. थोड़ी ही देर में देखा कि प्रतिक भी वहाँ आ गया है. तब तक विवेक का खाना ख़तम हो गया था. उसने अपनी प्लेट डिशवाशर में डाली और लपक के प्रतिक के पास हो गया

"कहाँ था रे..."

"क्यूँ क्या हुआ.."

"हुआ तो कुछ नहीं, बस बदनामी हो गयी हॉस्टिल में के दोनो लौन्डे साथ सोते हैं"

"अबे छोड़ ना.. और बता क्या किया दिन भर.."

"अर्रे मेरी छोड़ और अपनी बता.. कहाँ था दिन भर..."

"कुछ नहीं यार. बस ऐसे ही.. इधर उधर..."

"ओ माइ गॉड.."

"क्या हुआ..."

"तू पूजा के साथ था ना..."

"यह तू कहाँ से पता कर के बोला?"

"अर्रे चोट ना लगना मेरी पॉवर है पर यह मेरा टॅलेंट है.. तो बता.. कुछ हुआ क्या"

"यार मैं सिर्फ़ यह इंशुअर करने गया था कि उसके उपर मेरी पॉवर तो ज़ाहिर नही हुई ना.."

"अर्रे वो छोड़ और बता कुछ हुआ क्या"

"भगवान का शुकर है के उसको कुछ नही पता"

"ओ माइ गोड..."

"क्या हुआ"

"तुमने सहवास किया आज..."

"अबे चुप कर.. कुछ भी बोल रहा है"

"अपनी माँ की कसम खा के नहीं किया..."

"मैं ऐसी बातों में कसमें नही खाता"

"देखा.. मुझे पता था... कैसी है वो... वैसे तो बड़ी बॉम्ब लगती है.. बिस्तर में भी क्या.."

"शट अप यार विवेक.. तुझे और कुछ नहीं है क्या बोलने को" प्रतिक ने बोला और दोनो कुछ पल तक बिल्कुल शांत हो गये.

विवेक प्रतिक को घूरता रहा और प्रतिक खाना खाता रहा... "हां. बिस्तर में भी वो एक फुलझड़ी है.. बस खुश?"

"मुझे पता था. ऐसी लड़कियाँ होती ही ऐसी हैं.. हमेशा खुद को उपर रखती है... मज़ा आया ?"

"बहुत... ज़िंदगी का सबसे बेस्ट सहवास था"

"साला एक मेरी ज़िंदगी है... गर्ल फ्रेंड ने कभी दी नहीं, जिस-से ली, उसको पैसे देने पड़े... वैसे फरक होता है क्या प्रॉस्टिट्यूट के साथ सहवास करने में और किसी को जानते हो उसके साथ सहवास करने में?"

"पता नहीं, मैने कभी प्रॉस्टिट्यूट के साथ सहवास नही करा"

"लकी है तू तो... मैने तो उन्ही के साथ किया है.. एक बार पैसे कम थे तो मुझे दिलजीत के साथ मिल कर एक बंदी को ठोकना पड़ा. ऑफर था. २ बंदे एक सिट्टिंग में लेती थी तो २ गुना की बजाए १.५ गुना ही चार्ज कर रही थी. वो ही मेरा बेस्ट रहा है"

"यार कैसा है तू... घिन नही आती?"

"आती तो है लेकिन योनि देख कर चली जाती है" कहता हुआ विवेक ज़ोर ज़ोर से हँसने लगा और उसको हँसता देख प्रतिक को भी हँसी आ गयी. "दिया का फोन आया?"

"हां आया था."

"तो चल रहा है ना फ्राइडे को?"

"ओफ़फकौर्स"

"यार कुछ ले कर जाना चाहिए ना.. पहली बार उसके घरवालों से मिल रहे हैं"

"अबे तो रिश्ते की बात करने थोड़ा जा रहे हैं"

"तू नही जा रहा होगा, मैं तो जा रहा हूँ. सोच रहा हूँ सूट में जाऊं"

"अबे पागल हो गया है क्या..."

"यार एक मस्त इंप्रेशन बनाना है उसके पेरेंट्स पर. क्या पता कल को वो मेरे भी पेरेंट्स हो जायें"

"मस्त इंप्रेशन बनाना है तो मूह बंद रखियो. नही तो क्या सूट और क्या कच्छा, सब खुल जाएँगे तेरे मूह खोलते ही"

"ह्म्म.. सोचना पड़ेंगा. और बता... यार आइ रियली कँट बिलीव इट कि पूजा के साथ तेरा फिट हो गया... कहाँ वो और कहाँ तू"

"क्या मतलब तेरा"

"मतलब कहाँ वो एक हूर परी और कहाँ तू.. शकल से ऐसा लगता है जैसे कान से मैल निकालने का बिजनेस हो तेरा"

"शट अप..."

"चल छोड़ इन बातों को. मैं चला अपना नाइट डोज लेने. तुझे चाहिए हो तो आ जइयो.. नहीं तो कल कॉलेज में मुलाक़ात हो शायद" कहता हुआ विवेक उठा और अपने रूम में चला गया

# १९

चंद्रशेखर थोड़े दिन से लॅब से बाहर था. उसने और अरुणा ने कुछ दिन अपने लिए निकाल लिए थे. वो खुश था कि इन दिनों में कोई फोन वगेरह ना आया उसको डिस्टर्ब करने के लिए और उसने यह सारा वक़्त अरुणा के साथ बिताया. अरुणा भी खुश थी कि उसके बर्थडे पर उसको यह प्रेज़ेंट मिला. उसको यकीन था कि चंद्रशेखर को उसका बर्थडे याद नही रहेगा पर वो बहुत सर्प्राइज़्ड हुई जब चंद्रशेखर ने ना सिर्फ़ उसका बर्थडे याद रखा, बल्कि २ दिन की छुट्टी भी ली थी. आज २ दिन बाद वो दोनो फिर रेगिस्तान में पहुँच गये थे. रेगिस्तान की उस गर्मी में आज एक अजीब सी चुभन थी. किसी चीज़ के जलने की बू बहुत तेज़ आ रही थी. हेलिकॉप्टर से उतर कर चंद्रशेखर और अरुणा उस टीले के पास गये. पासवर्ड देने के बाद दरवाज़ा खुला लेकिन पूरा नही खुला. अंदर से बहुत ज़्यादा धुआँ बाहर निकला.

चंद्रशेखर का दिल उसके गले में आ गया. उसको किसी अनहोनी की आशंका होने लगी. उसने धक्का दे कर दरवाज़ा खोला तो अंदर का माहौल देख कर दंग रह गया. सारी मशीन्स टूटी पड़ी थी. इस लोहे को पिघलाने के लिए तो बहुत ज़्यादा गर्मी की ज़रूरत थी. हर एक कदम के साथ चंद्रशेखर का दिल और भारी हो रहा था. अरुणा का भी हैरत के मारे मूह खुले का खुला ही था. उसने साइड में जा कर सारे स्विच ऑन कर दिए. लाइट्स तो नही जली पर थोड़े से एग्ज़ॉस्ट फँस ऑन हो गये जिनसे वो धुआँ बाहर जाने लगा. चारों तरफ सिर्फ़ विनाश ही विनाश था. उनके साइंटिस्ट्स की बॉडी इधर उधर पड़ी हुई थी. कोई भी ज़िंदा नही लग रहा था. यह सब देख के अरुणा की आँखों में आँसू आ गये.

"यह क्या हो गया चंद्रशेखर"

"हिम्मत करो अरुणा. हमे मामले की तह तक जाना होगा. मुझे नही लगता कि यह किसी की ग़लती से हुआ है. यह पक्का किसी के अटॅक का नतीजा है. पर यहाँ कौन अटॅक करेगा.'"

"सब बर्बाद हो गया चंद्रशेखर. इतने सालों की मेहनत..." कहकर अरुणा फूट फूट के रोने लगी. "कोई भी यहाँ ज़िंदा नही लगता चंद्रशेखर. इन बेचारों ने किसी का क्या बिगाड़ा था. यह क्यूँ हो गया"

"थोड़ी हिम्मत रखो अरुणा. मैं अभी सीसीटीवी रेकॉर्ड्स चेक करता हूँ. मुझे दाल में कुछ काला लग रहा है"

चंद्रशेखर ने धीरे धीरे सारे केमरे चेक किए. उन सब की फीड या तो करप्टेड थी या कॅमरास खराब हो चुके थे. उसके पास अब देखने का कोई ज़रिया नही बचा था. तभी उसे याद आया कि उसने एक कमेरे का कंट्रोल्स सिर्फ़ अपने ऑफीस में ही रखा है. वो एक ३६० डिग्रीस रिवॉल्विंग कॅमरा था जो पूरी लॅब में घूमता था पर नज़रों से ओझल था. चंद्रशेखर का ऑफीस भी एक कोने में दीवार के पीछे था. अगर पहली बार आओ तो वो दिखता नही था. दिल में थोड़ी सी होप ले कर वो अपने ऑफीस में गया और अपने कंप्यूटर पे बैठ गया. उसका ऑफीस बिल्कुल अनटच्ड था और यह पक्का था कि वहाँ कोई नही आया. कंप्यूटर स्टार्ट करके उसने सीधा केमरे की रेकॉर्डेड फीड को आक्सेस किया. जो उसने देखा वो किसी के भी होश उड़ा देने वाला मंज़र था. उसने देखा के ८ घंटे पहले एक आदमी लक के अंदर आया था. उस आदमी की शकल बिल्कुल चंद्रशेखर से मिलती थी. सिर्फ़ एक डिफरेन्स था कि वो चंद्रशेखर नही था. चंद्रशेखर ने देखा कि वो सीधा मास्टर कंप्यूटर पे गया और कुछ करने लगा. पर उसने शायद ग़लत पासवर्ड डाल दिया था.. फिर उस आदमी ने अपने फिंगरप्रिंट को पासवर्ड की तरह यूज़ करने की कोशिश करी लेकिन वो भी रिजेक्ट हो गया.

दो चार बार और कोशिश करने के बाद चंद्रशेखर ने देखा कि केविन उस आदमी के पास गया और उससे कुछ बात करने लगा. अनफॉर्चुनेट्ली यह कॅमरा आवाज़ें रेकॉर्ड नही करता था. पर चंद्रशेखर के लहज़े से सॉफ झलक रहा था कि उसको कोई शक्क नही था कि उसके सामने खड़ा शक्स चंद्रशेखर ही है. उसने केविन से कुछ कहा तो केविन ने खुद ही पासवर्ड डाल दिया और आदमी को घूर घूर के देखने लग गया. चंद्रशेखर के देखते ही देखते उस आदमी ने अपनी हथेली में पकड़ी एक डिस्क नुमा चीज़ उस मास्टर कंप्यूटर में डाल दी. चंद्रशेखर ने नोटीस किया कि जब वो डिस्क वो अपनी कलाई से निकाल रहा था तो एक डिस्क उसमें से निकल कर नीचे गिर गयी थी. लेकिन उस आदमी को शायद यह पता नही चला. केविन की आँखें हैरत में फटी की फटी रह गयीं थी. वो २ कदम पीछे हुआ कि तभी उस आदमी ने अपना हाथ एक्सटेंड कर के केविन की गर्दन दबोच ली. उस आदमी का हाथ एक्सटेन हुए जा रहा था और केविन को एक कोने में ले कर जा रहा था. वो हाथ शायद अपने आप ही चल रहा था क्यूंकी उस आदमी की पूरी अटेंशन उस मास्टर कंप्यूटर पे थी और दूसरा हाथ कीबोर्ड पे नाच रहा था. थोड़ी देर तक केविन स्ट्रगल करता रहा पर फिर उसने दम तोड़ दिया. वो हाथ वापस रिट्रॅक्ट हो कर उस आदमी के पास आ

गया और अब वो दोनो हाथों से कीबोर्ड पे बटन दबा रहा था. तभी कुछ सेक्यूरिटी गार्ड्स आए और उन्होने गोलियाँ चलानी शुरू कर दी.

लेकिन वो गोलियाँ उस आदमी तक पहुँचने से पहले ही नीचे गिर गयी. अब उस आदमी ने अपना पूरा ध्यान उन सेक्यूरिटी गार्ड्स और बाकी साइंटिस्ट्स पे लगा दिया. उसके शरीर से ४ और "हाथ" निकल कर बाहर आ गये और इधर उधर की चीज़ें पकड़ कर उन्हे तोड़ने लगे. एक ने करेंट की वाइयर उखाड़ी और उसका एक एंड उस आदमी की बॉडी पे लगा दिया. अब उस आदमी के अंदर करेंट खून की तरह दौड़ने लगा था. वो हाथ बंदूक से निकली गोलियों की तरह करेंट को अपने हाथों के थ्रू सब पे मारने लगा. थोड़े ही समय में सारे साइंटिस्ट्स और सेक्यूरिटी गार्ड्स नीचे गिर गये. फिर वो आदमी आगे बढ़ा और हर कंप्यूटर और मशीन के पास गया. उसने अपनी टाँग में से एक अजीब सी एक्सटेंशन निकाली जो हर एक मशीन में घुस जाती थी. मशीन ऑन होती और फिर थोड़ी देर में पिघलने लग जाती. शायद वो कुछ ढूँढ रहा था. अब चारों तरफ सिर्फ़ धुआँ ही धुआँ हो गया था. उसको भी शायद वो चीज़ मिल गयी थी जिसकी तलाश में वो आया था. उसने अपनी सारी एक्सटेंशन्स वापस अंदर करी और फिर से चंद्रशेखर बन के लॅब से बाहर आ गया.

अब चंद्रशेखर ने फॉर्वर्ड कर के सारी फीड को चेक किया और उस समय पर रुक गया जहाँ से उसने और अरुणा ने एंटर किया था लॅब में. जो उसने देखा वो सच मुच कल्पना के परे था. यह कौन आदमी था, इसको लॅब की लोकेशन कैसे पता चली और इसके पास इतनी पॉवर कहाँ से आई... सबसे बड़ा सवाल था कि वो क्या इन्फर्मेशन ढूँढने आया है यहाँ. तभी उसको पीछे से अरुणा के सुबकने की आवाज़ आई. वो पीछे मुड़ा तो देखा के अरुणा उसके जस्ट पीछे खड़ी है. शायद उसने भी सब कुछ देख लिया था स्क्रीन पर.

"यह क्या हुआ चंद्रशेखर... कौन था यह आदमी" हैरत में आँसू टपकाते हुए उसने पूछा.

"अरुणा जितना तुम्हें पता है, उतना ही मुझे भी पता है. प्लीज़ थोड़ी देर डिस्टर्ब ना करो. मैं कोशिश करता हूँ कि कुछ इन्फर्मेशन निकाल पाऊँ. और प्लीज यह रोना धोना बंद करो. इससे कुछ हासिल नही होने वाला है. दुख मुझे भी है. पर अपने उपर काबू किया हुआ है. यू आर आ स्ट्राँग वुमन. प्लीज़ सम्भालो अपने आप को." चंद्रशेखर उठा और उस डिस्क को ढूँढने के लिए चल दिया जो उस आदमी में से गिरी थी

चंद्रशेखर को वो डिस्क ढूँढने में ज़्यादा मुश्किल नही हुई. चंद्रशेखर ने वो डिस्क उठाई और अपने कॅबिन में ले आया और उसको अपने कंप्यूटर में डाल दिया. डिस्क में जो था, वो उसकी समझ से परे था. उसको लगा कि शायद डिस्क खराब हो गयी है या उसमें कुछ था नही इसलिए नीचे फेकि गयी है क्यूंकी कंप्यूटर उस डिस्क के अंदर सिर्फ़ उल्टे सीधे लेटर्स ही पढ़ पा रहा था. उस आदमी के बारे में जान-ने की चंद्रशेखर की यह आखरी उम्मीद भी चली गयी. अरुणा के आँसू रुकने का नाम नही ले रहे थे. चंद्रशेखर उसके पास गया और उसको उठा के अपनी बाहों में भर लिया

"मत रो अरुणा. मत रो. मैं जानता हूँ कि जो कुछ भी हुआ अच्छा नही हुआ. लेकिन हम लोगों को इस मामले की तह तक पहुँचना ही होगा"

"कौन सा मामला चंद्रशेखर.. कुछ नही रहा अब.. सब कुछ तबाह हो गया.. कितनी जाने गयी है.. क्या हो गया यह चंद्रशेखर"

"बस अरुणा बस.. अगर तुम ही ऐसे टूट जाओगी तो मैं किसका सहारा लूँगा... यहाँ पे काम करता एक एक आदमी मेरे परिवार के जैसा था. इस डिज़ास्टर से उबरने के लिए हम दोनो को ही एक दूसरे का सहारा बनना पड़ेगा. प्लीज ऐसे मत टूटो"

"सही कह रहे हो चंद्रशेखर. मसला यह नही है कि यह किसने किया. यह है कि क्यूँ किया. क्यूँ उसने हमारी सालों की मेहनत का ऐसे सर्वनाश कर दिया..."

"हां अरुणा. और इस बात की तह तक पहुँचने के लिए हम दोनो को अपनी तरफ से पूरा ज़ोर लगाना पड़ेगा. अगर इस समय कोई भी पीछे हट गया तो मतलब यह किस्सा सॉल्व नही हो पाएगा. हम दोनो को एक दूसरे की ज़रूरत सब से ज़्यादा है अभी"

"मैं मानती हूँ चंद्रशेखर. लेकिन अब यहाँ रहने से कोई फ़ायदा नहीं है. चलो घर चलते हैं और डिसाइड करते हैं कि आगे क्या करना है" अरुणा ने अपने आप को संभालते हुए बोला. चंद्रशेखर भी उठ गया. वो जानता था कि जब तक इस जगह से दूर नही जाएगा, उसका दिमाग़ काम नही करेगा. उसने जाते जाते अपने कंप्यूटर से वो डिस्क भी निकाल ली और एक आखरी बार अपनी लॅबोरेटरी को जी भर के देख लिया. उसको यकीन था कि यह लॅब जहाँ उसने अपनी ज़िंदगी के ३० साल बिताए हैं, शायद ही उसके अंदर कभी वापस आएगा.

# २०

"हां तो कल हम ने क्या पढ़ा था कौन समराइज करेगा... तुम... कल का चॅप्टर समराइज करो"

अपनी तरफ उंगली होते देख विवेक को बहुत गुस्सा आया. एक तो वो आज पहली बार क्लास में टाइम से पहुँचा था, उपर से उसको सवाल भी पूछ लिया.. "मेडम मैं तो कल क्लास में था ही नहीं. आपने ही तो बाहर निकाला था.. फिर भी मुझसे ही सवाल पूछ रही हो.. आप तो सच मच निर्दयी हो..."

"शट अप... कल क्लास में नही थे इसका यह मतलब नही है के क्या हुआ तुम वो भी नही पढ़ोगे"

"मेडम मेरे फ्रेंड का एक्सीडेंट हो गया था.. इसलिए नही पढ़ पाया.."

"रोज़ नया बहाना... कभी नींद नही खुली, कभी पेट दर्द... कभी सर दर्द.. क्या मज़ाक है यह..."

"मेडम पेट दर्द नही लूज मोशन... सर दर्द का बहाना तो कल करने वाला था"

"शट अप आंड गेट आउट ऑफ दा क्लास"

"काहे को मेडम??"

"जब तुम्हें कल का चॅप्टर नही पता तो आज क्या खाक करोगे" अब टीचर को भी विवेक की रोज़ रोज़ के बहानो से प्राब्लम होने लगी थी और यह बात उसके लहज़े में सॉफ झलक रही थी

"यह कहाँ का इंसाफ़ है मेडम... अगर आप किसी शादी में जाओ और स्टार्टर्स का टाइम चला गया हो तो क्या आप को खाना खिलाए बिना भेज दिया जाएगा?? बल्कि आपको तो ज़्यादा खाना खाना पड़ेगा"

"तुम्हें यह शादी लगती है? यह स्कूल है कोई तुम्हारे फ्रेंड्स का अड्डा नहीं जहाँ जब जहा जैसे चाहा आ गये. गेट आउट ऑर आइ विल नोट टीच दा क्लास फॉर फुल वीक"

विवेक का बस चलता तो कभी ना निकलता. इस बार तो उसकी ग़लती नही थी. पर जब स्टूडेंट्स उसकी तरफ देखने लगे तो उसको लगा कि उसको बाहर निकल ही जाना चाहिए. वैसे भी यह बातें तो उसने पढ़ी हुई थी. "जा रहा हूँ. सीधा घुसते के साथ ही कह दिया करो ना कि मैं बाहर हो जाउ.. क्यूँ रोज़ नये हथकंडे अपनाने होते हैं" उसने बोला और झट से बाहर भाग गया इससे पहले के टीचर जवाब दे पाती. पर किस्मत शायद उसपर ज़्यादा ही महरबान थी आज . बाहर टक्कर हुई सीधा दिया से जिसकी किताबें नीचे गिर गयी.
"सॉरी.. सॉरी.. अर्रे दिया यह तो तुम हो.."

"मैं हूँ तो क्या हुआ.. सॉरी तो होना ही चाहिए.."

"नही.. तुम्हारा तो थँक यू करना चाहिए कि तुमसे टकराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. "

"तुम कितना बोलते हो विवेक... उफ्फ"

"अर्रे कुछ नया बताओ.. आओ सँडविच खाते हैं कँटीन चल कर."

"हटो तुम.. खुद तो फिर क्लास से बाहर फेके गये हो.. मुझे तो जाने दो.."

"अर्रे क्या रखा है इन क्लास में... चलो ना...."

"नो विवेक. तुम जाओ.. मैने कल भी मिस कर दी थी तुम्हारे चक्कर में.. आज तो जाऊंगी ही... सी यू लेटर" दिया ने कहा और चली गयी क्लास की तरफ. विवेक अपने कंधे झुका कर कँटीन की तरफ हो लिया. उसकी समझ मे नही आ रहा था कि उसके साथ ही ऐसा क्यूँ होता है... काश यहाँ दिलजीत होता तो वो भी क्लास से बाहर आ चुका होता उसके लिए...

कँटीन में जा कर विवेक ने सँडविच और मिल्क शेक का ऑर्डर दे दिया. काउंटर के पीछे खड़ी लड़की काफ़ी हॉट थी. तो विवेक ने सोचा कि चलो इसी के साथ टाइम पास कर

लिया जाए

"आपको पहले यहाँ कभी नही देखा.. नयी हो?"

"पर मैने तो तुम्हें कल भी देखा था. आज फिर बाहर निकाल दिया क्या क्लास से?"

"अर्रे अब क्या बताऊ... खड़ूस टीचर है.. मेरी शकल नही पसंद शायद. जस्ट इमॅजिन.. इतनी बढ़िया शकल है और उसको पसंद नही.. लगता है इस देश में हँडसम होना भी एक गुनाह है.."

"ट्रस्टी की बीवी है वो... ऐसे मत बोलो... किसी ने सुन लिया तो लेने के देने पड़ जाएँगे"

"अर्रे छोड़ो इन बातों को.. यह बताओ कि तुम नयी हो क्या यहाँ"

"थर्ड ईअर में पढ़ती हूँ.. टेक्निकली सीनियर हूँ तुम्हारी.. पैसा कमाने के लिए पार्ट टाइम जॉब करना पड़ता है.."

"नाइस... तुम्हारी क्लास नही होती क्या..."

"होती तो हैं पर थोड़ी कम होती हैं... तो सुबह थोड़ा और शाम को थोड़ा काम कर लेती हूँ"

"बड़ी कामुक हो यार तुम तो..."

"एक्सक्यूस मी..."

"मतलब बड़ी कामकाजी हो... अच्छा तरीका है पॉकेट मनी कमाने का... शाम को कब फ्री होती हो.. किसी दिन हमे भी मौका दो आपको कॉफी पीलाने का..."

"आर यू आस्किंग मी फॉर आ डेट ?? इफ़ यस.. तो मेरा पहले से बॉयफ्रेंड है..."

"अर्रे मुझे कौनसा तुम्हारा बॉयफ्रेंड बन-ना है.. बस मैं तो ऐसे ही कह रहा था. नही पीनी तो मत पियो... मैं अकेला ही पी लूँगा"

"फिलहाल यह रहा तुम्हारा ऑर्डर.. पैसे दो और इसको खाओ" उस लड़की ने बेरूख़ी से बोला तो विवेक पैसे दे कर और अपनी प्लेट उठा कर एक खाली टेबल पर बैठ गया और खाने लगा. तभी उसको सामने खड़ी पूजा दिख गयी. "पूजा... इधर .. कैसी हो... यहाँ आ जाओ"

पूजा कोशिश कर रही थी कि विवेक उसे ना देखे लेकिन अब जब देख ही लिया है तो कुछ नहीं हो सकता. तो वो भी प्लेट उठा कर उसके पास आ गयी.."ठीक हूँ विवेक.. तुम बताओ"

"अर्रे मैं तो पूरा वक़्त ही ठीक रहता हूँ. कल प्रतिक के साथ क्या हुआ..."

"क्या मतलब"

"मतलब यह कि काफ़ी टाइम तक प्रतिक तुम्हारे यहाँ था.. क्या कर रहे थे... कुछ हुआ भी के नहीं..." कहते हुए विवेक मुस्कुराने लग गया

"नन ऑफ युवर बिजनेस विवेक... क्यूँ हर किसी के मामले में टाँग अड़ाते हो तुम..."

"अर्रे मैने तो बस दोस्त समझ कर पूछ लिया... मेरा कौन सा चक्कर चल रहा है उस के साथ जो मुझे जान के कुछ मिलने वाला है.. इतना गुस्सा होने की ज़रूरत नही है"

"देखो अपनी हद में रहो... और अगर यही बात करनी है तो मैं जाती हूँ यहाँ से"

"अर्रे नहीं नहीं.. कुछ और बात कर लेते हैं... तुम जाओ ना... थोड़ा रुबाब बढ़ेगा मेरा अगर लोग तुम्हें मेरे साथ देखेंगे तो..."

"तुम कितने गलीच इंसान हो विवेक.... "

"उस बात को छोड़ो और बताओ कि आज आ रही हो ना शाम को दिया के घर..."

"हां आ रही हूँ."

"चलो अच्छा है.. मेरी क्लास का भी टाइम हो गया.. मैं निकलता हूँ..शाम को मुलाक़ात होगी" कहता हुआ विवेक वहाँ से निकल लिया और पूजा ने राहत की सास ली. बाकी का पूरा दिन क्लासस में बीत गया. शाम होने तक चारों की मुलाक़ात नही हुई और वो सब अपने अपने रूम चले गये तैयार होने के लिए.

# २१

चंद्रशेखर और अरुणा जी तोड़ कोशिश कर रहे थे उस डिस्क पे लिखे डाटा को समझने की. अरुणा ने कुछ पॅटर्न्स आइडेंटिफाइ कर लिए थे जिनसे क्लियर हो गया था कि यह किसी कोड में लिखी इन्फर्मेशन है. जी तोड़ कोशिश करने के बाद भी वो लोग उसे क्रॅक नही कर पा रहे थे. चंद्रशेखर ने कोड्स के थोड़े थोड़े पॅचस कई गीक फॉरम्स पे डाल दिए थे इस उम्मीद में कि कोई उसे क्रॅक कर पाए शायद. जब काफ़ी देर हो गयी और वो लोग कोड क्रॅक नही कर पाए तो उन्होने इस चीज़ को थोड़ी देर बंद करने का सोचा. लॅपटॉप बंद करने से पहले चंद्रशेखर ने एक बार वापिस चेक किया सब फॉरम्स को. उसको हैरानी हुई जब उसको एक फोरम पे कोड क्रॅक्ड दिखा. यह ही नहीं, उस आदमी ने एक प्रोग्राम भी लिख दिया था जिस से ऐसा कोड क्रॅक हो सकता था. चंद्रशेखर ने वो फाइल डाउनलोड करी और डिस्क का सारा डाटा उस प्रोग्राम में डाल दिया. कुछ देर इंतेज़ार करने के बाद सारी इन्फर्मेशन चंद्रशेखर और अरुणा के सामने थी जिसे देख कर दोनो के होश उड़ गये. समझ नही आ रहा था कि आगे क्या किया जाए. चंद्रशेखर ने अपना फोन निकाला और यह इन्फर्मेशन कन्वे करने के लिए नंबर घुमा दिया.

"अर्रे प्रतिक तू तैयार नही हुआ.. चलना नही है क्या" विवेक प्रतिक के रूम में पहुँच कर बोला

"इतनी जल्दी जा कर क्या करेंगे? अभी सिर्फ़ ५.३० ही हुआ है.. ७ बजे जाऊंगा मैं तो.."

"यार जल्दी चलते हैं... लेट क्यूँ जाना. चल जल्दी से तैयार हो जा.. साथ चलेंगे.."

"यार मैं तो पूजा को पिक करूँगा और उसके बाद पहुँचुँगा... तू पहुँच जइयो पहले"

"यार यह पूजा का अजीब लफडा है. क्यूँ चिपक रहा है उससे इतना.. हर चीज़ में तुझे वोही दिखती है.. कभी थोड़ा टाइम मेरे साथ भी गुज़ारा कर..."

"अर्रे तू भी तो दिन भर दिया दिया करता रहता है.. मैने तुझे कुछ कहा है क्या? इस मामले में तू अपनी टाँग मत अड़ा... तूने जब पहुँचना है पहुँच जाना.. मैं तो थोड़ी देर में ही आऊंगा, पूजा को साथ ले कर"

हताश मन से विवेक प्रतिक के रूम से निकल गया. इस समय का वो कब से इंतेज़ार कर रहा था और अब उससे और इंतेज़ार नही हो रहा था. उसने दिया को फोन लगाया और बोल दिया कि वो आ रहा है और निकल गया. घर की घंटी बजाई तो दरवाज़ा अंकल ने खोला.

"हेलो अंकल, देखो मैं आ गया"

"हेलो बेटा.. अंदर आ जाओ.. बड़ी जल्दी आ गये"

"हां रूम में कुछ था नही करने को तो सोचा यहाँ आ के आपका ही सर खा लूँ."

"मेरे से मिलने आए हो या किसी और से.. बेटा हम भी तुम्हारी उमर से गुज़रे हैं.. यह बातें हमे भी पता होती हैं.." दिया के पापा ने विवेक को सोफे पे बैठा कर बातें करनी शुरू कर दी

"अंकल आप की लव मॅरेज हुई थी क्या.."

"नहीं... अरेंज्ड मॅरेज.."

"तो फिर यह बातें आप को नहीं पता होंगी.."

"अर्रे बेटा अब क्या बतायें.. अपने ज़माने में हम भी आशिक हुआ करते थे बहुत पहुँचे हुए... वो तो किसी से बात आगे बढ़ी नही, नहीं तो चाय्सस भी कम नहीं थी हमारे पास... लो दिया भी आ गयी.... बेटा तुम्हारा दोस्त विवेक आया है..."

"हाई विवेक कैसे हो..."

"वैसा ही हूँ जैसा सुबह था.. तुम बताओ.."

"मैं भी वैसी ही हूँ..."

"बैठो ना.. अपना ही घर समझो.. हे हे हे"

"नहीं तुम लोग बातें करो.. मैं ज़रा मम्मी की हेल्प कर देती हूँ"

"बेटा अपनी मम्मी से तो मिलवा लो एक बार इन्हे.."

"हां मैं मम्मी को ले कर आती हूँ.." कहते हुए दिया किचन की ओर चल दी

"और बताओ बेटा, पढ़ाई कैसी चल रही है.."

"ठीक ही चल रही है... बस एक टीचर को मेरी शकल पसंद नही है.. रोज़ कोई ना कोई बहाना कर के मुझे बाहर निकाल देती है.. बाकी तो सब सही है"

तभी दिया अपनी मम्मी के साथ आ गयी."लो मम्मी.. इससे मिलो.. यह है विवेक.. विवेक यह है मेरी मम्मी"

विवेक बस आंटी को घूरता ही जा रहा था और उसकी ज़बान से कोई शब्द नही निकल रहा था. "क्या हुआ विवेक.. चुप क्यूँ हो गये... वैसे तो बड़ा बोलते हो.." दिया की मम्मी ने पूछा

"अर्रे मम्मी आप एक दूसरे को जानते हो.. विवेक तुमने कभी बताया नही.."

"कभी तुमने भी तो नहीं बताया कि तुम्हारी मम्मी टीचर हैं और हमे पढ़ाती हैं..."

"और रोज़ जनाब को क्लास से बाहर भी निकालती हैं... फिर भी जनाब अगले दिन एक नया बहाना लाते हैं..." दिया की मम्मी बोली...

"हा हा हा... तो यह है वो टीचर बेटा जिनको तुम्हारी शकल पसंद नही... देखो दुनिया कितनी छोटी है... वैसे रश्मि मैं तो समझता था कि तुम्हें मेरी ही शकल पसंद नही, अब इस बेचारे बच्चे पे भी ज़ुल्म ढा रही हो..."

"बेचारा बच्चा !! पूछ लो ज़रा इस से कि क्यूँ नही घुसता क्लास में"

"अर्रे मम्मी आप क्या कॉलेज की बातें इधर कर रही हो... उसको और कॉन्षियस करवा दो.. खाना भी नही खा पाएगा वो..."

"नहीं ऐसी बात नही है.. खाना तो आराम से खा लूँगा.. पापी पेट बड़ा निर्दयी है... खाना सामने आते ही बाकी सब कुछ भूल जाता है.. हे हे हे" विवेक थोड़ा असमंजस में झूलता हुआ बोला...

"चलो मम्मी मैं आपकी किचन में हेल्प कर देती हूँ. पूजा और प्रतिक भी आते होंगे..." कहती हुई दिया अपनी माँ को किचन में ले गयी.

उधर प्रतिक भी पूजा के हॉस्टिल के बाहर खड़ा उसका इंतेज़ार कर रहा था. अब उसके पास अपनी गाड़ी तो थी नही, इसलिए टॅक्सी को भी रोका हुआ था. उस कंजूस को यह टेंशन और हो रही थी कि टॅक्सी का बिल बढ़ रहा है. काफ़ी देर जब इंतेज़ार करने के बाद उसको पूजा सामने से आती दिखी तो उसके होश उड़ गये. आज वो बला की सी सुंदर लग रही थी. एक सफेद टॉप और काली ३/४ जीन्स में वो कहर ढा रही थी. उसका फिगर उभर के बाहर आ रहा था और चाल ऐसी थी मानो सब आशिक़ों के दिलों पर वार कर दे.

"वाउ पूजा.. यू आर लुकिंग सेक्सी..."

"तुम भी अच्छे लग रहे हो प्रतिक..." पूजा ने उसके होठों पर किस करते हुए कहा

"आज लगता है २-४ लोग तो तुम्हें देखकर मर ही जाएँगे..." उसके पर्फ्यूम की भीनी भीनी सुगंध प्रतिक को मोहित करे जा रही थी

"अच्छा.. कोई बातें बनाना तुमसे सीखे.. चलो अब टॅक्सी में बैठो.. इतनी देर से हल्ला मचाया हुआ है बिल का.. अब खुद टाइम वेस्ट कर रहे हो"

"तुम्हें देखकर कोई टाइम वेस्ट कैसे कर सकता है पूजा.. तुम तो टाइम और पैसे की वसूली हो.."

"चलो अंदर आओ अब चुप चाप" नकली हसी हँसते हुए पूजा बोली. मन ही मन वो बहुत खुश हो रही थी कि उसके रूप का जादू, उसकी आशा के अनुसार ही प्रतिक को मंत्रमुग्ध कर रहा है. सारे सफ़र में प्रतिक बस उसी में खोया रहा और सफ़र कब कट गया उससे पता भी नही चला. थोड़ी ही देर में वो दोनो दिया के घर के बाहर खड़े थे और बेल बजा रहे थे. इस बार भी अंकल ने ही दरवाज़ा खोला.

"हेलो अंकल.. आप दिया के पापा है ना.."

"हां बेटा... प्रतिक और पूजा..."

"जी अंकल.."

"अंदर आ जाओ" कहते हुए अंकल ने उनको अंदर बुलाया. "तुम्हारा दोस्त तो पहले ही पहुँच चुका है.. तुम्हारी ही राह देख रहे थे.. बैठ जाओ..." अंकल ने उन दोनो को सोफे की तरफ इशारा करते हुए कहा. विवेक पूजा को आँखें फाड़ फाड़ के देख रहा था. इतनी सुंदर लड़की इतने पास से उसने आज तक नही देखी थी. अब सच मुच उसे डर लगने लगा था कि कहीं उसके मूह से कुछ उल्टा सीधा ना निकल जाए.. इसलिए उसने अपनी ज़बान पर कंट्रोल करना ही ठीक समझा. उधर पूजा का विवेक को देखते ही मूड ऑफ हो गया. वो उसे ऐसे घूर रहा था जैसे उसने कभी लड़की ही नही देखी.. पूजा को पूरा यकीन था कि अब वो कोई अजीब सी बात करेगा जिससे उसका दिमाग़ और खराब होगा. वो विवेक से

दूर को बैठ गयी लेकिन उसकी नज़रें अभी भी अपने उपर ही महसूस कर रही थी. तभी फोन की घंटी बजने लगी.

"बेटा तुम लोग थोड़ा बात करो.. मैं ज़रा देखूं फोन पे कौन है...प्लीज एक्सक्यूस मी" उन्होने दिया को भी आवाज़ लगा दी कि वो आ कर अपने दोस्तों के साथ बैठे और खुद दूसरे कमरे में फोन के पास चले गये. अगले १० मिनट उन्होने फोन पर ही बिताए और जो उन्होने सुना, उस पर उनको विश्वास नही हो रहा था. सारी कहानी सुनने के बाद वो अपने कंप्यूटर पर गये और अपने ईमेल अकाउंट में लोग इन किया. वहाँ चंद्रशेखर की तरफ से एक ईमेल आई हुई थी जिसमें एक वीडियो अटॅचमेंट था. उन्होने वो वीडियो डाउनलोड किया और आँखें फाड़ कर उसको देखते रहे. जो उस वीडियो में हो रहा था वो सच मुच कल्पना के परे थे. अब उनको चंद्रशेखर की कही बात बिल्कुल सही लगने लगी. वो समझ गया कि यह ही वो समय है जब इन चारों को इनकी ज़िंदगी की सच्चाई से रूबरू करवाना पड़ेगा

"क्या हुआ पापा.. इतने टेंशन में क्यूँ हो.. किसका फोन था..." अपने पापा को एक सीरीयस रूप में बाहर आते हुए देख दिया ने पूछा.

"बेटा बात थोड़ी सीरीयस है. अपनी मम्मी को भी बुला लो.. उनका भी यहाँ होना ज़रूरी है..."

"सर अगर कोई पर्सनल बात है तो हम जा सकते हैं... किसी और दिन कर लेंगे डिन्नर" अंकल को ऐसी हालत में देखकर प्रतिक ने बोला

"नही बेटा... इनफॅक्ट जो बात मैं बताने जा रहा हूँ, वो तुम सब लोगों के लिए ही इंपॉर्टेंट है... रश्मि यहाँ बैठो... आज वो दिन आ गया है जिसका हमे हमेशा से डर था.."

"हम लोगों के बारे में बात करनी है.... लेकिन हम तो आज पहली बार ही मिले हैं अंकल... क्या हो गया ऐसा..." पूजा बोली

"किस दिन का हमेशा से डर था पापा.. सॉफ सॉफ बोलो.." इस बार आवाज़ दिया के मूह से निकली थी

"सब बताता हूँ बेटा. बस थोड़ा सब्र करो. जो मैं तुम्हें बताने जा रहा हूँ, उसके उपर यकीन करने में शायद तुम्हें थोड़ी सी कठिनाई हो, पर मेरी बात पे डाउट बिल्कुल मत करना... बात आज से २० साल पहले की है...." और दिया के पापा सब कुछ बताते गये उन चारों को. "... तो यह था एक्सपेरिमेंट. और इसी का नतीजा हो तुम चार लोग"

कमरे में एकदम खामोशी छा गयी थी. चारों लोग मूह फाड़ कर कभी दिया की मम्मी की तरफ तो कभी उसके पापा की तरफ देखते. "अंकल सच सच बताओ कि आज कितनी पी है.. यह क्या एलीयन वॅलियेन का चक्कर चला दिया आपने... यह तो किसी मूवी की कहानी ही लगती है.. फ्लॉप मूवी रही होगी, तभी मैने देखी नही है..." नकली सी हँसी हँसते हुए विवेक बोला.

"बेटा यह किसी मूवी की कहानी नही है और ना ही मैने दारू पी हुई है.. जो सच्चाई है, मैं वो तुम सब को बता रहा हूँ..."

"चलो मान लिया कि यह सब सच है.. तो फिर आप हमे यह अभी क्यूँ बता रहे हैं... जैसे हम ने अपनी ज़िंदगी के १९ साल निकाल दिए, वैसे ही आगे भी तो निकाल सकते थे ना... ऐसी कहानी अभी सुनाने का क्या मतलब है हमे.." पूजा ने पूछा

"बेटा एक तो यह कहानी नही है... और अभी मैं तुम्हें इसलिए सुना रहा हूँ क्यूंकी...." कहते हुए अंकल ने एलीयन के आने की खबर और लॅबोरेटरी के डिस्ट्रक्षन की बात भी बता दी. "अब तुम्हें यकीन तो होगा नहीं, मुझे भी कोई यह बात बताता तो मैं भी यकीन ना करता. लेकिन मेरे को चंद्रशेखर ने एक वीडियो भेजा है. वहाँ कंप्यूटर पे आओ. मैं दिखाता हूँ तुम्हें." कहकर वो उन पाँचों को अपने कंप्यूटर के पास ले गये और वो वीडियो दिखा दिया

"देखो पापा.. इट्स नोट फन्नी... आप जो भी मज़ाक कर रहे हैं मेरे दोस्तों के साथ, वो बंद कीजिए.. बहुत ही गंदा मज़ाक है यह."

"बेटा काश यह मज़ाक होता. अब मैं तुम्हें कैसे बताऊ इस सच्चाई के बारे में.... क्या तुम्हें आज तक कभी लगा है कि तुम एलेक्ट्रिसिटी प्रोड्यूस कर सकती हो..."

"क्या... क्या बोल रहे हैं आप पापा...."

"बेटा मैने तुम्हारे शरीर के खून और डीएनए पे बहुत जाँच करी है... मैने पाया है कि तुम्हारे सेल्स में एलेक्ट्रिसिटी प्रोड्यूस करने की क्षमता है.... यह शायद इसी लिए है क्यूंकी तुम्हारे खून में वो एलीयन डीएनए का एक पार्ट है."

"क्या बोल रहे हो पापा... कैसी बात कर रहे हो....."

"बेटा बस मुझे यह बताओ कि तुम्हें कभी यह एहसास हुआ है कि तुम एलेक्ट्रिसिटी प्रोड्यूस कर सकती हो या नहीं....." इस सवाल का उत्तर दिया ने नही दिया. वो बस चुप हो कर कभी अपनी मम्मी और कभी अपने पापा को घूरे जा रही थी.

यह बात सुन कर प्रतिक, विवेक और पूजा के मन में भरे काफ़ी सवाल हल हो रहे थे. हालाँकि यह एक्सप्लनेशन काफ़ी अन्बिलीवबल था, पर पिछले कुछ दिनों के एक्सपीरियेन्स इस-से सॉफ एक्सप्लेन हो रहे थे. " उस डिस्क में क्या था जो उस आदमी के पास से गिरी थी... बताया चंद्रशेखर ने कुछ आपको" पूजा ने पूछा.

"हां बताया. और जो उसने बताया, वो बिल्कुल चौका देने वाला था..."

"बता दो जी बता दो... लगे हाथ सब बता दो... अभी कुछ ऐसा नही रहा है जो हमे और चौका दे.. अभी तो कोई कहे कि सचिन तेंदुलकर एलीयन है, तो भी हैरानी नही होने वाली हमें तो..." विवेक बोला... उसे पता नही क्यूँ यह सब सुन कर बड़ा मज़ा आ रहा था.

"ह्म.. तो सुनो.. उस डिस्क में चंद्रशेखर की लॅब की सारी इन्फ़ॉर्मेशन थी - लोकेशन वगेरह. और कुछ इंस्ट्रक्शन"

"अर्रे एक बार में बताओ ना.. क्यूँ बीच बीच में फ्यूज मार रहे हो..." पूजा अब अधीर हो गयी थी

"इन्फर्मेशन यह थी कि यूयेसेस आदमी को धरती पे आने के बाद करना क्या है."

"अर्रे आदमी तो आप हो अंकल. हम सब तो परदेसी हैं यहाँ.. वो भी परदेसी ही होगा..." हँसते हुए विवेक ने बोला...

"हां तो उस परदेसी को तुम लोगों को ढूँढना था और तुम लोगों को कॅप्चर करके अपनी स्पेसशिप में तुमपर रिसर्च करनी थी..."

"हम पर रिसर्च... किस चीज़ के लिए..." प्रतिक ने पूछा...

"वो देखना चाहते है कि उनका डीएनए कितना सुरक्षित है तुम्हारे अंदर.. क्या तुम्हारी एवोल्यूशन हुई है और तुमने उस पार्ट ऑफ डीएनए की प्रॉपर्टीस को आक्सेप्ट किया या रिजेक्ट किया - यह जान ना चाहते हैं वो. एक बार उनको यह पता चल जाएगा तो उससे उन्हें पता चलेगा कि उनके प्लॅनेट के लोगों के लिए यह धरती ठीक है या नही..."

"और अगर यह धरती ठीक हुई तो..." दिया ने पूछा

"तो वो यहाँ पर अटॅक कर के यहाँ पर अपनी प्रजाति बसाएँगे."

"वेट अ मिनट... आपके कहने का मतलब है कि वो पूरी धरती को टेकोवर करना चाहता हैं?" पूजा हैरानी में बोली

"यह मैं नही कह रहा, यह उस डिस्क से निकली इन्फर्मेशन है... अब यह सच है कि नही, यह तो पता नही लेकिन इन्फर्मेशन यही थी"

"दुनिया को बचाना हमारे हाथ में है... कूल.. मज़ा आएगा... सुपरमैन/स्पाइडरमन की जगह हम ने ले ली है... शायद हमारे उपर मूवीस बनेंगी... हम फेमस हो जाएँगे. यह तो वाकई एक अच्छी खबर है" विवेक खुशी में बोला

"खाक अच्छी खबर है... अपना मूह बंद रखो... वो कौन है, उनके पास क्या पॉवर हैं, हमे कुछ भी नही पता.. हो सकता है कि उनको हमारे बारे में सबकुछ पता हो... हो सकता है कि वो हम चारों की कंबाइंड शक्ति से भी ज़्यादा शक्तिशाली हो... तुम कभी यह बचपना छोड़ कर कोई सीरीयस बात करोगे?" पूजा ने गुस्से में खीजते हुए बोला

"देखो मेडम.. सीधा सीधा बताता हूँ. अब यहाँ सीरीयस हो कर दिमाग़ फाड़ने से कुछ होने वाला है नहीं... वो जो भी है, जो कुछ भी कर सकता है... इसका अंदाज़ा लगाना ऐसे तो मुमकिन नही है... अब या तो तुम यहाँ बैठ कर मातम मनाओ... या फिर हर एक पल को

जियो.. पता नही वो कब आ जाए और हमे ले जाए... पर एक बात पक्की है.. मैं उससे इतनी आसानी से हमे ले जाने नहीं दूँगा... साले को फाड़ के रख दूँगा एक मिनट में... कैसे नहीं पता.. पर हां.. जब ठान लिया तो कर ही डालूँगा... भगत सिंग के उपर विश्वास रखते है हम लोग... इतनी आसानी से उससे कुछ नही करने देंगे.. लेकिन अपने आप को कमज़ोर भी नही होने देंगे.. कमज़ोरी ना आए इसलिए अपने शरीर को बिल्कुल ठीक रखना है... उसके लिए खाने की ज़रूरत होगी.. मॅम खाना बन गया क्या.. खा ले क्या जल्दी से..." विवेक बोला

सब लोग हैरानी से विवेक की तरफ देखने लगे. ऐसे समय में भी उसको भूख लग रही थी. बाकी सभ की गोटिया गले में आई हुई थी और इसको खाना खाना था. लेकिन बात तो विवेक भी सही ही कह रहा था... ऐसे सोचने से तो कुछ फ़ायदा होने नही वाला. बस यह इंशुअर करना था के जब भी वो जीव आए, सब लोग पूरी तरह से प्रिपेर्ड रहें. थोड़ा सोचने के बाद सभी ने यह ही सोचा के खाना खा ही लेना चाहिए और खाने की टेबल पर बैठ गये. सभी ने दिया की मम्मी की हेल्प करी टेबल सजाने में और खाना लगाने में और खाना शुरू कर दिया...

"मेडम वैसे एक बात तो है..." खाना खाते हुए विवेक बोला

"क्या बात"

"आप खाना बहुत बढ़िया बनाती हैं... मुझे तो हैरत है कि दिया इतनी पतली कैसे रह गयी... ऐसा खाना मुझे मिलता तो फूल के हाथी हो गया होता"

"थँक्स फॉर दा कॉंप्लिमेंट... पर हम रोज़ ऐसा खाना नही खाते.. वो तो आज तुम सब आए हुए थे इसलिए बना दिया..."

"ह्म... अर्रे सब मुझे क्या देख रहो हो यार... ज़रा बाकी सब भी पास करो... सिर्फ़ पनीर भूर्जी और रोटी थोड़ा खाऊंगा.. हां अंकल वो चिकन इधर की ओर करना तो... कब से बुला रहा है मुझे पर शायद शर्मा रहा है.. आ नही रहा पास"

"विवेक तुम कितना बोलॉगे.. खाने खाते वक्त तो चुप रहो.. क्या लोगे चुप होने का" दिया ने पूछा

"चुम्मा लूँगा... दोगि?" विवेक ने चिकन पे कॉन्सेंट्रेट करते हुआ बोला और झट भाँप गया कि ग़लत जगह पर ग़लत डाइलॉग मार दिया है... "कहने का मतलब है तुम अपने खाने में कॉन्सेंट्रेट करो ना.. मेरा तो चलता ही रहता है" और बिना किसी से नज़र मिलाए वो खाने पर वापस टूट पड़ा.

"अर्रे आंटी क्या खाना बनाया था.. मज़ा आ गया.. लगता है कुछ ज़्यादा खा लिया.. ९ रोटियाँ और चावल.. लगता है पेट फॅट जाएगा..."

"१२ रोटी और चावल... लेकिन हम गिन थोड़े ना रहे थे... इतना खाओगे तो पेट फटेगा नही तो क्या कम होगा..." पूजा बोली

"अम्मा तुम एक चाकू पकड़ कर मेरे कलेजे में क्यूँ नही उतार देती अगर मैं इतना बुरा लगता हूँ तो... खाऊ तो तुम्हें प्राब्लम, बोलूं तो तुम्हें प्राब्लम... मुझसे नफ़रत करने के लिए ही पैदा हुई हो क्या... ऐसे मत देखो मुझे.. छुरिया चलती हैं तुम्हारी ऐसी नज़र से मेरे दिल पर..." विवेक ने पूजा को बोला... "चलो अंकल हम थोड़ा बाहर घूम लेते हैं... थोड़ा खाना हजम हो जाएगा और तब तक पूजा टेबल भी सॉफ कर देगी.. प्रतिक तू भी आ जा" कहते हुए उसने प्रतिक का हाथ पकड़ा और अंकल को साथ ले कर घर के बाहर निकल गया.

"बेटा कुछ बात करनी थी क्या जो मुझे ऐसे बाहर ले आए.."

"हां अंकल देखो बात तो सीधी है... मेरे और प्रतिक के साथ पिछले कुछ दिनों में काफ़ी घटनायें हुई हैं... आपका बताया एक्सप्लनेशन उन सब को एक्सप्लेन करता है लेकिन उसपे यकीन करना थोड़ा मुश्किल है... लेकिन सच तो यह है कि मेरे अंदर और प्रतिक के अंदर कुछ ऐसी पॉवर हैं जो और किसी भी तरह से एक्सप्लेन करना मुश्किल होगा..."

"पॉवर.. कैसी पॉवर..." हैरानी में अंकल ने पूछा...

"मुझे चोट नही लगती.. एक बार मेरा ट्रक से एक्सीडेंट हुआ और ट्रक में डेंट पड़ गया लेकिन मुझे कुछ नही हुआ.. अगर मैं अपनी उंगली काट दूं तो कुछ ही पलों में घाव ठीक हो जाता है..."

"इंट्रेस्टिंग.. और प्रतिक तुम.... क्या तुम भी सेम हो..."

"नही.. मेरी कहानी थोड़ी दूसरी है... मैं उड़ सकता हूँ..."

"व्हाट... अन्बिलीवबल... " अंकल ने कहा और उनके देखते ही देखते प्रतिक उड़ने लगा और छत पे चला गया.. फिर वो वहाँ से उड़ कर एक सर्कल लगा कर वापस नीचे आ गया...

"अन्बिलीवबल.. बट ट्रू..."

"माइ गॉड... अगर तुम यह सब कर सकते हो तो पता नही वो जीव क्या क्या कर सकता होगा.."

"अर्रे अंकल टेंशन नोट... हम हैं ना.. सारी दुनिया का भला करेंगे... " विवेक बोला..

"बेटा अननोन से हमेशा डर लगता है... जो पता है उसकी काट निकालना आसान है.. पर जो पता नही, उससे कैसे निपटोगे..."

"अंकल कुछ ना कुछ ज़रिया निकल ही आएगा.. आप टेंशन ना लो.. हम है ना.." प्रतिक बोला..

"तुम्हें पता है के पूजा क्या कर सकती है?"

"अभी तक तो पता नही अंकल..."

"ह्म... उसने अपने बारे में कुछ नही बताया.. मुझे लगता है कि वो पहले से ही इस बारे में जानती थी और तैयार है चुनोती के लिए..."

"अर्रे अंकल आप दिया की चिंता करो... वो बेचारी... उसको पता भी नही था शायद उसके अंदर पॉवर हैं .."

"उसकी चिंता छोड़ो... उसको मैं संभाल लूँगा... मुझे तुम लोगों की चिंता हो रही है..."

"अर्रे अंकल आप ऐसे ही चिंता कर रहे हो... ठंड रखो.. सब ठीक हो जाएगा..."

प्रतिक का इतना कहना ही था कि आसमान से जैसे आग बरस पड़ी... उनके आमने वाला पेड़ लपटों से घिर गया और जलने लगा... तभी एक धमाके की आवाज़ हुई और उनकी थोड़ी दूर धुआँ उठने लगा... कुछ ही पलों में दिया के घर का गेट ब्लास्ट हो गया था और सारी स्ट्रीट लाइट्स भी बंद पड़ गयी... इस अंधेरे में कुछ अनहोनी ना हो जाए, यह सोच कर विवेक और अंकल घर के अंदर भागे. प्रतिक उड़ के उपर उठ गया जिससे उसको चारों तरफ का नज़ारा दिख सके

प्रतिक को कुछ ज़्यादा नही दिख रहा था. चारों और घना अंधेरा था. ऐसा लग रहा था जैसे सारी लोकॅलिटी का करेंट गुल हो गया है. प्रतिक ने इधर उधर थोड़े नज़र दौड़ाई तो उसको गेट से अंदर घुसता हुआ एक आदमी दिखा. लगभग ७ १/२ फीट का वो आदमी बड़े ही अजीब ढंग से चल रहा था मानो उसकी एक टाँग खराब हो. देखते ही देखते उस जीव की हाइट छोटी होने लगी और वो एक नॉर्मल आदमी की तरह बन गया जिसकी शकल प्रतिक को उपर से नही दिख रही थी. प्रतिक का डर के मारे बुरा हाल था. उससे पता चल गया था कि हो ना हो, यह वही जीव है जिसने चंद्रशेखर की लॅब तबाह करी थी और अब वो इन सब को लेने आया है. अपनी जान बचाने के लिए प्रतिक छत पर ही थोड़ा झुक गया. और रह रह कर उस आदमी की तरफ देखता था. अब की बार जब प्रतिक की नज़र उस आदमी की तरफ गयी तो उसने पाया कि वो भी प्रतिक को ही देख रहा है. डर के मारे प्रतिक की हालत और पतली हो गयी और वो सोचने लगा कि अब क्या किया जाए. इससे पहले वो कुछ सोच पाता, अगले ही पल वो जीव भी छत के उपर था.

प्रतिक उसकी शकल देखने लगा. देखने में वो बिल्कुल एक नॉर्मल इंसान लग रहा था. शायद यहाँ आते वक़्त किसी की शकल देख कर उसने वैसा सा रूप धारण किया था. उसकी आँखों में एक अजीब सी हलचल थी. देखते ही देखते उसकी आँखें नॉर्मल आदमियों की आँख की बजाए पूरी काली हो गयी. प्रतिक को अब समझ में आ गया था कि उसको यहाँ से भागना ही पड़ेगा. उसने नीचे जंप लगाई और उड़ के आगे हो लिया. तभी उसने पाया कि उसके पैरों को कोई चीज़ जकड़े हुई है. पीछे मूड कर देखा तो वो उस जीव का हाथ था. हालाँकि प्रतिक उससे लगभग २० फीट दूर था, लेकिन उसके हाथ फिर भी प्रतिक का पैर पकड़े हुए थे. प्रतिक ज़ोर ज़ोर से "बचाओ बचाओ" चिल्लाने लगा. वो अपनी पूरी कोशिश करने के बावजूद भी आगे नही उड़ पा रहा था और एक ही जगह पर स्टेशनरी हुआ पड़ा था. फिर धीरे धीरे वो उस जीव की तरफ जाने लगा. उसने चीखना बंद नही किया था. तभी उसने देखा दरवाज़ा खुला और विवेक भागता हुआ बाहर आया. छत से पतंग की हालत में बँधे प्रतिक को देख कर विवेक की भी फट गयी. उसको कुछ पल लगे यह समझने में कि प्रतिक किसी रस्सी से नही, उस जीव के हाथ से बँधा हुआ है.

विवेक ने आस पास नज़र दौड़ाई और एक बड़ा सा पत्थर उठा लिया. उसने वो खीच के उस आदमी को मारा. पत्थर तो उसे लगा नही लेकिन उसका ध्यान थोड़ा बँट गया. ध्यान बँट-ते ही उसकी पकड़ थोड़ी ढीली पड़ी और प्रतिक छूट निकला.

अब उस जीव का ध्यान विवेक की ओर गया. वो कूद के नीचे आया और भाग के विवेक से टकराया. विवेक ने अपने आप को बचाने की कोशिश करी पर बचा ना पाया. लेकिन उस तेज़ टक्कर से वही हुआ जो ट्रक के साथ हुआ था. विवेक वहीं का वहीं खड़ा रहा और वो जीव कराहता हुआ दूर जा गिरा. इससे पहले विवेक कुछ समझ पाता, प्रतिक ने उसे पकड़ा और अपने साथ तेज़ी से कहीं ले कर जाने लगा.

"कहाँ जा रहा है..." विवेक ने उसे पूछा

"कहीं दूर. यहाँ रहना सेफ नही है"

"अर्रे घर में अंकल, आंटी, दिया और पूजा भी हैं.. हमे उनको बचाना चाहिए"

"पहले अपने आप को बचाओ, फिर दूसरों को बचाएँगे.. हम ने ठेका नही ले रखा है उनका."

"प्रतिक कमऑन. पागल हो गया है क्या.. हमारे फिर भी कुछ पॉवर हैं.. पता नही उनका क्या होगा."

पता नही प्रतिक को क्या सूझी कि वो भी वापस मूड गया. शायद उसमें थोड़ा कॉन्फिडेन्स आ गया था कि वो लोग उस जीव को हरा सकते हैं. उसने अपनी स्पीड बहुत तेज़ कर दी. तेज़ी से उड़ता हुआ वो जब वापस पहुँचा तो उसने देखा कि वो जीव अभी भी उपर देख रहा है... उसने पूरे ज़ोर से विवेक को उसकी तरफ फेंक दिया. विवेक ज़ोर से जाकर उस जीव पे गिरा और उस जीव की थोड़ी सी टांगे ज़मीन में धस गयी. विवेक बेतहाशा आँखें बंद कर के उस जीव पे मुक्कों की बरसात करने लगा. अब प्रतिक भी नीचे उतर आया और दोनो उस जीव को मारने लगे. वो जीव थोड़ा निढाल पड़ गया था और अजीब सी आवाज़ें निकाल रहा था. थोड़ी देर और मार खाने के बाद उस जीव के अंदर से खून जैसा कोई पदार्थ निकला जिसने विवेक और प्रतिक के हाथों को जलाना शुरू कर दिया. चीख मार के

प्रतिक साइड पे हुआ लेकिन विवेक पे इसका असर नही हुआ. तब तक घर के अंदर से सभी बाहर आ गये और वो नज़ारा देखने लगे.

फिर उस जीव के अंदर से दो और हाथ निकले जिन्होने विवेक को जकड लिया. विवेक बुरी तरह से छटपटाने लगा. फिर उस जीव ने विवेक को अपने से दूर फेंक दिया. विवेक का सर जा कर दीवार से लगा जिससे उसको चक्कर आने लगे और वो ज़मीन पर पस्त हो गया. प्रतिक भी तब तक अपने आप को संभाल चुका था. जीव को विवेक की तरफ बढ़ते देख, उसने फिर उड़ के विवेक को उठा लिया और थोड़ी दूर ले गया. जीव ने फिर से अपने हाथ बढ़ाए और प्रतिक को पकड़ा और तेज़ी से अपने पास खीचने लगा. यह देख पूजा भी हरकत में आई और उसने अपनी पॉवर से उस जीव को उपर उठा लिया. हड़बड़ा कर उस जीव ने प्रतिक को छोड़ दिया. प्रतिक का बॅलेन्स ठीक नही रहा और वो जा कर दीवार से भिड़ गया और बेहोश हो कर विवेक के साथ नीचे गिर गया. पूजा ने उस जीव को हवा में गोल गोल घुमाना शुरू कर दिया. फिर उसने देखा कि जीव के चारों हाथ उसको पकड़ने के लिए उसके पास आ रहे हैं. उसने अपनी आखें बंद कर दी और पूरी तरह से कॉन्सेंट्रेट करने लगी. उस जीव के ३ हाथ पूजा के आर पार हो गये लेकिन चौथे ने उसको पैर से पकड़ लिया. पूजा का ध्यान टूटा और वो जीव धम्म से नीचे आ गिरा. नीचे गिरने की साथ ही उसके चारों हाथ वापस रिट्रेट हुए और उसके अंदर घुस गये. वो निढाल हो कर ज़मीन पर पड़ा हुआ था जैसे मर गया हो.

"लगता है वो मर गया. " दिया उसके पास जाते हुए बोली

"दिया उसके पास मत जाना... प्रतिक और विवेक को देखो" पूजा चिल्लाई लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी. उस जीव के दो हाथ तेज़ी से निकले और दिया को जकड लिया. जैसे ही वो हाथ दिया से टकराए, उनमें तेज़ करेंट दौड़ गया. उस जीव ने अपने दोनो हाथ जल्दी से पीछे खीचे और दिया को छोड़ दिया... दिया ने पूरी कॉन्सेंट्रेशन के साथ अपनी सारी पॉवर इकट्ठी करने की कोशिश करी और एक तेज़ बिजली का झटका उस जीव की तरफ फेंका. अजीब सी आवाज़ निकाल कर वो जीव जा कर उस जलते पेड़ से टकराया जो गिर गया और चारों ओर आग ही आग हो गयी. यह देख कर वो जीव थोड़ा घबरा गया और जल्दी से खड़ा हो कर भाग निकला. उस जीव को भागता देख सब लोग विवेक और प्रतिक की तरफ गये. विवेक अपना सर पक्कड़ कर बैठा था पर प्रतिक अभी तक बेहोश था. तभी सारा माहौल फाइयर ब्रिगेड के साइरेन्स से गूँज उठा. विवेक ने प्रतिक को उठाया और सब लोग घर के अंदर आ गये

# INDIAN BEST TELEGRAM ADULT (18 ) CHANNELS

## हिंदी Adult स्टोरी, Adult कॉमिक्स, सबसे अनूठे देसी मस्ती भरे XXX वीडियोज, हिंदी एडल्ट शायरिया, फन्नी एडल्ट जोक्स का अनूठा संगम..!! 🔞💯

(***Top To Click Here Join***)

**X Night Clubs**

***Click Here***

**Adult Comics Club**

***Click Here***

**Adult Shayari & Stories**

***Click Here***

**Night Club Chat Group**

***Click Here***

**18 Vargin Girls**

***Click Here***

जब सब सकुशल अंदर पहुँच गये तो उनकी जान में जान आई.

"अंकल देखो ना प्रतिक को क्या हो गया है... साँसें तो चल रही हैं पर उठ नही रहा है.." विवेक बोला

"बेहोश हो गया होगा बेटा.. वहाँ सोफे पे रखो मैं देखता हूँ" अंकल ने कहा तो विवेक ने प्रतिक को सोफे पे रख दिया और अंकल उसको टटोलने लगे..."लगता है सर पे चोट लगी है.. थोड़ी आइस ले आओ.. अगर थोड़ी देर में होश नही आया तो लगता है के हॉस्पिटल ले कर जाना पड़ेगा"

"मैं लाता हूँ आइस" कहता हुआ विवेक किचन की तरफ भागा और जल्द ही आइस ट्रे ले आया. एक नॅपकिन में थोड़े आइस क्यूब लपेट कर फिर अंकल प्रतिक के सर पर ठंडक पहुँचने की कोशिश करने लगे

"आंटी एक बात पूछूँ.." थोड़ी देर में विवेक बोला

"प..प्प..पूछो ब्ब.. बेटा" आंटी बोली.. वो अभी तक उस हादसे से थोड़ा हिली हुई थी

"जी वो फ्रिज में जलेबियाँ पड़ी हुई हैं... ज़्यादा पुरानी तो नही हैं?"

उसका यह कहना था के सब उसकी तरफ घूर घूर के देखने लग गये. "खाना खाना खाना... और कुछ सूझता है क्या तुम्हें.. पूरा वक़्त बस खाने की फिकर करते रहते हो तुम विवेक.. ग्रो अप..." गुस्से में पूजा बोली

"अर्रे ग्रो होने के लिए ही तो खाना ज़रूरी होता है.. और तुम्हें क्यूँ मिर्ची लग रही है.. तुम मत खाना... मेरे जलेबियाँ खाने या ना खाने से प्रतिक की हालत पर तो कुछ असर होने नही वाला... तुम चुप ही अच्छी लगती हो.. हर बात में टाँग मत अड़ाया करो... हां तो आंटी आपने बताया नही"

"बेटा कल शाम की हैं...." थोड़ा झिझकते हुए आंटी ने बोला..

"ठीक है तो फिर मैं ले आता हूँ.. कुछ पेट में जाएगा तो दिमाग़ भी चलेगा..." विवेक बोला

"हम अभी थोड़ी देर पहले ही खाना खा के हटे हैं विवेक... पेट में बहुत कुछ है" दिया बोली

"यार क्या है तुम लड़कियों के साथ... तुम्हें भी नहीं मिलेंगी अब जलेबियाँ.." कहता हुआ विवेक उठा और फ्रिज से जा कर पॅकेट उठा के ले आया और खाने लगा... "चलो अब एक बात तो बिल्कुल क्लियर है कि हम सब लोगोंके पास कोई ना कोई पॉवेर है.. "

"हां.. और अब लगता है के जो पापा ने बात बताई थी उसपे विश्वास करने के सिवा हमारे पास और कोई चारा भी नही है..."

"हां और अब सवाल यह उठता है कि आगे किया क्या जाए... मुझे यकीन है कि जीव इतनी आसानी से हार तो मानेगा नही.. इस बार वो और भी ज़्यादा तैयारी के साथ वापस आएगा" पूजा बोली

"हां. और हमे भी इस बार उसके लिए तैयार रहना पड़ेगा.. हमे.." विवेक का सेंटेन्स बीच में ही रुक गया जब उसको प्रतिक की आह सुनाई दी.. "अर्रे प्रतिक को होश आ रहा है" कह कर वो उसके पास हो गया

"सर घूम रहा है मेरा" प्रतिक अपना सर पकड़ के बोला

"ले थोड़ी जलेबी खा ले"

"वो गया क्या..."

"हां.. भगा दिया उसको हम ने.... तू जलेबी खा ना" विवेक ने फिर से पॅकेट उसकी तरफ करते हुए बोला"

"अर्रे नहीं खानी यार तेरी जलेबी.. दूर कर.. और मेरे सर पे मत बैठ.." गुस्से में प्रतिक ने विवेक के हाथ को धकेला जिससे पॅकेट नीचे गिर गया और जलेबियाँ फर्श पे बिखर गयी

"यार क्या दुश्मनी है तुम लोगों की जलेबी से.. नही खाना था तो मत खाता. साले अब मैं भी नही खा पाऊंगा... कैसा दोस्त है तू.. उठा के तुझे अंदर मैं लाया और उसके बदले में तूने जलेबियाँ गिरा दी..."

"विवेक मेरा सर फॅट रहा है तू चुप हो जा अभी !!" प्रतिक ने चिल्लाते हुए कहा..

"हॅना हां छोड़ अब इस बात को.. अर्रे आंटी आप ज़हमत मत उठाओ... मैं क्लीन करता हूँ ना" आंटी को नीचे झुकते हुए देख विवेक बोला.." इनफॅक्ट पूजा क्लीन कर देगी उसकी पॉवर से तो उसे झुकना भी नही पड़ेगा.. हैं ना पूजा... अर्रे ऐसे मत घूर मुझे.. सीरीयस बात चल रही है.. जल्दी से उठा दे.. कुछ तो कन्स्ट्रक्टिव यूज़ कर पॉवर का... हां तो अंकल आगे का क्या प्लान है.. क्या करना चाहिए हम को.. आप थोड़ा मार्ग दर्शन कीजिए"

"बेटा बात तो यह है कि इस बारे में मैं भी तुम लोगों जितना क्लूलेस ही हूँ. चंद्रशेखर ने मुझे बोला था के वो यहाँ आ रहा है... तो मुझे लगता है कि उसके यहाँ आने का इंतेज़ार करना चाहिए हमे... शायद वो ही बता सकता है कि आगे क्या करें"

"मुझे भी यही ठीक लगता है.. शायद वो जीव इतनी जल्दी वापस हमला नही करेगा... हमे चंद्रशेखर का इंतेज़ार करना चाहिए" पूजा बोली

"अर्रे ज़िंदगी हमारी है.. इसके बारे में फ़ैसला लेने वाला चंद्रशेखर कौन होता है... ज़रूर उसने एक्सपेरिमेंट्स करके ही हमे बनाया है पर इसका यह मतलब नही है कि हम पूरी तरह से उसके हो गये हैं.. उसी की वजह से आज हम इस मुश्किल में फसे हैं... मेरा मान-ना है कि हमे जो करना है जल्द से जल्द करना चाहिए. जब तक वो जीव अपना होश संभाले, हमे यहाँ से निकल लेना चाहिए." विवेक बोला

"भागना इस मुसीबत का हल नही है विवेक. जैसे उसने हमे यहाँ ढूँढ लिया है, हो सकता है २ दिन में कहीं से भी ढूँढ ले...

पूजा और पापा सच कह रहे हैं.. इस बारे में चंद्रशेखर की राई बहुत इंपॉर्टेंट है... हमे उसका इंतेज़ार करना चाहिए.. वैसे भी मुझे लगता नही है कि प्रतिक अभी कहीं जाने की हालत में है..." दिया बोली

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी आए तुम करो.. मैं तो यहाँ से निकल रहा हूँ.. तुम लोगों के भेजे में एक सीधी बात भी नही पड़ती..." विवेक ने गुस्से में कहा

"विवेक सीधी बात तुम्हारे भेजे में नही पड़ रही है.. क्यूँ हर चीज़ में इतना ज़िद्दी हो कर मनमानी करने की कोशिश करते हो तुम.. तुमने देख लिया है कि हम चारों को मिल के भी उस जीव का सामना करने में कितनी मुश्किल थी... अब जब वो हमारी पॉवर जान गया है तो और भयंकर बन के आएगा अगली बार.."

"विच ईज़ एग्ज़ॅक्ट्ली माइ पॉइंट पूजा... मुझे नही लगता कि हम उससे जीत सकते हैं.. हमे उसका काम मुश्किल करना है और यह तभी होगा जब हम यहाँ नही होंगे.. हम किसी चूहे की तरह बिल में दुबक कर मौत का इंतेज़ार नही कर सकते. चारों अलग अलग दिशा में जाएँगे तो उसको ४ गुना ज़्यादा परेशानी होगी हमे अगवा करने में.. खैर मैं तुमसे कोई बहेस नही करना चाहता.. तुम्हें जो करना है करो.. मैं यहाँ से जा रहा हूँ और जल्द ही यह देश भी छोड़ दूँगा" कहता हुआ विवेक पीछे मूड गया

"कोई कहीं नही जा रहा जब तक चंद्रशेखर नही आता आंड थ्ट्स फाइनल विवेक" कहते हुए पूजा ने अपनी पॉवर से विवेक को हवा में उठा लिया.

# २२

इस बात को आज १ साल बीत चुका था. लेकिन फिर भी इस घटना का हर एक व्याख्या विवेक के दिमाग़ में एकदम फ्रेश था जैसे यह कल की ही बात हो. दिया का उसको पूजा से बचाना और फिर उसको समझाना कि ऐसे भाग के कुछ फ़ायदा नहीं है क्यूंकी नयी ज़िंदगी शुरू करने के लिए सबसे इंपॉर्टेंट चीज़ उनके पास नही है - पैसा. वैसे भी अगर इस ग्रूप में से कोई भी तब चला जाता और वो जीव वापस अटॅक कर देता तो उसको रोकना नामुमकिन हो जाता. यही बात सुनकर विवेक वहाँ रुक गया था और आज उसको लग रहा था कि उसने सही काम किया वहाँ रुक कर.

२ घंटे के अंदर चंद्रशेखर वहाँ पहुँच गया था अरुणा के साथ. उसने वापस वही सब बातें उन चारों को बताई और उनको हेल्प करने में कोई भी सहयता करने में असमर्थता जताई. वो सिर्फ़ थोड़े पैसे दे सकता था जिनसे वो लोग अपनी नयी ज़िंदगी शुरू कर सकते थे. काफ़ी सोच विचार करने के बाद एक फ़ैसला हुआ था - ८ लोगों के ४ ग्रूप्स बनेंगे जो दुनिया के अलग अलग कोने में जाएँगे. २ ग्रूप्स तो बिल्कुल डिसाइडेड थे - चंद्रशेखर और अरुणा का एक ओर दिया के मम्मी और पापा का एक. बाकी २ ग्रूप्स डिसाइड करने में काफ़ी देर लगी. इससकी वजह थी इन लोगों की अलग अलग पॉवर. चंद्रशेखर का मान-ना था कि क्यूंकी विवेक और प्रतिक के पास सिर्फ़ डिफेन्सिव पॉवर थी, इसलिए उन दोनों को साथ रहना चाहिए ताकि एक दूसरे को बचा सकें उस जीव से. पूजा और दिया साथ रह कर उस जीव को ढूँढ कर ख़तम करने की कोशिश कर सकती थी. लेकिन यह प्लान तब फैल हो गया जब उन चारों ने यह इच्छा ज़ाहिर करी कि उस जीव को मार कर कोई फ़ायदा नही होगा. क्या पता कितने और जीव इस वक्त धरती की तरफ बढ़ रहे हो. काफ़ी समय तक माथापच्ची करने के बाद और विवेक और दिया के साथ रहने के फ़ैसले पर अडिग होने के बाद, विवेक और दिया और प्रतिक और पूजा के ग्रूप बन गये. चंद्रशेखर ने अपने काँटॅक्ट्स यूज़ कर के रात-ओ-रात आठों लोगों के लिए नयी पहचान के पासपोर्ट्स, डॉक्युमेंट्स एट्सेटरा तैयार करवा लिए और अगली ही सुबह सब अपनी अपनी नयी डेस्टिनेशन्स की तरफ चल पड़े. डिसाइड यह हुआ था कि कोई भी किसी दूसरे को काँटॅक्ट करने की कोशिश नही करेगा. चंद्रशेखर ने अपना एनक्रिपटेड ईमेल अड्रेस सब को दे दिया था और सिर्फ़ कोई मुसीबत आने पर वहाँ पर काँटॅक्ट करने के लिए बोला था.

विदाई का समय सब के लिए बहुत ही दुख भरा था. अपने सारे परिवार, दोस्तों को छोड़ कर एक नयी ज़िंदगी शुरू करना उन्हें बहुत मुश्किल लग रहा था. पर वक़्त के साथ साथ सब मुश्किले हल हो ही जाती हैं. विवेक और दिया एक छोटे से आइलँड पर शिफ्ट हो गये. दुनिया से दूर यह आइलँड मेन्ली टूरिस्ट्स के लिए था. वहाँ पर रहने वाला हर एक बंदा टूरिस्ट्स के लिए ही कोई ना कोई सर्विस चलाता था. विवेक और दिया ने भी अपना एक छोटा सा रेस्टोरेंट खोल लिया था. आज उन दोनो की शादी थी जिसके कारण विवेक यह सब पुरानी बातें याद कर रहा था. २१ साल की छोटी सी उमर में आज विवेक एक लड़के से आदमी बनने जा रहा था. उसको अजीब तो बहुत लग रहा था पर इस बात की बहुत खुशी थी कि जिसको प्यार किया उसी के साथ शादी कर रहा है. एक महीने पहले ही उसने दिया को प्रपोज़ किया था और दिया ने झट से हां कर दी थी. पिछला एक साल उन दोनो के लिए बहुत मुश्किल गुज़रा था. इतनी सी उमर में इतनी सारी ज़िम्मेदारी टूट पड़ने से दोनो जैसे टूट ही गये थे.

कभी कभी तो दोनों साथ बैठ कर सोचते थे कि ऐसा उन के साथ ही क्यूँ हुआ.. क्यूँ जिस उमर में उनको दुनिया देखनी चाहिए थी, उसी उमर में दुनिया को बचाने की इतनी बड़ी रेस्पॉन्सिबिलिटी उनके उपर आ गयी है. ऐसे समय में दोनो एक दूसरे का सहारा बनते और यह आश्वासन दिलाते के यह दिन भी बीत ही जाएँगे. यही कारण था कि जब उनका रेस्टोरेंट का बिजनेस अब चल पड़ा था तो विवेक ने ज़रा भी देर नही करी. जिस साथी ने उसका बुरे वक्त में साथ दिया, वो चाहता था कि सही वक़्त की शुरुआत से ही दोनो एक अटूट बंधन में बँध जायें.

पिछले एक साल से चंद्रशेखर को किसी ने भी काँटॅक्ट नही किया था जिससे वो बहुत खुश था. उसको विश्वास होने लगा था कि वो एलीयन वापस भाग गया है और शायद कभी भी लौट कर नही आएगा. आएगा भी तो इन लोगों को ढूँढने में उसको बहुत कठिनाई होगी. उस ने भी अरुणा से शादी कर ली थी और दोनो अपने बचाए पैसों के सहारे आराम से जी रहे थे. उन का प्यार पिछले एक साल में और भी बहुत बढ़ गया और दोनो अपनी ज़िंदगी से बहुत खुश थे. एक साल बाद जब उस ईमेल आइडी पर एक मैल आया तो चंद्रशेखर बहुत घबरा गया. काँपते हाथों से उसने वो ईमेल खोला और उसे पढ़ कर उसके चेहरे पर एक मुस्कान छा गयी

"अरुणा... यहाँ आओ तो ज़रा.. यह देखो"

"हां चंद्रशेखर" अरुणा ने उसके पास आ कर कहा

"देखो विवेक और दिया ने शादी कर ली है.. फोटोस भेजी हैं अपनी" और वो फोटोस देखने लगे

"कितने सुंदर लग रहे हैं दोनो.. एक साल में बहुत बदल गया है विवेक तो"

"हां.. मुझे लगता है ज़िंदगी ने इसको जीना सीखा दिया है. कितना मेच्यूर लग रहा है.. दिया भी कितनी सुंदर लग रही है... दोनो कितने खुश लग रहे हैं"

"बिल्कुल हमारी तरह चंद्रशेखर. सच बताऊ तो मैं इस बात से बहुत खुश हूँ कि तुमने वो सब पीछे छोड़ दिया और आराम से हम अब साथ रह रहे हैं... मैं रोज़ खुदा का इस बात के लिए शूकर करती हूँ" अरुणा ने चंद्रशेखर को अपनी बाहों के घेरे में लेकर चूमते हुए कहा. चंद्रशेखर के प्यार ने उसकी ज़िंदगी के वो सब शिकवे मिटा दिए थे जो कभी उससे थे. अपना घर, जिसमें सिर्फ़ वो दोनो हो.. बस एक औलाद की कमी उसको पूरा वक़्त खलती थी पर उससे पता था कि इस उमर में ट्राइ करना भी बेकार होगा क्यूंकी वो बच्चा शायद ना कॅरी कर पाए. वैसे भी वो अपनी ज़िंदगी से बहुत खुश थे और अभी कोई रिस्क नही लेना चाहते थे.

पूजा और प्रतिक की ज़िंदगी सबसे उलट गुज़र रही थी. दोनो साथ तो रहते थे लेकिन अब एक दूसरे को फूटी आँख नही भाते थे. जब से पूजा ने प्रतिक पर चोरी करने का प्रेशर डालना शुरू किया था, प्रतिक उससे एक दूरी बनाने लग गया था. जिन वॅल्यूस के साथ उसकी परवरिश करी गयी थी, वो कतयि यह इजाज़त नही देती थी कि अपने फ़ायदे के लिए किसी दूसरे का नुकसान करो. और सिर्फ़ क्यूंकी उनमें स्पेशल पॉवर थी, इसका यह मतलब नही था कि वो दुनिया को अपने इशारों पर नचाए. प्रतिक ने कॉलेज जॉइन किया हुआ था जहाँ से वो अपनी पढ़ाई पूरी कर रहा था. पार्ट टाइम में छोटी मोटी नौकरी कर के वो अपना पेट पाले हुए था. उसको पैसों की कमी से इतना दुख नही होता था जितना पूजा के रवैय्ये से होता था. वो पूजा जो कभी उस पर जान तक न्योछावर करने को तैयार थी, आज उसकी तरफ देखती भी नही थी. ऐसा नही था कि प्रतिक को उससे बहुत प्यार हो गया था या उसके प्यार को तरस रहा था, पर यह बात उसको हमेशा अंदर ही अंदर कचोट-ती थी कि लोग इतना मतलबी कैसे हो सकते हैं. क्या उसकी किस्मत में यही था कि वो अपने सिद्धांतो के कारण एक अच्छी दोस्त खो बैठे??

इस मुश्किल के समय में उसकी ज़िंदगी में अली आया. प्यार से लोग उसको मेरियाइज़ा कहते थे. छोटा नाम होने के बावजूद लोग उससे बड़े नाम से संबोधित क्यूँ करते थे, यह तो

अली को भी नही मालूम था पर प्रतिक उसको पहली ही नज़र में भा गया था. प्रतिक उसको एक अच्छे दोस्त की तरह ही ट्रीट करता था लेकिन अली उस से मन ही मन प्यार कर बैठा था. उसको मालूम था कि इस प्यार को दुनिया की मंज़ूरी नही मिलेगी लेकिन उसका दिल इस मामले में उसके दिमाग़ से कहीं आगे था. प्रतिक भी कई बार यह सोचता था कि अगर अली ना होता तो उसका क्या होता. अली एक दिए की तरह था तो उसकी ज़िंदगी के सबसे अंधेरे समय में उसके साथ रहा और उसका मार्गदर्शन किया. वो अली को अपना बहुत ख़ास दोस्त मानता था और उसके लिए कुछ भी करने को तैयार था.

बहुत ज़्यादा तो नही, पर पूजा अपनी ज़िंदगी से खुश थी. छोटी-मोटी चोरियाँ करके उसके पास बहुत पैसा आ जाता था. जब भी पैसे की ज़रूरत पड़ी, वो एक छोटा हाथ मार लेती. उसका दिमाग़ बहुत गरम हुआ था जब प्रतिक ने उसको मना कर दिया था. कितने ख्वाब बुने थे उसने अपने और प्रतिक के लिए. क्या क्या नही कर सकते थे वो दोनो अगर साथ हो तो. लेकिन एक प्रतिक था जो किसी पुरानी हिन्दी फिल्म के सिद्धांतवादी बाप के रोल से परे नही हट रहा था. कितना भी मनाने की कोशिश करो, उसका वही घिसा पिटा "वॅल्यूस" वाला टेप शुरू हो जाता था. वो उन लोगों में से तो था जो दुनिया के तलवों के नीचे आने को तैयार थे लेकिन थोड़ी सी भी हेरा फेरी जिन्हे मंज़ूर नही थी. खैर, पूजा आराम से उस के साथ रहती. उसकी खूबसूरती बढ़ती जा रही थी. जहाँ फ्लॅट के एक ओर प्रतिक रात को काम से थक कर वापस आता, वहीं दूसरी ओर पूजा हर दूसरे दिन किसी नये लड़के के साथ नशे में झूमती हुई आती. यह ज़िंदगी उसको बहुत पसंद आ रही थी. ना कोई कमिटमेंट, ना कुछ - बस हर रात एक नया मज़ा. उस रात भी वो दारू के नशे में धुत्त बार में बैठी थी जब उसने एक आदमी को आते देखा. अजीब सी सादगी थी उसके चेहरे में. पूजा ने अपनी आज की रात उसी के नाम करने की सोची. जब उस आदमी ने थोड़े पेग पी लिए तो पूजा उसके पास जा कर बैठ गयी, पर उसने बिल्कुल ध्यान नही दिया. पूजा के साथ ऐसा पहली बार हुआ था नही तो उसकी सुंदरता को देख कर हर कोई उससे दोस्ती करना चाहता था. किसी तरह से उसने उस लड़के से बात करनी शुरू करी तो पता चला कि उसका नाम विकास है. वो काफ़ी शरमा रहा था उससे बात करते हुए और थोड़ी ही देर में झूमता हुआ चल पड़ा बार से बाहर.

ऐसी हार पूजा को कतयि मंज़ूर नही थी. उसने भी अपना बिल दिया और जल्दी से बार से बाहर निकली. इधर उधर उसने नज़र घुमाई तो विकास उसे कहीं ना दिखा. तभी खंबे के सहारे खड़े एक आदमी पर उसकी निगाह गयी. वो आदमी लड़खड़ाते हुए सड़क क्रॉस करने लगा. तभी पूजा ने देखा कि सामने से एक ट्रक आ रहा है. यह पक्का था कि ट्रक की

भिड़ंत उस आदमी को जान से मार ही देगी क्यूंकी समय रहते वो आदमी रोड क्रॉस नही कर पा रहा था. पूजा ने अपनी पॉवर से ट्रक को रोकने की कोशिश करी. फुल स्पीड में आता ट्रक काफ़ी रुक गया था पर पूजा के भी नशे में होने के कारण, पूरी तरह से नही रुका और उस आदमी को टक्कर मार ही दी. वो आदमी थोड़ी दूर जा कर गिरा और पूजा ने ट्रक पे से पॉवर हटा दी. थोड़ी पास जा के देखा तो वो आदमी विकास ही था. आँखों मे उसे ना बचा पाने के आँसू ले कर पूजा उस दिन अकेले ही घर चल पड़ी

घबरा कर पूजा घर में घुसी और फूट फूट कर रोने लगी. उसने पहले भी कई मौतें देखी थी, पर पता नहीं क्यूँ, इस मौत ने उसे हिला दिया था. एक तरह से इस हादसे ने उसे दर्शा दिया था कि हर चीज़ जैसे वो चाहती है, वैसे नहीं हो सकती. पिछले एक साल से जिस बेफिक्री के किले में वो घूम रही थी, आज उसकी दीवारें शायद कुछ कमज़ोर पड़ गयी थी. उसको एहसास हो रहा था कि जिन पॉवर पे उसको इतना गुमान था, वो भी कोई गॅरेंटी नही दे सकती थी उसकी सेफ्टी की. आज वो बहुत ही वल्नरबल महसूस कर रही थी. उसको इस हालत में देख प्रतिक दौड़ा चला आया.

"क्या हुआ पूजा..." उसने बड़ी ही चिंता से पूछा. उसे किसी अनहोनी हो जाने की शंका थी

"प्रतिक वो.. वो.. वो..." इतना ही कह पाई पूजा और फिर फूट फूट के रोने लगी

"पूजा क्या हुआ.. कुछ बताओगी भी" उसको चुप ना होते देख प्रतिक और अधीर होता जा रहा था

"वो .. वो वहाँ.. सड़क पे..." इतना ही कह पाई पूजा के आँसुओं का सैलाब फिर उमड़ पड़ा और वो प्रतिक से चिपक गयी. प्रतिक को लग गया था कि पूजा इतनी आराम से चुप होने वाली नहीं है. वो उसको सहारा दे कर धीरे धीरे उसके बालों में हाथ फेरने लगा

"चुप हो जाओ पूजा. कुछ नही हुआ. एवरीथिंग ईज़ ऑलराइट. हिम्मत रखो.. और भगवान के लिए बताओ कि हुआ क्या है"

"वो.. वो एक्सीडेंट.."

"बस पूजा इतनी सी बात... इस देश की आबादी इतनी है कि हर पल सेकड़ों एक्सीडेंट होते हैं.. एक तुमने देख लिया तो क्या हुआ... यह कैसी पूजा है जो एक एक्सीडेंट देख कर इतना घबरा गयी है... जिस पूजा को मैं जानता हूँ वो तो बहुत ही बहादुर और निडर है.. चलो अब आँसू पोछो अपने" उसने पूजा को दिलासा देते हुए कहा

थोड़ा होसला रख कर पूजा ने भी अपना सर उसके कंधे से उपर उठाया और वहाँ अली को खड़ा देखकर एकदम चोंक गयी. अली का मूह ऐसे खुला हुआ था जैसे उसने किसी बकरी को भरतनाट्यम करते हुए देख लिया हो. उसकी ऐसी शकल देख कर अचानक से ही पूजा की हसी निकल गयी जिससे उसको हिचकियाँ लग गयी..

"इसे क्या हो गया" उसने वापस प्रतिक के कंधे पर सर रखते हुए कहा. प्रतिक पीछे मुड़ा और अली की शकल देख कर उसको भी हसी आ गयी

"अबे ऐसे क्या देख रहा है.. मेरी रूम मेट है.. यार थोड़ा पानी ले आ ना अंदर से.. "

"कौन है यह.." पूजा ने पूछा

"अली है" प्रतिक ने उत्तर दिया. तब तक पानी भी आ गया और पूजा को पानी पी कर थोड़ा होसला आया

"यार प्रतिक मैं चलता हूँ. मुझे लगता नही है कि अभी यहाँ रहना ठीक होगा... कल मिलते हैं"

"ओके अली.. गुड नाइट" प्रतिक ने उसको रोकने की कोशिश भी नही करी जिससे अली का दिल थोड़ा और टूट गया.

"कौन अली?" उसके जाने के बाद पूजा ने पूछा

"दोस्त है मेरा... मेरा एकलौता दोस्त" प्रतिक ने ये कहा तो पूजा को थोड़ा बुरा लगा जो उसके चेहरे से सॉफ झलक रहा था... "ऐसे मत देखो पूजा.. सच ही तो कह रहा हूँ मैं... हम दोनो में जो था, वो ख़तम हो चुका है.. तुम्हें याद भी है तुमने आखरी बार मुझसे कब बात

की थी? मैं ज़िंदा हूँ या नही .. तुम्हें इससे कोई फरक नही पड़ता. यह हमारी मजबूरी ही है जिसके कारण हम दोनो साथ रह रहे हैं.. नही तो मैं यहाँ एक पल भी ना रुकता. लेकिन जब ज़रूरी है ही कि हम दोनो साथ रहेंगे तो क्यूँ ना यह एक्सपीरियेन्स दोनो के लिए कम से कम पेनफुल बनाया जाए - सोचा है कभी तुमने ऐसा?? एक छत के नीचे रहते हुए भी तुम मुझे एक अजनबी की तरह ट्रीट करती हो. मैं यह नही कहता कि मुझसे प्यार करो या अपनी ज़िंदगी मेरे नाम लिख दो. लेकिन कभी कभार आते जाते अगर दिख जाउ तो हाल चाल ही पूछ लो.. किसी दूसरी दुनिया में रहती हो तुम ऐसा लगता है.. मेरी तरफ देख लोगि तो गंदी हो जाओगी. माना के हमारा रहने का तरीका अलग है, हमारी ज़िंदगी के बारे में राय अलग है, लेकिन इसका यह मतलब थोड़े है कि हम दोनो दोस्त नही हो सकते. अब चाहे मजबूरी हो या हमारी पसंद, दोस्ती तो बढ़ने से ही बढ़ेगी. यह एक ऐसा पौधा है जो कुछ ही देर में मुरझा जाता है अगर सही देखभाल ना करें तो. और हमारा पौधा तो शायद साल भर पहले ही मुरझा चुका है पूजा. बस बात इतनी सी है कि यह बात तुम्हें शायद रीयलाइज़ नही हुई.. या यह कहें कि इस बात से तुम्हें कुछ फरक नही पड़ा"

प्रतिक को इस तरह से बोलते देख पूजा सच मुच हक्की बक्की रह गयी. सच ही कह रहा था वो. उसको पता थोड़े था कि पूजा ने अपने स्वार्थ के कारण ही उससे दोस्ती करी थी और मतलब ना निकलने पर चाइ में से निकली मक्खी की तरह अपने जीवन से अलग कर दिया था. लेकिन आज पूजा को वापस रीयलाइज़ हुआ था कि वो अकेले शायद कुछ बड़ा नही कर सकती. कुछ करना तो दूर, अपनी जान के भी लाले पड़ सकते थे उसे. इसलिए आज उसने डिसाइड कर लिया कि जो भी हो, प्रतिक से दोस्ती वापस करनी ही पड़ेगी. लेकिन इस बार वो पिछली बार जैसी ग़लती नहीं करेगी. इस बार वो सब बात धीरे धीरे आगे बढ़ाएगी, ऐसा उसने मन ही मन सोचा और वो अपनी आखें नम कर के प्रतिक से लिपट गयी.

"आइ आम वेरी सॉरी प्रतिक. लालच ने मुझे अँधा कर दिया था. आइ प्रॉमिस यू कि अब तुम्हें शिकायत का मौका नही मिलेगा. मुझे अपनी ज़िंदगी में हमेशा से एक कमी महसूस हुई है. शायद बचपन में ही माँ बाप का प्यार छिन जाने से. और आज मुझे रीयलाइज़ हुआ है कि वो कमी तुम जैसा दोस्त ही पूरा कर सकता है प्रतिक. मैं सच में अपने किए पर बहुत शर्मिंदा हूँ"

"अच्छा पूजा, अब रात बहुत हो गयी है और मुझे लगता है कि तुमने आज पी भी बहुत ली है. अब तुम सो जाओ. कल बात करेंगे. मुझे भी अपने कॉलेज के थोड़े असाइनमेंट्स पूरे

करने हैं. गुड नाइट"

"गुड नाइट" पूजा बोली और अपने कमरे में सोने चले गयी. प्रतिक भी कुछ देर अपना काम करता रहा और उसके बाद सोने चला गया

अगले दिन सुबह जब प्रतिक का अलार्म बजा तो उसकी नींद खुली. वो जल्दी से बाथरूम गया और अपना सभी काम निपटा कर किचन में पहुँचा ताकि कॉलेज जाने से पहले थोड़ा नाश्ता कर ले. उसने देखा के पूजा पहले ही उठ चुकी है और नाश्ता बना रही है

"प्रतिक तुम बैठो. मैं अभी नाश्ता ले कर आती हूँ" वो बोली और अपनी स्पीड थोड़ी बढ़ा दी. प्रतिक को हैरानी तो बहुत हुई लेकिन वो थोड़ा खुश भी हुआ पूजा में आए इस बदलाव को देख कर. वो जा कर लिविंग रूम में बैठ गया और कॉफी टेबल खाली कर दी नाश्ते के लिए

"पूजा एक बात पूछूँ" जब पूजा ने नाश्ता लगा दिया तो प्रतिक ने उससे सवाल किया

"हां बोलो.."

"मुझे कल के बारे में कुछ पूछना है..."

"ज़रूर पूछो..."

"कल ऐसा क्या हो गया था जो तुम इतना अपसेट हो गयी थी..."

"प्रतिक मुझे समझ नही आ रहा कि कैसे बताऊ यह.. पर जब उस आदमी का एक्सीडेंट हुआ तो मुझे लगा कि यह नज़ारा मैने पहले भी कहीं देखा है...."

"ऐसा होता है.. डेजा-वू की फीलिंग हम सब को कभी ना कभी होती है"

"नहीं प्रतिक.. अगर ऐसा होता तो मुझपे इतना असर ना पड़ता... लेकिन पिछली २ रातों से मेरे सपनों में लगातार वो आदमी आ रहा था और मैं यह घटनाक्रम को देख रही थी..."

"सपने याद नही रहते पूजा.. तुम्हें पक्का कोई वहाँ हुआ होगा..."

"नहीं प्रतिक.. तुम इस बात को मानो या ना मानो... लेकिन मैं अपने सपनों में रोज़ उस हादसे को देख रही थी.. यहाँ तक कि वो ट्रक और उसका नंबर भी मुझे याद है... फिर भी मैं कल उस आदमी को नही बचा पाई... पता नहीं क्यूँ मुझे लगता है कि इस सपने का ज़रूर कोई मतलब है..."

"अर्रे बहकी बहकी बातें मत करो.. खाली पड़े रहने से तुम्हें वहाँ होने लगा है... मैं कॉलेज जाता हूँ, आ कर बातें करेंगे... मेरी मानो तो तुम भी कोई जॉब ढूँढ लो.. नहीं तो उल्टे सीधे ख़याल ही आते रहेंगे पूरा वक़्त" प्रतिक ने कहा और अपना बॅग ले कर निकल गया. पूजा उसको देख रही थी और बस यह ही सोच रही थी कि जिसको उसने इतनी आसानी से भ्रम का नाम दे दिया, सच्चाई तो सिर्फ़ पूजा ही जानती है.. वो ही जानती है कि उसने पता नही कितनी बार अपने ख्वाबों में उस आदमी को मरते देखा है...

# २३

सुबह जब विवेक की आँख खुली तो उसको जन्नत सा महसूस हो रहा था. पिछली रात उनकी मॅरीड लाइफ की पहली रात थी और उसके हिसाब से उसका पर्फोर्मेन्स अच्छा रहा था. जब उसने करवट बदल कर दिया की तरफ मूह किया तो पाया कि दिया है नही बिस्तर पर. एक पल के लिए वो घबरा गया फिर सोचा के शायद नहा रही होगी या नाश्ता बना रही होगी. वो उठा और बाथरूम में गया तो उसको खाली पाया. उसने अपनी मॉर्निंग रुटीन ख़तम की और नाश्ते के लिए डाइनिंग रूम पहुँच गया. लेकिन दिया ना तो वहाँ थी और ना ही किचन में. विवेक का दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा किसी अनहोनी की आशंका में. वो फटाफट घर से बाहर भागा और वहाँ भी दिया को ना पा कर बहुत चिंतित हो गया. उनका रेस्टोरेंट घर के साथ ही लगा हुआ था. कुछ सोच कर विवेक वहाँ की ओर चल पड़ा.

रेस्टोरेंट में बाहर से ताला लगा हुआ था. विवेक ने खिड़की से अंदर झाँकने की कोशिश करी और अंदर एक साया इधर उधर होता हुआ पाया. धड़कते दिल के साथ विवेक तेज़ी से घर के अंदर घुसा और घर और रेस्टोरेंट को जो डोर कनेक्ट करती थी उसके पास पहुँच गया. उसको लगा कि शायद कोई चोर अंदर घुस आया है. किचन से चाकू उठा कर उसने एक झटके में रेस्टोरेंट का दरवाज़ा खोला और अंदर हो गया. अंदर दिया को सफाई करते देख उसकी जान में जान आई.

"अर्रे दिया तुम सुबह सुबह यहाँ क्यूँ घुस आई.."

"विवेक इतनी भी सुबह नही है.. १० बज चुके हैं... १२ बजे रेस्टोरेंट खोलना है.. और तुम शायद भूल रहे हो कि आज फुड इंस्पेक्शन वाले भी आ रहे हैं. मैं कोई रिस्क नही लेना चाहती. अगर हमारा लाइसेन्स रद्द हो गया तो लेने के देने पड़ जाएँगे"

"कैसे होगा लाइसेन्स रद्द... पूरा वॉट तो यह जगह बिल्कुल रूल्स के हिसाब से ही रखते हैं.. आज तक किसी ने कोई कंप्लेन भी नही करी..."

"अर्रे पर थोड़ा एक्सट्रा केयरफुल रहने में कोई बुराई तो नहीं है..."

"चलो ठीक है फिर तुम सफाई करो और मैं अंदर जा कर नाश्ता बना लेता हूँ. फिर साथ साथ नाश्ता कर लेंगे"

"ठीक है..." दिया ने कहा और वापस सफाई में लग गयी.

विवेक वापस घर के अंदर आया और पहले थोड़ा सुसताने का प्रोग्राम बनाया. उसने अख़बार हाथ में लिया, टीवी ऑन किया और अख़बार पढ़ने लगा. सुबह रेस्टोरेंट में रश पड़ने से पहले का यह समय उसका दिन का सबसे एंजायबल टाइम होता था. एक बार रेस्टोरेंट खुल जाता था तो रात तक साँस लेने की भी फ़ुर्सत नही मिलती थी. अख़बार पढ़ने के बाद वो उठा और किचन में नाश्ता बनाने को घुस गया. उसने गॅस ऑन करी पर रेंज जली नही.. दो तीन बार उसने ट्राइ किया और फिर भी जब वो रेंज नही जली तो वो लाइटर ढूँढने लग गया. कई बार ऐसा होता था के इनबिल्ट प्लग काम नही करता था. उसने लाइटर उठाया और फिर से रेंज जलाने की कोशिश करने लगा लेकिन फिर भी नाकामी हाथ लगी. शायद लाइटर का सेल ख़तम हो गया था. वो लाइटर को वहीं रख कर सेल ढूँढने चला गया. वो भूल गया कि रेंज ऑन पे है और गॅस धीरे धीरे किचन में भर रही थी.

नये सेल लेकर जब वो वापस आया, तो उसने वो सेल लाइटर में डाल दिए. जैसे ही उसने रेंज ऑन करी, एक ज़ोर से धमाका हुआ और उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया. अगली चीज़ जो उसे याद आई वो यह थी कि दिया उसके उपर झुकी थी और उसका नाम ले लेकर रो रही थी.

"कुछ नही हुआ.. दिया मैं ठीक हूँ... वैसे भी मुझे कुछ नही होता रिमेंबर" उसने उठने की कोशिश करते हुए कहा. आसपास की दीवारें जल गयी थी लेकिन आग का कहीं नामोनिशान नही था

"विवेक यह क्या करते रहते हो तुम... मैं कितना डर गयी थी" दिया ने आँखों से आँसू पोछते हुए कहा.."वैसे यहाँ हुआ क्या था"

"हुआ क्या था मतलब.. आग लग गयी थी.. तुम्हें नही दिखा था क्या"

"नहीं... मुझे बस तुम्हारे चीखने की आवाज़ आई और मैं भागी हुई यहाँ आई.. आकर देखा तो सारा किचन काला पड़ा था"

"ह्म्म.. मुझे लगता है के गॅस खुली छूट गयी थी और लाइटर जलाने से धमाका हुआ और आग लग गयी..."

"ऐसा नही हो सकता विवेक. ऐसा हुआ होता तो मुझे भी आग की लपटें दिखती या जब मैं यहाँ आती तो कहीं तो आग का नामोनिशान होता"

"पता नही फिर क्या हुआ होगा.. मेरा सर भन्ना रहा है... मैं ज़रा नहा के आता हूँ. तुम रेस्टोरेंट वाला किचन यूज़ कर लो... इस की बाद में सफाई कर देंगे हम" कुछ सोचता हुआ विवेक बाथरूम में घुस गया.

अगर आग लगी थी, तो गयी कहाँ.. और अगर लगी नही थी तो मेरे कपड़े और दीवार कैसे जले... आईने में अपने आप को देखते हुए वो सोचने लगा... उसका शरीर तो बिल्कुल ठीक हो गया था लेकिन कपड़े बुरी तरह से जले हुए थे. उसने वो कपड़े उतार के दूर फेंके और शवर के नीचे खड़ा हो गया. शवर से निकला पानी उसको बहुत ठंडा लग रहा था. उसने टेंपरेचर बढ़ाया लेकिन कोई असर नही हुआ. उससे लगा कि शायद बोलिएर खराब हो गया है. तभी उसने अपने चारों तरफ नज़र दौड़ाई तो पाया के बाथरूम में बहुत ज़्यादा स्टीम भर गयी थी. मतलब पानी गरम तो था, लेकिन उसको गरम नही लग रहा था. इतने ठंडे पानी से वो नहा नही सकता तो शवर से बाहर आया और अपना बदन पोछने लगा. पोछते पोछते उसकी नज़र तोलिये पर पड़ी तो उसने पाया के वो तोलिया काला हो रहा था. उसने गौर से तोलिये की तरफ देखा तो वो भक्क से आग में घिर गया और कुछ ही क्षण में जल के राख हो गया.

विवेक को कुछ समझ नही आ रहा था कि यह हो क्या रहा है. शायद उसकी बॉडी के अंदर आग लगी हुई थी

"दिया दिया..." वो ज़ोर से चिल्लाया "जल्दी से यहाँ आओ"

"क्या हुआ.. क्यूँ चिल्ला रहे हो" दिया दौड़ी दौड़ी आई और पूछने लगी

"दिया मेरे शरीएर को हाथ लगा कर देखो तो.. क्या यह बहुत तप रहा है?"

"नहीं, नॉर्मल है" दिया ने उसके शरीर पर हाथ रखते हुए कहा "क्यूँ क्या हुआ"

"मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरे अंदर आग लगी हुई है.. बहुत गरम लग रहा है.. पानी भी बहुत ठंडा लग रहा है"

"लगता है तुम्हें कोल्ड हो रहा है.. मैं तुम्हारे लिए गोली लाती हूँ"

"दिया मुझे पक्कड़ लो. मेरा सर बहुत दुख रहा है.. फट रहा है मेरा सर..." विवेक बोला और धम्म से नीचे गिर गया

"विवेक क्या हुआ.. उठो... मैं डॉक्टर को बुलाती हूँ" दिया ने विवेक को उठाने की कोशिश करी.. लेकिन विवेक दर्द से चीखे जा रहा था. उसको ऐसा लग रहा था जैसे कोई उसके अंदर की अंतडियों को जला रहा है. तभी एकाएक जैसे दर्द आया था, वैसे ही गायब हो गया और विवेक बिल्कुल चुप हो गया.. "क्या हुआ विवेक.. बोलो.. क्या हुआ.. तुम ठीक तो हो" चिंता भरे स्वर में दिया ने पूछा

"हां.. अब ठीक हो गया..बिल्कुल ठीक लग रहा है अब" अभी तक दर्द में उसकी आँखें बंद थी. जैसे ही उसने आँखें खोली, नज़ारा देख कर वो हैरानी में पड़ गया. जहाँ उसे दिया दिखनी चाहिए थी, वहाँ उसे दिया नही, एक खाई दिख रही थी. अपने आस पास उसने देखा तो पाया कि वो किसी पहाड़ के कोने पे खड़ा है और नीचे एक गहरी खाई है... "दिया.." वो ज़ोर से चिल्लाया

"हां विवेक.. क्या हुआ.. यहीं हूँ मैं.. चिल्ला क्यूँ रहे हो" दिया की आवाज़ तो उसे सुन रही थी लेकिन वो उससे दिख नही रही थी. बस उस पहाड़ की छोटी पे वो अकेला ही खड़ा था

"दिया कहाँ हो तुम.. मुझे तुम दिख नही रही" विवेक घबरा के बोला और तभी उसका पैर फिसल गया. वो तेज़ी से पहाड़ से नीचे गिरने लगा. गिरते हुए उसने एक पेड़ का सहारा लिया और अपनी गति को रोका. तभी उसे ऐसा लगा जैसे उस पर बहुत पानी गिर गया हो.. हड़बड़ा कर उसकी आँख खुली तो उसने अपने आप को वापस अपने घर में ही पाया और सामने दिया दिखी...

"लगता है तुम कोई सपना देख रहे थे विवेक... आखें बंद कर के बोल रहे थे कि मैं तुम्हें दिख नही रही..." दिया ने उसका सर अपनी गोद में रखकर बोला

विवेक का ध्यान अपने हाथों पर गया. खाई से गिरने के ज़ख़्म अभी भी वहाँ पे थे और धीरे धीरे भर रहे थे. उसे कुछ समझ नही आ रहा था के क्या हो रहा है यह.

"तो दिया.. यह है मेरा शहर. तुम्हारे शहर के सामने बहुत ही छोटा है... पर यहाँ पे लोगों के दिल बहुत बड़े हैं... सभी देखना कैसे तुम्हें अपना बना के रखेंगे." ट्रेन से समान प्लॅटफॉर्म पर रख कर विवेक ने दिया से कहा.

"वो तो ठीक है पर एक कूली कर लें... इतना सामान उठा कर बाहर जाना है क्या"

"हां कर लेते हैं" विवेक का इतना बोलना ही था कि उसकी कनपटी पर एक थप्पड़ पड़ा. वो भोचक्का हो कर पीछे घूमा तो किसी ने उसको ज़ोर से अपने गले से लगा लिया

"साले इतने टाइम बाद आया है और बताया भी नहीं. आदमी है कि कुत्ता. ना कोई खबर, ना कुछ.. आंटी से पता चला कि तू आज आ रहा है तो मैने कहा तुझे स्टेशन से ही उड़ा ले चलूं.. साले सच बता.. एक भी बार याद नही आई मेरी"

"कैसी बात करता है दिलजीत.. ऐसा हो सकता है कि तेरी याद ना आए. लेकिन कमिटमेंट भी तो कोई चीज़ होती हा ना. अभी पढ़ाई करने गया था तो पूरी तरह से पढ़ाई ही करी"

"हां हां मेरे दबंग के सलमान.. तू और तेरी कमिटमेंट.. यहाँ तो कोई पढ़ाई करी नही.. वहाँ जा कर बड़ा गोबर में तीर मारा होगा...चल जीप ले कर आया हूँ. मस्त बियर पीएँगे... यारों से मिलेंगे.. फिर घर ले चलता हूँ"

"यार पहले घर चलते हैं..." झिझकते हुए विवेक ने कहा और फिर बोला "अभी मेरे साथ कोई और भी है" उसने दिया कि तरफ इशारा करते हुए कहा..

"कौन है... तेरी गर्ल फ्रेंड?" दिलजीत ने दिया की ओर देखते हुए पूछा

"नहीं..."

"तो फिर तो तुझे ऐतराज़ नहीं होना चाहिए आजा मैं थोड़ी लाइन मार लूँ इस पर तो" दिलजीत विवेक को एक तरफ धकेल के दिया की ओर बढ़ गया. "हेलो. माइसेल्फ दिलजीत सिंग. फ्रेंडशिप वित विवेक आंड यू ऑल्सो सो थॉट आइ वित यू हाउ आर"

"क्या मतलब..." दिया ने हैरानी से पूछा

"अर्रे पहले बताना था ना कि अँग्रेज़ी नही आती. मैने तो सोचा कि विदेश से हो तो अँग्रेज़ी आती होगी.. वैसे मेरा नाम दिलजीत सिंग है. विवेक का बहुत अच्छा दोस्त हूँ. आपका नाम क्या है और आप कैसी है ?"

"हेलो दिलजीत.. तुम्हारे किस्से सुन सुन कर ऐसा लगता है जैसे तुम्हें बहुत अच्छी तरह से जानती हूँ.. बहुत बताता है विवेक तुम्हारे बारे में.."

"वाह.. इसे कहते हैं दोस्त.. पहले से ही मेरी सेट्टिंग करवा के रखी है.." दिलजीत बोला तो दिया के चेहरे पर फिर से कंफ्यूजन आ गयी.."वैसे आपका नाम क्या है.."

"दिया इनसे मिलो.. मेरे बचपन का दोस्त दिलजीत. और दिलजीत इनसे मिलो.. दिया.. मेरी बीवी"

"ओ तेरी.. तूने शादी कर ली... साले अभी कह रहा था कि पढ़ाई की तरफ कमिटेड था.. अभी यह नज़ारा दिखा रहा है.. तेरे को तो चप्पलो से मार मार कर साले ज़मीन में गाढ देना चाहिए" गुस्से में दिलजीत बोला

"अर्रे नहीं यार.. तू नहीं समझेगा.. थोड़ा बड़ा किस्सा है... आराम से समझाऊंगा"

"क्या प्रेग्नेंट तो नही कर दिया था"

"अबे चुप कर यार... चल समान उठवा और गाड़ी तक ले कर चल... आते ही बक बक शुरू हो गयी तेरी..."

"वाह.. जाने से पहले जो शब्द तुझे हीरे से तराशे हुए लगते थे वो अब बक बक हो गयी... देख लो भाभी जी.. कितना बदल दिया है आपने विवेक को..."

"अर्रे डोंट कॉल मी भाभी... दिया ही बुलाओ.. और कुछ नहीं बदला है विवेक.. पूरे एक साल से लोगों का दिमाग़ खा रहा है तो अब इसको अजीब लग रहा है.."

"चलो जी बातें तो होती रहेंगी.. आओ आपको घर तक पहुँचा दे पहले" कहता हुआ दिलजीत पीछे मुड़ा.. "ओ कुली.. हां यह समान है.. पार्किंग में जीप खड़ी है उसमें डालना है..."

"५० रुपये होगा साहब"

"अबे ५० रुपये किस बात के? तेरी फूफी की शादी का शगुन माँग रहा है क्या... २० रुपये दूँगा..."

"नहीं साहब २० रुपये में कैसे होगा.. पुल के उपर से जाना पड़ेगा"

"अर्रे पता हैं पुल के उपर से जाना पड़ेगा.. यहीं के हैं हम... हमारे से ही सारी कमाई करेगा क्या.. चल उठा इसको.. २० रुपये मिलेंगे"

"नहीं साहब २० रुपये में तो नही होगा..."

"चल फिर तू निकल.. मैं ही उठा लूँगा" दिलजीत ने कहा

थोड़ा समान दिलजीत ने उठाया और थोड़ा विवेक ने उठा लिया.. दिया के लाख कहने पर भी दिलजीत ने उसको किसी समान को हाथ नही लगाने दिया. किसी तरह से खिचते पीट-ते वो लोग जीप तक पहुँचे और सामान उसमें रखा

"अबे इतनी मेहनत करने से तो अच्छा उसको ५० रुपये दे ही देते.."

"अबे बेईमानी की कमाई माँग रहा है वो... २० रुपये भी ज़्यादा थे.. ." फिर दिया की तरफ मूड कर बोला.. "भाभी जी.. आइ मीन दिया जी आप आगे बैठेंगी मेरे साथ, यहाँ पीछे बैठेंगी विवेक के साथ या अकेले पीछे बैठना पसंद करेंगी?"

"कुछ भी चलेगा दिलजीत जी..."

"ऐसा तो कोई ऑप्शन नही है... ऐसा कर विवेक तुम दोनो पीछे बैठ जाओ.. मैं एक साल अकेला रह लिया हूँ.. अब १५ किमी और सही..."

"अर्रे नही नही.. आप दोनो आगे बैठ जाओ.. मुझे कोई परेशानी नही है पीछे बैठने में.." दिलजीत के मन की बात समझते हुए दिया ने बोल दिया

"अच्छा अगर आप ज़ोर दे रहीं है तो ठीक है वरना मैं तो अकेला भी ठीक ही हूँ" मन ही मन खुश होते हुए दिलजीत बोला. वो तीनो जीप में बैठे और विवेक के घर की तरफ निकल पड़े.

पूरे रास्ते विवेक से बात करने की बजाय दिलजीत दिया को सारी जगहों के बारे में बताता रहा.. घर जाने की बजाए वो कभी गन्ने का जूस पीने जाते तो कभी खेतों में जा कर मूलियाँ निकाल के खाने लगते. कभी नहर पे जाते तो कभी किसी ढाबे पे जाते. फिर दिलजीत ने गाड़ी कॉलेज की तरफ मोड़ ली. "दिया जी अब आपको दिखाता हूँ यहाँ का सबसे बढ़िया कॉलेज... यहाँ के टीचर अभी भी विवेक के नाम से काँपते हैं.."

"यार दिलजीत बस कर.. कल देख लेंगे.. घर ले जा अभी.. बहुत टाइम हो गया.. मम्मी पापा परेशान हो रहे होंगे.."

"अबे घंटा परेशान हो रहे होंगे.. अजीब बातें मत कर... अभी फोन कर देते हैं और बोल देते हैं कि थोड़ा लेट हो जाएँगे" कहते हुए उसने अपना फोन उठाया और विवेक के घर का नंबर मिला दिया. काफ़ी रिंग्स जाने पर भी जब किसी ने फोन नही उठाया, तो उसने विवेक के पापा के मोबाइल पे लगाया लेकिन वहाँ भी किसी ने नही उठाया. "चल घर ही चलते हैं पहले" कहते हुए उसने जीप मोड़ ली.

"क्या हुआ कोई फोन नही उठाया क्या..." विवेक ने पूछा

"हां.. रिंग बजती रही.. शायद बिज़ी है किसी काम में"

"थोड़ा जल्दी कर यार..." विवेक को किसी अनहोनी की आशंका होने लगी थी.

"अबे ८० से तेज़ क्या चलाऊ... हवाई जहाज़ में नही बैठा.. पहुँच जाएँगे १० मिनट में" दिलजीत ने इरिटेट हो कर कहा. थोड़ी दूर चलते ही उन्हे आसमान में धुए के बादल बनते हुए दिखे. यह देख दिलजीत ने गाड़ी और तेज़ भगाने की कोशिश करी. आखरी मोड़ जब

लिया तो सामने का नज़ारे देख कर वो लोग दंग रह गये. घर आग की लपटों से घिरा हुआ था. और जल रहा था. विवेक जल्दी से जीप से बाहर निकला और जलते हुए घर में घुस गया. अंदर केवल आग ही आग थी. विवेक को कुछ ढंग से दिखाई नही दे रहा था लेकिन वो फिर भी अंदर घुसे चला जा रहा था अपने माँ बाप को बचाने के लिए. तभी आग किसी तरह से गॅस के सिलिंडर तक पहुँच गयी और एक ज़ोरदार धमाका हुआ. विवेक उड़ता हुआ खिड़की से बाहर आ गिरा. उसका सारा शरीर जल रहा था और वो दर्द में चीखे मार रहा था.

# २४

"पूजा.. पूजा क्या हुआ...इतना चीख क्यूँ रही हो..." प्रतिक पूजा के चीखने की आवाज़ सुनकर उसके रूम में गया और उसको जगाने की कोशिश करने लगा... पूजा की नींद खुली. उसकी आँखें बिल्कुल नम थी

"फिर वोही सपना प्रतिक... हो ना हो विवेक के साथ कोई अनहोनी होने वाली है... हमे कुछ करना पड़ेगा"

"पूजा कम ऑन.. वो सपना था.. सिर्फ़ एक सपना... कुछ नही हुआ है किसी को..."

"प्रतिक आज फिर मुझे वही सपना आया है... ज़रूर इसका कोई ना कोई मतलब है..."

"सपनो के मतलब नही होते पूजा... क्यूँ अपना दिमाग़ खराब कर रही हो..."

"प्रतिक तुम मानो या ना मानो... पिछला एक्सीडेंट भी मैने सपनों में देखा था लेकिन उसको रोक नही पाई.. इस बार में यह हादसा होने से पक्का रोकूंगी... हमे किसी भी तरह से विवेक को काँटॅक्ट करना पड़ेगा"

"नहीं कर सकते पूजा... इतनी आबादी वाली दुनिया में विवेक का काँटॅक्ट नंबर कैसे पूछेंगे..."

"चंद्रशेखर को मैल करो... प्रतिक प्लीज़ चंद्रशेखर को मैल करो... यह हादसा विवेक के घर में होने वाला है... हमे जल्द से जल्द वहाँ पहुँचना होगा... उससे विवेक का अड्रेस माँगो प्रतिक..."

"पूजा अभी सो जाओ.. रात बहुत हो गयी है.. सुबह उठ कर देखेंगे.." प्रतिक ने सोचा कि बुरा सपना है.. सुबह तक पूजा शांत हो जाएगी.. इसलिए ऐसा कह दिया

"मुझे पता है तुम क्या सोच रहे हो प्रतिक.. ठीक है तुम जा कर सो जाओ.. मैं खुद ही ईमेल करती हूँ चंद्रशेखर को"

"जो करना है करो.. तुम्हें तो कुछ समझाना ही बेकार है.." प्रतिक ने कहा और अपने रूम में चला गया सोने को.. यहाँ पूजा ने अपना लॅपटॉप निकाला और चंद्रशेखर को मैल लिखने लगी

# २५

विवेक रात में हड़बड़ा के उठा. उसने देखा तो उसका हाथ जला हुआ था जो देखते ही देखते ठीक हो गया. पसीने से उसका बुरा हाल था और वो हाँफ रहा था. दिया भी उसके इस अचानक हड़बड़ा के उठने के कारण उठ गयी.

"क्या हुआ विवेक"

"कुछ नही दिया.. तुम सो जाओ.. बुरा सपना था. मैं पानी पी कर आया" विवेक ने उससे दिलासा दिया. विवेक ने अभी तक उसको यह बताया नही था कि वो ख्वाबों में दूसरी जगहों पे जाता है. उसने सोचा कि ऐसे ही वो परेशान होगी. लेकिन सच तो यह था कि विवेक अब परेशान रहने लगा था. हालाँकि उससे पता था कि यह सब सपने हैं, फिर भी जागने के बाद उन सपनों के निशान अपने उपर पा कर वो बहुत ही विचलित होता था. पिछले २-३ दिनों से वो इसी कारण से थोड़ा गुमसुम रहने लगा था और दिया सोच रही थी कि वो शादी को ले कर चिंतित है. लेकिन विवेक के आश्वासन दिलाने पर कि यह शादी के कारण नही, ऐसे ही मूड स्विंग है, उसने कुछ नही कहा. लेकिन उससे पता था कि कोई चीज़ तो है जो विवेक को अंदर ही अंदर खाए जा रही है.

उधर विवेक पानी पीने गया और गहरी सोच में डूब गया. था तो यह एक सपना ही, पर उससे अपने घर वालों की चिंता होने लगी थी. पिछले एक साल से उसने उनकी कोई खबर नही ली थी. क्या पता उस जीव ने विवेक के घर पर भी धावा बोल दिया हो?? बिस्तर पर वापस आकर वो यह ही सोचने लगा कि उसको एक बार अपने घरवालों से मिलने ज़रूर जाना चाहिए. इस में रिस्क तो बड़ा था लेकिन अपने पेरेंट्स से मिलने की आग अब उसके अंदर लग गयी थी. सारी रात वो करवटें ही बदलता रहा कि कैसे दिया से यह बात चलाए... सच तो यह था कि दिया भी अपने पेरेंट्स से इतने टाइम से दूर रही है.. उसको अजीब तो नही लगेगा कि इसको मेरी फॅमिली की चिंता नही है... ऐसे कई सवाल विवेक के दिल में खलबली मचाते रहे. पूरी रात वो एक सेकेंड भी सो नही सका. बस छत को घूरता रहा और सोचता रहा कि दिया से यह बात कैसे चलाई जाए.

अगली सुबह फिर विवेक को विचलित देख कर दिया का मन डूब गया. आज उसने ठान ही ली कि जो बात है वो पता कर के ही रहेगी. वो नाश्ता बनाते ही विवेक के पास पहुँच गयी और नाश्ते की प्लेट को टेबल पर धम्म से मारा. विवेक सोच में डूबा हुआ था और आवाज़

से अचानक चौक गया. दिया का बिगड़ा मूड होने के कारण उसने अपनी बात टालने की सोची.

"विवेक क्या तुम्हें लगता है कि हम ने शादी कर के कोई भूल करी?"

"अर्रे दिया तुम क्या वोही बात ले कर बैठ गयी.."

"सच सच बताओ विवेक.. अगर कोई और है तुम्हारी ज़िंदगी में तो बोल दो... मुझे अच्छा नही लगता जब तुम ऐसे चुप चाप बैठे रहते हो और सोचते रहते हो किसी और के बारे में"

"अर्रे मैं किसी और के बारे में क्यूँ सोचने लगा दिया... कितने लोगों से मिलता हूँ मैं यहाँ... कितनी लड़कियों से बात करते हुए देखा है तुमने मुझे?"

"हर किसी कस्टमर के साथ तो फ्लर्ट करते हो... क्या पता किसी ने कोई सिग्नल दे दिया हो"

"दिया... दिया.... कैसी बातें सोच रही हो सुबह सुबह... अर्रे मैने जिससे प्यार किया, उसके साथ हूँ.. यह तुम भी जानती हो और मैं भी... अब मुझे क्या किसी पागल कुत्ते ने काटा है जो फिर किसी और मुसीबत को गले लगा लूँ" हँसते हुए विवेक ने कहा

"मज़ाक मत करो विवेक और सच सच बताओ कि तुम्हें क्या चीज़ अंदर ही अंदर खाए जा रही है"

"यह अच्छा मौका है विवेक, लगा दे चौका" विवेक ने सोचा और कहा "यार तुमसे कोई चीज़ छुपाना मुझे बिल्कुल भी गवारा नहीं है... आज तक ऐसा कुछ हुआ है के मैने तुमसे छुपाया हो... यहाँ तक कि जब कॉन्स्टिपेशन हुई थी तब भी तुम्हें बता दिया था.."

"विवेक फालतू की बात मत कर और बता जो मैने पूछा है" गुस्से में दिया ने फोर्क उसके उपर तानते हुए बोला

"अर्रे रुक जा मेरी बॅनडिट क्वीन. बताता हूँ बताता हूँ.. गुस्से में तुम बहुत क्यूट लगती हो" उसका इतना कहना ही था कि दिया ने वो फोर्क उठा कर उसकी हथेली में घुसा दिया.." आआहह.. अबे ठीक हो जाता है लेकिन दर्द होता है" उसने दर्द से चीखते हुए कहा

"इससे पहले में यह दूसरा फोर्क तुम्हारी आँख में घुसा दूं, बता दो मुझे" दिया ने दूसरा फोर्क उठाते हुए कहा

"मुझे मम्मी दादी से मिलने का दिल कर रहा था बहुत दिनों से... उनकी कोई खबर नही है ... तुम्हें ठीक लगता है तो उनसे मिलने चल सकते हैं, नहीं तो कोई प्राब्लम नही है.. मैं यहीं पड़ा रहूँगा.. चल पड़ते एक बार तो ठीक था लेकिन मुझे पता है कि इसमें सिर्फ़ हमारी जान को ही नहीं, दुनिया को भी ख़तरा है.. इसलिए अगर तुम ना कह दो तो भी कोई प्राब्लम नही है" किसी तरह से विवेक ने एक ही साँस में सब कुछ बोल दिया.

उसकी शकल देख कर दिया की हसी नही रुकी और वो खिलखिला कर हँसने लगी. "बस इतनी सी बात थी विवेक.. तुमने पहले क्यूँ नही बताया..."

"तो हम जा सकते हैं मतलब.. मैं टिकेट्स करता हूँ" वो खुशी में उठने को हुआ

"ऐसा तो नहीं कहा मैने विवेक" हताश हो कर वो वापस चेयर में धँस गया. "लेकिन प्लान बुरा नही है. इसी बहाने मैं भी उन से मिल लूँगी. हो सके तो मेरे घरवालों से मिलने का भी प्लान बनाते हैं" थोड़ी एक्साइट्मेंट में दिया ने बोला

"हां हां ज़रूर.. मुझे नही लगता कि अब कोई जीव-वीव आने वाला है.. शायद वो डर के भाग गया पहली मुलाक़ात से ही."

"चलो मैं चंद्रशेखर को मैल भेजती हूँ अपने प्लॅन्स के बारे में.. शायद वो मेरे पेरेंट्स का अड्रेस भी बता दे..."

"रूको..." विवेक ने तेज़ी से कंप्यूटर की तरफ जाती हुई दिया को टोकते हुए कहा "चंद्रशेखर को क्यूँ बताना है? वो बुड्ढा हमे इंडिया भी नही जाने देगा..."

"विवेक लेकिन वो ही तो है जो मुझे मम्मी पापा का पता बता सकते हैं."

"प्लीज दिया प्लीज.. वैसे भी जहाँ हम जा रहे हैं, वहाँ पे इंटरनेट होगा. वहाँ से कर लेंगे चंद्रशेखर को ईमेल"

"ठीक है विवेक जैसा तुम समझो. लेकिन मुझे लगता है कि हमे यह बात चंद्रशेखर को बता देनी चाहिए.. कुछ प्राब्लम हो गयी तो..."

"अर्रे कोई प्रॉब्लम हो गयी तो देख लेंगे.. वो घंटा कुछ कर सकता है"

"अच्छा अच्छा ठीक है.. नही बता रही" विवेक को गुस्से में आते देख दिया ने फटाफट बोल दिया. पर उसने मन ही मन यह प्लान कर लिया था कि घर से निकलने से पहले वो चंद्रशेखर को मैल ज़रूर डाल देगी.

# २६

उसी समय पूजा के गुस्से की कोई सीमा नही थी. चंद्रशेखर ने उससे विवेक के घर का अड्रेस नही भेजा था. अड्रेस भेजना तो दूर, उसने उनकी एक भी मैल का रिप्लाइ भी नही किया था. पूजा के २-३ मैल में समझाने के बावजूद के उसके सपने सच हो रहे हैं, चंद्रशेखर ने कोई रिप्लाइ नही दिया. उनके प्रति उसका ऐसा व्यवहार पूजा को अच्छा नही लग रहा था.

"क्या हुआ पूजा.. छोड़ो ना अब इस बात को.. नही तो नही.. शायद किस्मत में यही लिखा है"

"किस्मत में कुछ नही होता प्रतिक. मैं अपनी किस्मत खुद लिखने में विश्वास करती हूँ. और मैं इस बात की जड़ तक पहुँच के रहूंगी.. कोई ना कोई कारण तो है ना कि मुझे यह ही सपना आता है.. और भी तो दुनिया में लाखों लोग मरते हैं, उनका तो सपना नही आता... इसका ही क्यूँ.. क्यूंकी मैं इसको चेंज कर सकती हूँ.. और मैं चेंज कर के रहूंगी"

"जो करना है तुमने करो.. चंद्रशेखर ने मदद करी नही है.. कहाँ से लाओगी अब अड्रेस... सपने में ही आएगा क्या वो भी..."

"अर्रे सही आइडिया दिया... आज रात को मुझे वो स्टेशन और विवेक के कॉलेज के नाम की तरफ अच्छी तरह से ध्यान देना होगा... शायद कुछ बात बन जाए"

"पूजा तुम सच में थोड़ा सनकी जैसे बात कर रही हो..."

"कोई और यह कहे तो फिर भी ठीक लगता है प्रतिक.. लेकिन जब एक उड़ने वाला इंसान ऐसी बात कहे, तो हँसने का दिल करता है... अच्छा गुड नाइट.. कल सुबह मिलते हैं" कहते हुए पूजा अपने कमरे में चली गयी

"पूजा तुम्हें ऐसा क्यूँ लगता है कि दुनिया को बचाने का ठेका सिर्फ़ तुमने ही लिया हुआ है. क्यूँ हर किसी के काम में अपनी टाँग अड़ाती हो"

"प्रतिक तुम बात को समझते क्यूँ नही"

"क्या है समझने लायक इस बात में.. बस एक ख्वाब के ज़रिए तुम किसी के घर पहुँच के क्या बोलोगि उनको?? तुम समझने की कोशिश करो. वो सिर्फ़ एक सपना था. सिर्फ़ एक सपना"

"प्रतिक अगर वो सिर्फ़ सपना होता तो मुझे कैसे पता चलता कि उस नाम का कॉलेज उस शहर में है ..."

"पूजा हो सकता है तुमने वो कॉलेज का नाम कहीं पे पढ़ा हो. इसलिए वो तुम्हारे सपने में आया" प्रतिक ने सपने शब्द पर ज़्यादा स्ट्रेस देते हुए कहा. "और तुम साबित क्या करना चाहती हो?? तुम अब फ्यूचर देख सकती हो?? सिर्फ़ शराब के नशे में तुमने एक आदमी का एक्सीडेंट होते देख लिया और उस हालत में सोच लिया कि तुमने यह हादसा होते हुए सपने में पहले भी देखा है, तो यह शराब का असर है - किसी पॉवर का नही" आपा खोते हुए प्रतिक पूजा पर बरस पड़ा. उसका सच में पूजा की इन बातों से बहुत दिमाग़ खराब हो रहा था.

"प्रतिक एक बार सोच के देखो.. क्या जाएगा हमारा अगर एक बार चेक कर लिया हम ने तो.. कोई नुकसान तो नही होगा ना. मुझे यकीन है कि हम एक अनहोनी को टाल सकते हैं.. तुम्हारे पर्स्पेक्टिव से भी सोचा जाए तो अगर १% भी चान्स है किसी को बचाने का तो क्यूँ ना लिया जाए वो?" पूजा ने ऐसा कहा तो प्रतिक सोच में पड़ गया. सच में नुकसान तो नही था कोई चेक करने में. "वैसे भी मैने २ टिकेट बुक कर लिए हैं. ४ घंटे बाद की फ्लाइट है. जल्दी से थोड़ी पॅकिंग कर लो. थोड़ी देर में हमे निकलना है"

"ठीक है पूजा. चलते है हम. पर यह आख़िरी बार होगा जब तुम्हारे किसी सपने की वजह से मैं अपनी ज़िंदगी में खलल डाल रहा हूँ. ध्यान रखना इस बात का"

"ओह्ह थँक यू प्रतिक" कहते हुए पूजा उससे लिपट गयी " आइ प्रॉमिस आज के बाद कभी ऐसी किसी बात के लिए तंग नही करूँगी"

थोड़े समय बाद दोनो तैयार थे. उनके हाथ में एक एक ओवरनाइट बॅग था. उनका प्लान वहाँ ज़्यादा दिन रुकने का नही था. प्लान बस इतना था कि एक बार विवेक के घर जाएँगे.

वहाँ उसके पेरेंट्स से थोड़ा टाइम बात करेंगे और वापस निकल लेंगे. अगर रात ज़्यादा हो गयी होगी तो वहीं किसी होटेल में रुक के, नेक्स्ट डे की फ्लाइट पक्कड़ लेंगे.

"आइ रियली कँट बिलीव आइ म डूयिंग दिस पूजा"

"अब रोना बंद करो प्रतिक. दो दिन काम पे नही जाओगे तो कोई पहाड़ नही टूट पड़ेगा" टॅक्सी में बैठ ते हुए पूजा ने प्रतिक से कहा.

"बात काम की नही है पूजा. बात है पागलपन की. बिना किसी कारण के हमे ऐसे ही इतने पैसे बर्बाद कर के एक अंजान जगह पर जाना पड़ रहा है"

"तुम्हें पैसों की क्यूँ चिंता है प्रतिक.. टिकेट्स तो मैने अपने पैसों से लिए हैं... पैसों की चिंता मुझे करने दो"

"हां हां.. तुम ही करो पैसों की चिंता. ख़तम हो गये तो एक और डाका डाल लेना. मुझे क्या पड़ी है" प्रतिक ने दूसरी तरफ मूह घुमा कर कहा

"प्रतिक प्लीज़ डोंट स्टार्ट अगेन. इस टॉपिक को यहीं छोड़ दो" अभी पूजा के मूह से यह शब्द निकले ही थे कि एक ट्रक आ कर टॅक्सी से भिड़ गया.

एक्सीडेंट ज़ोर का था और टॅक्सी कलाबाज़ियाँ खाते हुए दूर जा गिरी और उल्टी हो गयी. थोड़ी देर बाद पूजा को होश आया तो उसने अपने आप को बंद टॅक्सी में पाया. प्रतिक भी उसके पास ही था पर बेहोश था. उसके शरीर से काफ़ी खून बह रहा था. पूजा ने अपनी साइड वाले दरवाज़े को अपनी पॉवर से उखाड़ लिया और रेंग कर बाहर हो गयी. उसने अपने हाथ पैर चेक किए तो कहीं कोई भी हड्डी टूटी हुई नही लगी उसको. उसने प्रतिक को भी खीच के बाहर निकाला. प्रतिक को बाहर निकालते ही उसकी मौत हो गयी.वो एक अजीब सी दुविधा में पड़ गयी. उसको अपने सामने २ ऑप्शन्स दिख रहे थे. अगर वो यहाँ रुकती है और प्रतिक के साथ रहती है, तो पक्का उसकी फ्लाइट मिस हो जाएगी. दूसरी ओर अगर वो अभी यहाँ से निकल कर एयरपोर्ट चली जाती है, तो शायद विवेक और उसके खानदान को बचा पाए. वो यह सोच ही रही थी कि उसको एक गाड़ी आने की आवाज़ सुनाई दी. उसने लिफ्ट माँगने के लिए अपना हाथ आगे किया लेकिन गाड़ी नही

रुकी. लेकिन पूजा ने अपना मन बना लिया था के वो सीधा एयरपोर्ट ही जाएगी. वो अपनी पॉवर से गाड़ी को उठा कर वापिस पीछे लाई और उसमें बैठे आदमी को निकाल के बाहर किया. वो हैरत से पूजा की तरफ देख रहा था क्यूंकी उसको यकीन नही हो रहा था कि किसी के पास इतनी पॉवर हो सकती हैं. पूजा ने अपना बॅग उठाया और उसकी गाड़ी में बैठ गयी, उससे सॉरी बोला और धम्म से गाड़ी उसके उपर चढ़ा दी. हमेशा की तरह, आज भी पूजा का पीछे किसी को ज़िंदा छोड़ने का मूड नही था. फिर उसने गाड़ी उसने एयरपोर्ट की तरफ भगा दी.

# २७

"तुमने आज से पहले कभी ट्रेन में सफ़र किया था दिया?" ट्रेन में बैठे विवेक ने दिया से पूछा

"ओफ़फकौर्स किया है.. मैं किसी दूसरे प्लॅनेट से थोड़ा आई हूँ.."

"कभी इंडियन ट्रेन में सफ़र किया है?"

"ना.. पहली बार है.."

"इसलिए मैने एसी का टिकेट नही लिया था. एसी में वो मज़ा कहाँ जो खुली खिड़की के कॉमपार्टमेंट में है. देखो देश की मिट्टी की कितनी अच्छी सुगंध आ रही है. कितना सुंदर नज़ारा दिख रहा है"

"खाख अच्छी सुगंध आ रही है. मुझे तो बहुत बदबू आ रही है. उपर से एंजिन के इतनी पास की बुगी मिली है कि उसका धुआँ भी सीधा अंदर जा रहा है शरीर के" चिड़ते हुए दिया बोली

"यही होता है मेडम महलों में रहने का नतीजा. तुम लोग छोटी छोटी खुशियों से महरूम रह जाते हो. अपने देश और अपनी मिट्टी की खुशबू क्या होती मुझसे पूछो. एक साल ही यहाँ से दूर रहा हूँ लेकिन फिर भी ऐसा लगता है जैसे पता नही कब से यहाँ के लिए तरस रहा हूँ" अब देश और मिट्टी की बात सुनकर बगल की सीट पर बैठे २ फ़ौजी भाइयों को भी थोड़ा जोश चढ़ा. वो भी कॉन्वर्सेशन के बीच में कूद पड़े और इधर उधर की बातें करने लगे. इसी टाइम पास में वक्त कैसे बीत गया, किसी को अंदाज़ा ही नही हुआ, और उनका वाला स्टेशन आ गया.

"तो दिया.. यह है मेरा शहर. तुम्हारे शहर के सामने बहुत ही छोटा है... पर यहाँ पे लोगों के दिल बहुत बड़े हैं... सभी देखना कैसे तुम्हें अपना बना के रखेंगे." ट्रेन से समान प्लॅटफॉर्म पर रख कर विवेक ने दिया से कहा.

"वो तो ठीक है पर एक कूली कर लें... इतना सामान उठा कर बाहर जाना है क्या"

"हां कर लेते हैं" विवेक का इतना बोलना ही था कि उसकी कनपटी पर एक थप्पड़ पड़ा. वो भोचक्का हो कर पीछे घूमा तो कोई उसको ज़ोर से अपने गले से लगा लिया

"साले इतने टाइम बाद आया है और बताया भी नहीं. आदमी है कि कुत्ता. ना कोई खबर, ना कुछ.. आंटी से पता चला कि तू आज आ रहा है तो मैने कहा तुझे स्टेशन से ही उड़ा ले चलूं.. साले सच बता.. एक भी बार याद नही आई मेरी"

# २८

"क्या कर रहे हो चंद्रशेखर" चंद्रशेखर के गले में बाहे डालते हुए अरुणा ने पूछा

"अपनी तबाह हुई लॅब्रेटरी के लॉग्स लगभग ठीक कर ही लिए हैं मैने. बस थोड़ी सी मेहनत और करूँगा तो पता चल जाएगा कि उस केज का दरवाज़ा किस ने खोला था." चंद्रशेखर ने आन्सर दिया

" क्या तुम अभी तक उसी बात पे अटके हुए हो चंद्रशेखर... गेट ओवर इट"

"इतना आसान नही है अरुणा. मुझे पता करना है कि वो जीव को किसने प्रोग्राम किया था और किसने उसकी केज खोली थी. इतने सालों से मैं उसपे काम कर रहा था. कभी भी उसने ऐसी कोई हरकत नही करी थी. और कैसे ही मैने उसमें वो चिप फिट किया, ताकि उसको कंट्रोल कर सकूँ, कुछ ही दिनों में यह हादसा हो गया. मुझे यह नॅचुरल नही लगता"

"ग्रो अप चंद्रशेखर. तुम्हारी एक ज़िद के पीछे कितनी कठिनाइयाँ उठानी पड़ी है हम को तुम्हें पता है ना. एक तो तुमने पहले सबके मना करने के बावजूद एक एक्सट्रा जीव बनाया. उपर से उसको नॉर्मल आदमियों की तरह रखने की बजाए तुम उस पर तरह तरह के एक्सपेरिमेंट करते रहे. पता नही क्या क्या इंजेक्ट करते रहे उसके अंदर. जब वो निकल के किसी तरह से भाग गया, तो तुम्हें यह भी गवारा नही हुआ. अब जब तुम्हें उसे नष्ट करे हुए एक साल से उपर हो चुका है, तब भी तुम उस की ही याद में डूबे हुए हो."

"तुम नही समझोगी अरुणा. मेरे बरसों की मेहनत को जब मैने अपने हाथों से नष्ट किया तो कितना दुख हुआ, यह मैं ही जानता हूँ. कितने अरमान मैने पाले थे कि इस दुनिया में किसी को बीमारी नही हो, ऐसा कोई क्यूर बनाऊंगा. मैने लगभग एक पर्फेक्ट सँपल तैयार कर ही लिया था. उसके उपर थोड़े से एक्सपेरिमेंट हम और करते तो मुझे यकीन है कि हम बहुत सारी बीमारियों का इलाज ढूँढ सकते थे. यह दुनिया और अच्छी जगह हो सकती थी रहने के लिए. मुझे पूरा यकीन है कि वो जीव अपने आप वहाँ से नही निकला, उसे किसी ने वहाँ से भगाया था"

"जो हुआ वो हुआ चंद्रशेखर. तुम यह मत सोचो कि तुमने क्या खोया है. यह देखो कि तुमने क्या पाया है. उस ज़िंदगी से तुम्हें छुटकारा मिल गया. देखो कितनी खुशी से हम यहाँ रह

रहे हैं. पर तुम हो कि अभी भी उन चार लोगों पर निगरानी रखे हुए हो अपने ट्रॅकर्स के ज़रिए. उन्हे सच क्यूँ नही बता देते.. क्यूँ उनकी ज़िंदगी भी तुमने खराब करी हुई है... क्यूँ उनको भी किसी के प्यार से वंचित किया हुआ है"

"क्यूंकी मुझे लगता है कि उनकी पॉवर पूरी तरह से डेवेलप नही हुई हैं. मैं देखना चाहता हूँ कि वो क्या क्या कर सकते हैं और उनकी पॉवर इवॉल्व होती हैं कि नहीं"

"चंद्रशेखर कभी तो हमारे बारे में भी सोचा करो. क्यूँ अपनी ज़िंदगी पर ठोकर मार रहे हो. क्या तुम्हें आराम से जीने का कोई हक नही है??" बोलते बोलते अरुणा ने नोट किया कि चंद्रशेखर बहुत ही हैरानी से स्क्रीन की तरफ देख रहा है.

"यह.. यह... यह नही हो सकता...." गुस्से में उसने अरुणा की तरफ घूरते हुए कहा "अरुणा.. उस जीव को तुमने आज़ाद किया था ?"

"तुम पागल हो गये हो क्या चंद्रशेखर.. ऐसा क्यूँ बोल रहे हो तुम" थोड़ा हिचकिचाते हुए अरुणा ने बोला.

"ऐसा बोल रहा हूँ क्यूंकी ऐसा लोग्स में दिख रहा है. सॉफ पता चल रहा है कि केज को खोलने के लिए तुमने अपने फोन से कमँड दिया था"

"ऐसा कुछ नही हुआ था चंद्रशेखर"

".. यहाँ यह भी दिखाया जा रहा है कि आर१००६८५ का लास्ट आक्सेस भी तुमने किया था...... यह कैसे हुआ अरुणा.... मैने तो आने से पहले पासवर्ड चेंज किया था और तुम्हें नया पासवर्ड नही बताया था"

"ग़लत बता रहे हैं लोग्स तुम्हारे चंद्रशेखर" अरुणा चीखते हुए बोली. "क्या तुम सोच सकते हो कि मैं कुछ ऐसा करूँगी जिससे हमारे रिश्ते में कोई दरार पड़े..."

"तुमने कई बार आर१००६८५ को आक्सेस किया है कुछ ना कुछ करने के लिए.. तुमने कभी मुझे बताया क्यूँ नही यह सब... लगता है मुझे और गंभीरता से इसकी छानबीन करनी

पड़ेगी" चंद्रशेखर ने अरुणा की बातों को बिल्कुल अनसुना करते हुए बोला. "पर तुम ऐसा कैसे कर सकती हो... तुम मुझसे प्यार करती हो... तुम मेरा बुरा कैसे सोच सकती हो..." चंद्रशेखर बड़बड़ाने लगा. यह इन्फर्मेशन उसके लिए सच में बहुत ही अनैपेक्टेड थी और उसका दिमाग़ काम करना बिल्कुल बंद कर चुका था.

"मैने ऐसा कुछ नही किया चंद्रशेखर. तुम मेरी बात मानते क्यूँ नही..." अरुणा गिडगिडाते हुए बोली

"हर बार का आक्सेस तुम्हारे फोन से हुआ है... वाय्स पासवर्ड दिया है तुमने ऑतेनटिकेशन के लिए... मतलब कोई और नही हो सकता... तुमने ऐसा क्यूँ किया अरुणा... क्या बिगाड़ा था मैने तुम्हारा..." अरुणा की एक ना सुनते हुए चंद्रशेखर ने यह सवाल अरुणा से पूछा. उसको कितना दर्द हो रहा था इसका अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता था कि उसकी आँखें नम थी. जिन आँखों ने अपना सपना टूट-ते हुए देखा था, अपनी सारी मेहनत को नाश होते हुए देखा था और फिर भी एक बूँद नही बहाई थी, आज वो इस विश्वासघात से नम हो गयी थी. आज चंद्रशेखर को सच में एहसास हो रहा था कि उसका सपना चूर हुआ है और लग रहा था जैसे उस चूर हुए सपने का हर एक ज़र्रा काँटे की तरह उसके दिल में घुस रहा है - धीरे धीरे, दर्द देते हुए. इतना ठगा चंद्रशेखर ने कभी अपने आप को महसूस नही किया था. "क्यूँ अरुणा क्यूँ.... क्यूँ किया तुमने ऐसा..."

अरुणा को पता चल चुका था कि अब बहाना बनाने से कुछ नही होगा. उस ने सच बोलने में ही ख़ैरियत समझी. चंद्रशेखर के पास बैठ कर और उसके हाथों को अपने हाथों में पकड़ कर वो उसे सारी बातें बताना शुरू कर दी, "चंद्रशेखर मेरी माँ मुझे जनम देते वक़्त चल बसी थी. मेरे बाप ने मुझे इसका ज़िम्मेदार माना और मुझे कभी उतना प्यार नही दिया जितना मैं चाहती थी. उसको हमेशा अपनी बीवी से एक बेटे की चाहत थी. अगर मैं लड़का होती तो भी शायद कुछ हो सकता था लेकिन अफ़सोस..." अरुणा की आवाज़ थोड़ी भारी हो रही थी. "खैर... जिस उमर में बच्चों को माँ-बाप के प्यार की ज़रूरत होती है, उस उमर में मैं बोरडिंग स्कूल में थी. मेरे हिस्से का प्यार मेरे बाप की दूसरी दुल्हन और उनके नये बेटे को मिल रहा था. मैं चाहे जो कुछ भी कर लूँ, अपने माँ-बाप की नज़रों में नही आ पाती थी. ९०% मार्क्स, स्टेट रंक १ - यह सब तो जैसे सिर्फ़ ट्रोफीस थे जो मेरे रूम में थे. इनको प्राप्त करने की खुशी कभी मुझे नही मिली. बाद में मुझे पता चला कि मेरे पापा अपने बेटे को साइंटिस्ट बनाना चाहते हैं, तो उनका प्यार पाने के लिए मैने भी साइंटिस्ट बन-ने की सोची. वो पहली बार था जब मैने अपने पापा की आँखों में अपने वजह से आई खुशी देखी थी. मुझे पता नही था कि वो ही आखरी बार भी होगी.

पढ़ाई के दौरान मुझे खबर मिली कि पापा का देहांत हो गया है और माँ ने मुझे बताना भी उचित नही समझा. जिस प्यार को पाने की उम्मीद मुझे उमर भर थी, आज वो उम्मीद भी टूट गयी थी. अपने सारे गुस्से को अपने अंदर दबा कर मैने अपनी पूरी कोशिश पढ़ाई में लगा दी. जब बहुत मेहनत के बाद मुझे तुम्हारे साथ काम करने का मौका मिला तो मुझे लगा जैसे मेरा जीवन सफल हो गया हो. मुझे पूरा यकीन था कि पापा उपर से जब मेरी तरफ देखते होंगे, तो ज़रूर एक खुशी का अनुभव करते होंगे और सबको कहते होंगे कि यह है मेरी बेटी जिसने सिर्फ़ अपने बाप को खुश करने की ठानी थी और आज कर दिखाया. धीरे धीरे हम दोनो में बोल चाल शुरू हो गयी और मैं मन ही मन तुम्हें चाहने लगी. वो दिल जो तब तक सिर्फ़ मेहनत करने के लिए धड़का था, उसकी धड़कनों में से सिर्फ़ तुम्हारी ही आवाज़ आने लग गयी.

समय के साथ मुझे पता चला कि तुम्हारे दिल में भी मेरे लिए वोही प्यार है. तुम्हारे मूह से यह बात सुनकर मेरी खुशी का कोई ठिकाना नही रहा. तुम्हारे साथ मुझे जीवन की वो सब खुशियाँ मिलने लगी जो मैने कभी चाही थी. लेकिन यह डर हमेशा दिल में रहता था कि कहीं मैं तुम्हें भी खो ना दूं. अपने काम के प्रति तुम्हारे अंदर भी वोही जुनून था जो कभी मुझमें हुआ करता था. इस बात से मैं तुम्हारे और करीब आ गयी और तुम्हें और अच्छी तरह से समझने लगी. लेकिन यही कारण था कि मेरा डर और भी बढ़ता जा रहा था. जहाँ मेरी मेहनत किसी और के लिए थी, तुम्हारी मेहनत सिर्फ़ अपने लिए थी.

मुझे यकीन था के अपने एक्सपेरिमेंट्स के आगे तुम और किसी के बारे में नहीं सोचोगे. तुम्हारे इतने करीब आ कर और तुम्हें खो जाने का डर ही था जिसने मेरे दिमाग़ ने इस प्लान को एक्सेक्यूट करने की ताक़त दी. मैने ही उस जीव को अच्छी तरह से प्रोग्राम किया था. मैं चाहती थी कि ऐसा लगे कि वो जीव बेकाबू हो गया और उसने अपने जैसे चारों लोगों को मार दिया. जब केविन से यह बात पता चली कि स्पेसशिप पे भेजे गये सिग्नल्स रेडीरेक्ट हो रहे हैं, तब मैने अपने प्लान को अंजाम देने की ठान ली थी. मुझे लगा कि सारा ब्लेम मैं एलीयेन्स पे डाल दूँगी और हम अपनी ज़िंदगी आराम से बिताएँगे. अपने दिल पे हाथ रख कर कसम खाओ चंद्रशेखर और मुझे बताओ कि तुम अपनी पिछले १ साल की ज़िंदगी से खुश नही हो..."

चंद्रशेखर जो इतनी देर से चुप चाप अरुणा की बात सुन रहा था, अब बोला "अरुणा यहाँ बात मेरी खुशी की नही है.. बात यह है कि तुम अपने स्वार्थ में इतनी अंधी हो गयी थी कि तुमने मेरी या उन ४ मासूमों की ज़िंदगी के बारे में कुछ नही सोचा. एक निर्दयी प्राणी बन

कर तुमने उन चारों को धरती से मिटाने का फ़ैसला कर लिया... क्यूँ ? सिर्फ़ अपनी खुशी के लिए ना..."

"हां चंद्रशेखर.. मैं स्वार्थी हो गयी थी. प्यार में अक्सर आदमी अँधा हो जाता है. और उन चारों की ज़िंदगी हमारी ही मेहनत का फल है. अगर हम नही होते, तो वो चारों भी नही होते. जो ज़िंदगी हम ने दी, हमे उसे लेने का भी पूरा हक़ होना चाहिए..."

"क्या तुम वोही अरुणा हो.. जिसे मैने प्यार किया?? मुझे ऐसा नही लगता... मुझे लगता है जिससे मैं प्यार करता था वो सिर्फ़ एक छलावा था और यही तुम्हारा असली रूप है. तुम मुझसे एक बार कह कर तो देखती अरुणा...."

"कितनी बार चंद्रशेखर.. कितनी बार मैने तुम्हें एहसास दिलाने की कोशिश करी, पर तुमने मेरी एक ना सुनी. जुनून बन कर वो चारों तुम्हारे उपर हावी थे. और जिस अरुणा को तुम छलावा कह रहे हो, वोही है वो जिसने तुम्हारे प्यार में दुनिया के एक कोने में ज़िंदगी बिताने की सोची. वोही है जिसने तुम्हारे प्यार के कारण एक बार भी ना सोचा कि वो एक खूनी बनने जा रही है चंद्रशेखर... प्लीज प्लीज प्लीज मुझसे अब मूह ना फेरो चंद्रशेखर... मैने ज़िंदगी में बहुत कुछ खोया है... अब जो चीज़ मुझे मिल गयी है, वो मेरे से दूर मत करो चंद्रशेखर" अरुणा की आँखों से आँसू झरने की तरह बह रहे थे.

"मुझे कुछ समझ नही आ रहा अरुणा कि मैं क्या करूँ... किस पर भरोसा करूँ मैं अब.." चंद्रशेखर ने अपना सर पकड़ लिया जो इतनी ज़्यादा इन्फर्मेशन पाने के बाद दुखने लगा था.

"उन चारों को अपने हाल पर छोड़ दो चंद्रशेखर. हम अभी खुश हैं और खुश ही रहेंगे. मेरे पास अभी वो दवाई पड़ी है तो हम आर१००६८५ पर यूज़ करते थे उसकी पॉवर सप्रेस करने को. हम अभी भी उनको वो दवाई दे कर उनको एक नॉर्मल इंसान बना सकते हैं. मेरी बात मान लो चंद्रशेखर"

"ऐसा कुछ नही होगा अरुणा. वो लोग जैसे हैं, वैसे ही रहेंगे... रही हमारे बीच की बात तो उसका फ़ैसला भी मैं चन्द दिनों में कर लूँगा" अभी चंद्रशेखर बोल ही रहा था कि उसके पास दिया का ईमेल आ गया कि वो लोग विवेक के घर जा रहे हैं. पूजा का भी वहाँ जाने

की इच्छा रखना उस पर पहले ही ज़ाहिर हो गया था. "लगता है वो चारों विवेक के घर की तरफ जा रहे हैं अरुणा.. मैं भी उनसे मिलकर ही अपना फ़ैसला करूँगा. मैं भी इंडिया जा रहा हूँ."

"मुझे भी साथ ले चलो चंद्रशेखर" अरुणा ने बोला

"नहीं अरुणा. कुछ समय मुझे अकेले में चाहिए इस बात पे गौर करने को. प्लीज़ मुझे अकेला जाने दो"

"ठीक है चंद्रशेखर. पर वादा करो कि तुम वापस ज़रूर आओगे. जो भी तुम्हारा फ़ैसला होगा वो तुम मुझे यहाँ आ कर बताओगे"

"ज़रूर अरुणा. मैं वापस ज़रूर आऊंगा."

"मैं तुम्हारा समान पॅक कर देती हूँ. मैं वो दवाई भी रख रही हूँ जिससे उन सब की पॉवर दब जाएँगी. अगर तुम्हें उचित लगे तो उसका इस्तेमाल करना, नहीं तो रहने देना" चंद्रशेखर में अब अरुणा के व्यू अपोज़ करने की हिम्मत नही बची थी. हां में सर हिलाते हुए वो इंडिया जाने का प्लान बनाने लगा.

# २९

"जी विवेक यहीं रहता है.."

"बिल्कुल जी, यह विवेक का ही घर है.. आप कौन..."

"मैं पूजा हूँ.. विवेक की दोस्त... "

"अर्रे वाह.. अंदर आइए... अपना ही घर समझिए..." उसने पूजा और प्रतिक को अंदर किया और फिर बोला "देखो आंटी विवेक की दोस्त भी आये है...लगता है मेरे सिवा उसने सब को खबर कर दी थी कि वो आज यहाँ आ रहा है... और फिर मुझे अपना दोस्त कहता है" थोड़ी नाराज़गी के साथ वो बोला

"अर्रे दिलजीत बेटा क्यूँ अपना दिल छोटा करता है.. मुझे पूरा यकीन है कि विवेक ने तुझे इसलिए नही बताया ताकि वो यहाँ आ कर तुझे सर्प्राइज़ दे..." विवेक की मम्मी की किचन में से आवाज़ आई..

"खाख सर्प्राइज़... साले को स्टेशन पे ही पकड़ के रगड़ दूँगा देखना आप.. अच्छा वैसे गाड़ी का समय हो गया है.. मैं उसको ले कर आता हूँ.." फिर पूजा की तरफ मूड कर बोला.. "आप चलेंगी उसको लेने ?"

"न..न... नहीं... आप जाओ.. मैं यहीं उसका इंतेज़ार करती हूँ. " पूजा बोली. वो इंशुअर करना चाहती थी कि पीछे से घर में कोई अनहोनी ना हो...

"जैसी आप की मर्ज़ी" दिलजीत बोला और गाड़ी की चाबी उठा कर चलता बना

"अर्रे दिलजीत बेटा यह सिलिंडर ख़तम हो गया है.. इसको चेंज तो कर दे.... " आंटी ने किचन से बाहर आ कर बोला "अर्रे.. चला गया... यह भी पूरा वक़्त हवा पे सवार ही रहता है.. लगता है मुझे ही करना पड़ेगा..."

"अर्रे आंटी हम करवा देते है. आप अकेले क्यूँ करती हैं" कहते हुए पूजा  उनके साथ हो लीई.

“यार दिलजीत. मुझे पता है कि तेरे मन में बहुत अरमान होंगे अपनी भाभी को यह शहर दिखाने के.. पर प्लीज पहले घर चलते हैं और फिर घरवालों से मिल कर सीधा घूमने चलेंगे. प्लीज़ इस बात को मत काटना. आज इतने साल बाद तेरा दोस्त तुझसे कुछ गुज़ारिश कर रहा है. इस बात का मान रखना” जीप में चढ़ने से पहले विवेक ने दिलजीत से बोला

“अबे तू तो बहुत सेनटी हो रहा है यार. ठीक है ठीक है.. सीधा तेरे घर ही चलते हैं, आराम से यह बात कह देता, इतना सेनटी होने की क्या ज़रूरत थी... तू तो सच में बिल्कुल बदल गया है रे.. चलो जी सब लदो जीप में, चलते हैं सीधा आपके ससुराल” दिलजीत का मूड अपने यार को इतना बदला देख थोड़ा ऑफ हो गया था. पूरे रास्ते उस ने कोई बात नही करी और १५ मिनट में ही उनको घर पे ले आया. “तुम लोग चलो. मैं समान ले कर आता हूँ”

“अकेले कैसे उठाएँगे आप.. हम तीनो को स्टेशन पे उठाने में इतनी मेहनत लगी थी. सब थोड़ा थोड़ा ले जाते हैं. आराम से हो जाएगा.” दिया बोली

“अर्रे दिया जी. फॉरमॅलिटी मत ना करो. यह विवेक कम है फॉरमॅलिटी के लिए जो आप भी शुरू हो गयी.. आप चलो मैं लाता हूँ”

“अबे बंद कर यह नाटक. दिया तुम यह उठाओ. मैं वो उठाता हूँ और दिलजीत तू वो उठा... साले एक झापड़ मारूँगा अब मूड खराब रखा तो. अब घर आ गये हैं. खुश हो जा” विवेक ने बोला. वो घर को देख कर बहुत ही खुश था. जो अनहोनी होने का डर उसे सता रहा था, उसका कोई नाम ओ निशान ना था. सब ने सारा समान उठाया और भाग के अंदर हो लिए. वो देख ना पाए कि एक और टॅक्सी वहाँ आ कर रुकी है जिसमें चंद्रशेखर बैठा था.

अंदर पूजा अपनी पॉवर से सिलिंडर को उठा कर उसकी जगह पहुँचा रही थी.प्रतिक भी साथ ही था. आंटी से बातचीत के दौरान उसको पता चल गया था कि चंद्रशेखर ने उनके बारे में सब कुछ बता दिया है. अब फालतू में सिलिंडर उठा के वो अपनी शक्ति खर्च करना नही चाहती थी. जब दिलजीत, दिया और विवेक घर में घुसे तो सिलिंडर हवा में था और किचिन की तरफ जा रहा था. “पेन्चो यह क्या हो रहा है” दिलजीत ज़ोर से चीखा. पूजा की कॉन्सेंट्रेशन थोड़ी सी टूटी जिसके कारण सिलिंडर धडाम से नीचे गिरा. इससे पहले कि वो ज़मीन पर लगता, दिया ने अपनी पॉवर से उसे रोकना चाहा पर बिजली के झटके से

# INDIAN BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL

(*Click Here To Join*)

## साहित्य उपन्यास संग्रह

*Click Here*

## Indian Study Material

*Click Here*

## Audio Books Museum

*Click Here*

## Indian Comics Museum

*Click Here*

## Global Comics Museum

*Click Here*

## Global E-Books Magazines

*Click Here*

सिलिंडर रुकने की बजाए एक बहुत ही ज़ोर का धमाका हुआ. धमाका इतनी ज़ोर का था कि घर के सारे शीशे टूट गये और सब लोग इधर उधर जा कर लगे. घर पूरा जलने लगा. विवेक इंपॅक्ट के कारण और दरवाज़े के सबसे पास होने के कारण, सीधा बाहर जा कर गिरा.

चंद्रशेखर घर की ओर बढ़ ही रहा था जब धमाका हुआ और अगले ही पल उसने विवेक को उड़ते हुए बाहर आ कर देखा. उसने फटाफट से अपने फोन से फाइयर ब्रिगेड को बुलाया और दौड़ के विवेक के पास हो गया. उसकी एक नज़र घर की तरफ गयी जो बुरी तरह से जल रहा था. अंदर किसी के भी बचने का कोई आसार नज़र नही आ रहा था. विवेक का चेहरा भी पहचान-ने लायक नही था. बहुत ही धीरे धीरे विवेक की बॉडी रिस्टोर हो रही थी. उसका सर अपनी गोद में रखकर चंद्रशेखर के ज़हन में सिर्फ़ फ्यूचर का ख़याल आ रहा था. अब यह बात पूरी सॉफ हो गयी थी कि उसके बनाए २ अजूबे घर के अंदर ही मर गये थे. विवेक बच सकता था. लेकिन चंद्रशेखर का एक्सपेरिमेंट पूरी तरह से बंद हो ही चुका था. आज अगर विवेक जी भी जाता तो शायद वो इस हादसे को अपने ज़हेन से कभी ना निकाल पाता.

उसका सारा परिवार आज ख़तम हो चुका था. ऐसे में जब उसको सच पता चलेगा कि यह सब अरुणा के कारण हुआ है, तो क्या वो कभी चंद्रशेखर और अरुणा को माफ़ कर पाएगा? चंद्रशेखर अरुणा से पागलों की हद तक प्यार करता था. वो जानता था कि वो अरुणा के बिना नही रह सकता. और जब तक विवेक ज़िंदा था, चंद्रशेखर पूरी तरह से कभी अरुणा का नही हो सकता था. सच कह रही थी वो.. यह चारों एक जुनून की तरह सवार थे चंद्रशेखर के उपर और यह जुनून ख़तम करने का एकलौता मौका अब चंद्रशेखर के हाथ में आ गया था. अपनी पूरी ज़िंदगी की मेहनत पीछे छोड़ कर आज वो एक नयी ज़िंदगी शुरू करने जा रहा था. उसने अपने बॅग से निकाल कर वो दवाई विवेक में इंजेक्ट कर दी जिससे विवेक का ठीक होना बंद हो गया. उस की हालत इतनी खराब थी कि कुछ ही पलों में उसने भी दम तोड़ दिया. उसकी साँसों के रुकने के साथ ही चंद्रशेखर की आँखों से भी आँसू टपक पड़े. यह आँसू अपनी पुरानी ज़िंदगी भुला कर नयी ज़िंदगी शुरू कर रहे चंद्रशेखर की कोशिश की निशानी थी. थोड़ी ही देर में फाइयर ब्रिगेड वाले आ गये. जैसा कि चंद्रशेखर को पता था, घर में से विवेक के 'तीन दोस्तों' और माँ-बाप की बॉडी निकाली गयी. किसी का चेहरा पहचान में नही आ रहा था. लेकिन चंद्रशेखर को पूरा यकीन था कि वो इन सब को पहचान गया है. थोड़ी सी एंक्वाइरी निपटाने के बाद, चंद्रशेखर वापस अरुणा के पास जाने के लिए प्लेन की टिकेट बुक करने के लिए चला गया. एक नयी जिंदगी की शुरुआत की तरफ.चंद्रशेखर के लिए अरुणा ने अपने करियर की कुर्बानी दी थी और इंसानियत के लिए चंद्रशेखर ने अपने सपनो की कुर्बानी दे दी .....

**●◆■★ समाप्त ★■◆●**